तारा

[१९४७ का स्तालिन पुरस्कार विजेता रूसी उपन्यास]

लेखक

इ. कज़ाकेविच

अनुवादक

रनवीर सक्सेना

इन्दौर

जन साहित्य सदन

[illegible]
बद्रीलाल मात्
जन साहित्य सदन
[illegible]
लश्कर

कवर डिजाइन
विष्णु चित्रकार

प्रथम संस्करण
प्रथम १९५८

मूल्य दो रुपया

मुद्रक
मॉडर्न प्रिंटिंग प्रेस, लश्कर

अध्याय एक

आगे बढता डिवीजन असीम जगलो मे कूद पडा और जगलो ने उसे निगल लिया ।

जहाँ जर्मन टक, जर्मन हवाई जहाज और जिले मे फैले हुए लुटेरो की टुकडियाँ असफल हो गई थी, वहाँ सफलता मिली इस विस्तृत जगल को-जिसकी सडके युद्ध से नष्ट हो चुकी थी और बर्फ जमने से बन्द हो गई थी । भोजन और गोला-बारूद की ट्रके जगल के सुदूर किनारो मे धंसकर रह गई । एम्बुलेस गाडियाँ जगल के एकाकी गाँवो मे अटक गई । तोपखाने की रेजीमेट का ईंधन चुक गया, और उसकी तोपे अनाम नदियो के किनारे बिखरी पडी थी । उनको पैदल सेना से दूर करनेवाला अन्तर प्रतिक्षण चिन्ताजनक रूप से बढता जा रहा था । फिर भी पैदल सेना राशन मे कटौती करती और एक-एक कारतूस के लिए इन्कार करती हुई अकेले ही आगे बढती गई । आखिर वह भी धीमी पडने लगी । उसकी रफ्तार मे ढील आई, आत्म-विश्वास कम हुआ, और इसका फायदा उठाकर जर्मनों ने अपने बोझ हलके किए और पश्चिम की ओर भाग गए ।

दुश्मन गायब हो गया ।

जब पैदल सेना दुश्मन से झडप नही लेती होती है तब भी अपने अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए अपना काम जारी रखती है । दुश्मन से जीती हुई सीमा की रक्षा करती है । किन्तु दुश्मन के सपर्क से कटे स्काउटो* के चेहरो से अधिक हृदय-विदारक कोई दृश्य नही हो सकता । खोयी हुई आत्माओ की तरह वे सडक के किनारे भारी पैरो चलते है, मानो उनका सारा अस्तित्व अर्थ-शून्य हो चुका है ।

* स्काउट का अर्थ है सेना मे काम करने वाले गुप्तचर ।

डिवीजन कमाडर कर्नल सर्बीचेन्को अपनी जीप द्वारा एक ऐसे दल के पास आ पहुँचा । धीरे धीरे वह अपनी जीप से उतरा और अपने कूल्हो पर हाथ रखकर कीचड भरी सडक के बीचोबीच आ खडा हुआ । उसके चेहरे पर एक उपहासात्मक मुस्कान थी ।

डिवीजन कमाडर को देखते ही स्काउट तनकर खड़े हो गए ।

"क्यो ! दुश्मन तुम्हारे हाथ से निकल गए, मेरे बाजो ?" उसने कहा, "दुश्मन कहाँ है और क्या कर रहा है ?"

दल के नेता के रूप मे उसने लेफ्टिनेट त्रेवकिन को पहचाना—कर्नल सर्बीचिन्को अपने सब अफसरों के चेहरो से परिचित था—और धिक्कार की भावना से अपना सिर हिलाया ।

"अच्छा, तुम भी त्रेवकिन ?" उसने कहा और तीखेपन से बोला, "बडी मजेदार चीज है यह लडाई ! है न ? गाँवो मे दूध पीना और औरतो के पीछे भागना । तुम्हारी कृपा से हम लोग इस तरह जर्मनी तक पहुँच जाएँगे और दुश्मन के दर्शन तक नही होगे । कितना अच्छा होगा ?" उसने अप्रत्याशित प्रफुल्लता से पूछा ।

लेफ्टिनेट-कर्नल गालीव, डिवीजन का चीफ ऑफ स्टॉफ कार मे बैठा हुआ थकेपन से मुस्करा रहा था और कर्नल की चित्त-वृत्ति मे अचानक परिवर्त्तन से चकित था । एक क्षण पहले सर्बीचेन्को अँगीठी के पास बैठा हुआ उसे ढीलेपन के लिए फटकार रहा था और वह ध्वस्त नीरवता के साथ चुपचाप सुनता रहा था ।

कर्नल मे यह परिवर्त्तन स्काउटो को देखने से हुआ था । उसने स्वय अपना सैनिक जीवन १९१५ मे पैदल सेना के स्काउट के रूप मे शुरू किया था । स्काउटो मे ही उसे गोलियो का पहला बपतिस्मा मिला था और उसने सेट जॉर्ज क्रास जीता था । स्काउट उसकी कमजोरी थे । और जब वे मौन जगल मे, धरती की सिलवटो मे और गोधूलि की चंचल छाया मे क्षण भर के अन्दर लीन हो जाने को तैयार सडक के किनारे नि.शब्द एक एक की कतार मे आगे बढ़ते

तो उनके हरे छिपावटी कपडे और धूप में तपे चेहरे उसके हृदय को प्रफुल्लित किए बिना न रहते ।

लेकिन डिवीजन कमांडर की झिडकी बहुत गभीर थी । क्योकि स्काउटों के लिए दुश्मन को खो देना, या नियमावली की औपचारिक भाषा मे दुश्मन को अवकाश ग्रहण करन देना, खेदपूर्ण और करीब-करीब अपमानजनक था ।

कर्नल के शब्द अपने डिवीजन के भाग्य के प्रति उसकी चुभती चिन्ता जाहिर करते थे । दुश्मन का मुकाबला होने से वह डरता था क्योकि उसकी सेनाओ की शक्ति कम हो चुकी थी और अंतिम भाग पिछड गया था । किन्तु साथही वह लुप्त हुए दुश्मन तक जा पहुँचना चाहता था, उससे दो-दो हाथ करना चाहता था, जिसमे जान सके कि कैसे लोगो का सामना वह कर रहा है और उनकी क्षमता क्या है । चारो तरफ शान्ति थी और समय आ गया था कि थोड़ी देर के लिए रुका जाय और अपने आदमियो और शस्त्रों को ठीक ठीक किया जाय । निश्चय ही वह अपने मन तक में यह मंजूर नही करेगा कि उसकी यह इच्छा पूरे देश की आगे बढने की तीव्र इच्छा के प्रतिकूल है, फिर भी वह युद्ध मे क्षणिक विश्राम के स्वप्न देख रहा था । इस पेशे के रहस्य ऐसे ही है !

स्काउट शात खडे कभी इस, और कभी उस पैर पर खड़े हो रहे थे । एक बडा दुःखद दृश्य था वह !

"वे रही—तुम्हारी आँखे और कान", डिवीजन कमांडर ने मोटर पर चढते-चढते अपने चीफ ऑफ स्टॉफ से तिरस्कारपूर्वक कहा । उनकी मोटर आगे बढ गई ।

एक मिनट तक स्काउट वैसे ही खडे रहे ; फिर त्रेवकिन आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ा । और लोग भी उसके पीछे बढे ।

हमेशा की तरह हर खड़खडाहट की तरफ अपने कान लगाए त्रेवकिन अपनी टुकडी के बारे मे सोच रहा था । अपने कमांडर की

भांति दुश्मन का मुकाबला होने की उसे इच्छा और आशका दोनों ही थी। इच्छा इसलिए कि वह उसका कर्त्तव्य था, और इसलिए भी कि जबरन लादा हुआ ठलुआपन स्काउटों के लिए विनाशकारक होता है, आलसीपन और असावधानी के खतरनाक जाल में उन्हें जकड लेता है। और आशंका इसलिए कि जिन अट्ठारह आदमियों के साथ उसने लड़ाई शुरू की थी, उनमें से केवल ग्यारह ही अब बाकी बच रहे थे। यह सच है कि इनमे अनीकानोव है, जो डिवीजन भर में प्रसिद्ध है, निडर मर्चेन्को है, दु.साहसी ममोचकिन है, और तपे हुए अनुभवी स्काउट ब्रेजनीकोव और बाएकोव, ऐसे लोग भी शामिल है। बाकी ज्यादातर राइफलबाज है जो युद्ध के दौरान में विभिन्न यूनिटों से आये थे। अभी तक उन्हे अपना स्काउट होना बहुत पसंद था—छोटे-छोटे दलों मे आगे बढते थे और ऐसी आजादी का उपभोग कर रहे थे जिसकी एक मामूली पैदल टुकड़ी मे कल्पना तक नही की जा सकती थी। उनका मान था और उनकी इज्जत की जाती थी। स्वाभाविकत: यह काफी खुश करनेवाला था, और वे तूफानी लगते थे-किन्तु उनकी परख होना अभी बाकी था।

त्रेवकिन अब समझ गया कि इसी ने उसको कदम धीमें करने पर मजबूर किया था। डिवीजन कमांडर की झिडकी उसे डक मार गई थी, खास तौर से इसलिए कि वह स्काउटों के प्रति सर्बीचेन्को के प्रेम से परिचित था। कर्नल की हरी आँखो का वह लोमड़ी-सा भाव पिछले युद्ध के पुराने और अनुभवी स्काउट की याद दिलाता था—उनको पृथक् करनेवाली, समय और काल की खाई के उस पार से कार्पोरल सर्वीचेन्को उसको चुनौती दे रहा था—"नौजवान! देखें, एक पुराने खुर्राट का तुम कितना मुकाबला कर सकते हो।"

इस बीच टुकडी खेतों और बगीचो से घिरे बिखरे घरोंवाल एक पश्चिमी युक्रेनी गाँव में दाखिल हो गई थी। करीब तीन पुरुष आकार के एक विशाल सलीब के ऊपर से सूली चढ़े ईसा नीचे देख

रहे थे । सडके सूनी थी और केवल बाड़ों मे कुत्तो के भौकने की आवाज और खिडकी पर हाथ से बने पर्दे की कठिनता से नजर आने-वाली हरकत यह बतला रही थी कि लुटेरो के दलो से आतंकित निवासी सावधानी से सिपाहियो को अपने गाँव से गुजरते हुए देख रहे है ।

अपने दल को त्रेवकिन एक चढाव पर स्थित एकाकी घर पर ले गया । एक बूढी औरत ने दरवाजा खोला । एक बडे कुत्ते को उसने पीछे ढकेला और लटकती मोटी भूरी भवो के नीचे गहरी जड़ी आँखो से सिपाहियो को देखा ।

"सब कुशल तो हैं", त्रेवकिन ने कहा—"हम लोग एकाध घंटा आराम करने के लिए आए है ।"

स्काउट उसके पीछे-पीछे एक साफ कमरे मे गये जिसका फर्श रंगीन था और जहाँ असंख्य मूर्त्तियाँ थी । यह उन्होने देख ही लिया था कि इस प्रदेश मे प्रचलित मूर्त्तियाँ रूस में प्रचलित मूर्त्तियो से भिन्न है—धातु के उभरे हुए चौखटे यहाँ नही थे और सन्तो के चेहरे शकरीले थे । जहाँ तक खुद बुढ़िया का प्रश्न था, वह कीव अथवा चर्नीगोव के आस-पास की किसी भी युक्रेनी दादी की तरह दिखती थी । हाथ से बुने बहुत से पेटीकोट पहने थी, और उसके हाथ हाडभरे और गाँठदार थे , वह उनसे भिन्न इसी बात मे थी कि उसकी पैनी आँखो मे गैरदोस्ताना चमक भरी थी ।

तथापि, उसके कठोर, करीब-करीब वैरात्मक मौन के बावजूद उसने सैनिको को कुछ ताजी रोटी, बिलकुल मलाई लगने वाला दूध, पेठे का मुरब्बा और एक भगौनाभर आलू दिए । किन्तु उसने यह खाना इतने कठोर और गैरदोस्ताना ढंग से दिया कि वह लोगों के गले मे रुकने लगा ।

एक स्काउट ने बड़बडाते हुए कहा—"यह रही डाकुओ की अम्मा ।"

उसकी बात आधी सच थी। उसका सबसे छोटा बेटा जगल मे डाकुओ से जा मिला था। जहाँ तक उसके बडे बेटे का सवाल था, वह पार्टीजन* मे शामिल हो गया था। और जब डाकू की माँ वैरभरा मौन धारण किये थी, पार्टीजन की माँ ने मेहमानदराजी के साथ अपना दरवाजा सैनिको के लिए खोल दिया था। उन्हे कुछ तला हुआ सुअर का माँस और एक कटल भर क्वास परसने के बाद पार्टीजन-माँ की जगह डाकू-माँ ने ले ली। वह मनहूस मौन के साथ उस कर्घे के पास जा बैठी, जो आधे कमरे को भरे हुए था।

सार्जेंट अनीकानोव ने, जो चौड़े मुह का, छोटी, चतुर, पैनी आँखोवाला, धीरजवान व्यक्ति था, उससे पूछा '—

"इतनी चुप क्यो हो दादी ? तुम्हारी जबान तो नही खो गई है ? इधर आकर बैठो और बात करो।"

झुके हुए, दुबले और मजबूत सार्जेंट ममोचकिन ने मजाक में कहा—

"कितना नारी-सत्संगी पुरुष है ! बूढी औरत तक से गप लडाने को तैयार.. .... !"

अपने विचारों मे डूबा हुआ त्रेवकिन बाहर चला गया और बरसाती के पास खडा हो गया। गाँव औंघा रहा था। टाग बँधे घोड़े एक ढाल पर चर रहे थे। गहरी निस्तब्धता छाई हुई थी— ऐसे गाँव की निस्तब्धता, जो दो लड़ती हुई सेनाओं के द्रुत आवागमन से परिचित हो।

त्रेवकिन के बाहर चले जानेपर अनीकानोव ने कहा—"हमारा लेफ्टिनेंट चिंतित है। कर्नल ने क्या कहा था ? बडी मजेदार चीज है यह लडाई, गाँवो में दूध पीना और औरतो के पीछे भागना ?"

ममोचकिन उबल पड़ा—"डिवीजन कमाडर ने जो भी कहा, उसका तुमसे कोई मतलब नही ? तुम अपनी टाग क्यों अडाते

*पार्टीजन—जर्मनों के खिलाफ लड़ने वाले सोवियत छापेमार।

हो ? अगर तुम्हें दूध नही चाहिए तो मत पियो --उधर बाल्टी मे पानी भरा है । यह तुमसे नही, लेफ्टिनेंट से संबध रखती है । सदर कार्यालय के प्रति वही जवाबदार होता है । तुम उसकी दाई बनना चाहते हो ? अपने को क्या समझते हो ? गँवार हो, गँवार । यदि मैं कर्च मे तुम्हे पकड पाता तो पाँच मिनट मे तुम्हारे कपडे उतारकर तुन्हे मछलियो का पेट भरने के लिए पानी मे फेक देता ।"

अनीकानोव सद्भाव से हँस दिया ।

"हो सकता है । लोगो के कपडे उतारना--तुम उसमे पटु हो । और खाने के मामले मे भी तेज हो । कर्नल यही तो कह रहा था ।"

"तो क्या हुआ ?" ममोचकिन ने हमेशा की तरह अनीकानोव के धीरज से तिलमिलाकर जवाब दिया--"खाने मे क्या बुराई है ? "अच्छे दिमाग वाला स्काउट जनरल से ज्यादा खाता है । अच्छा खानेवाले लोग ज्यादा बहादुर और ज्यादा चतुर होते हैं । समझे ?"

लाल गालो और सुनहरे बालोवाले ब्रेजनीकोव, धब्बेदार चमडीवाले बाएकोव, सत्रह वर्षीय युवा गोलूब, लम्बे और सुन्दर फेओकटिस्टोव तथा शेष ने ममोचकिन के गर्म दक्षिणी बिस्फोट, और अनीकानोव के शान्त तुले हुए शब्दो को सुनकर मुस्करा दिया । केवल चौडे कन्धे और चमकते दाँतोंवाला साँवला मर्चेन्को कर्च पर बैठी बुढ़िया के पास खडा उसके नन्हें, माँस हीन हाथों को गौर से देखता रहा और नगरवासी के आश्चर्य से बार बार दोहराता रहा---

""अरे, यह तो सचमुच की फैक्ट्री है !"

ममोचकिन और अनीकानोव के बीच सब तकरारो मे—चाहे मजाक मे हो या गुस्से मे, और चाहे जिस विषय पर हो---कि कर्च की हेरिंग मछली डरकुतस्क की पर्च मछली से अच्छी होती है या नही, जर्मन और सोवियत टॉमी-गनो की तुलनात्मक विशेषताओ के विषय में, हिटलर पागल था, या एक बदमाश मात्र, दूसरा मोर्चा कब

खुलेगा---ममोचकिन हमेशा आक्रामक रहता था, और अपनी चतुर छोटी आँखो को शैतानी से सिकोड़कर अनीकानोव को शान्ति के साथ किन्तु पैनेपन, से विरोधी को अपनी धीरता से क्रोधोन्मत्त करता हुआ अपनी रक्षा करता ।

जल्दी बिगड उठनेवाला, झगडालू और चिडचिडा ममोचकिन अनीकानोव की ग्राम्य शान्तिमयता और मृदु स्वभाव से क्रुद्ध हो उठा । इस क्रुद्धता मे एक छिपी हुई ईर्ष्या भी मिली थी । अनीकानोव को एक 'आर्डर' द्वारा सम्मानित किया गया था, जबकि उसे एक तमगा ही मिला था । अनीकानोव के साथ कमाडर बराबर वाले-सा बर्ताव करता था, और उसके साथ औरो की तरह । इस सबसे ममोचकिन को बहुत व्यथा होती । वह अपने आप को यह कल्पना कर सान्त्वना देने की कोशिश करता कि अनीकानोव को इतना विश्वास इसलिए मिला हुआ है क्योंकि वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य है, लेकिन अपने मन में वह उसके शान्तिमय साहस की सराहना किए बिना नही रहता । खुद ममोचकिन की साहसिकता काफी हद तक एक विशिष्ट ढंग मात्र का, जिसे उसको स्वय के अहंकार द्वारा सतत उत्ते-जित करते रहने की जरूरत होती थी, और वह यह जानता था । अहंकार उसमे जरूरत से बहुत ज्यादा था और अच्छे स्काउट के रूप मे वह ख्याति पा चुका था । कई शानदार 'कामो' में वह हिस्सा ले चुका था, लेकिन उन सबमें चमकनेवाला था अनीकानोव ।

"कामों" के बीच के समय में ममोचकिन सबसे बाजी मार ले जाता । जिन स्काउटो ने अभी मोर्चे की हवा नही खाई थी, वे उसकी बहुत प्रशसा करते । ढीले-ढाले पतलून और सर्वोत्तम चमडे के बने हुए भूरे बूट पहनकर वह अकडता घूमता । उसकी कमीज का कालर हमेशा खुला रहता और चमकदार हरे चँदोवे वाली कज्जाकी ऊनी टोपी के नीचे से काले बालों की एक लट उसके माथे पर झूमती होती । उसके साथ दैत्याकार, चौडे कंधेवाले सीधे-सादे

अनीकानोव की क्या तुलना हो सकती थी ?

लड़ाई के पूर्व हर एक का जीवन उनके कामों और व्यवहार पर अमिट छाप छोड़ गया था—साइबेरिया के सामूहिक किसान अनीकानोव का शान्त आत्म-विश्वास, धातुओं का काम करने वाले मर्चेन्को की हिकमत और अचूक अन्दाज केकडे पकडने वाले ममोचकिन का दु साहस । लेकिन अतीत अब बहुत दूर की चीज लगता था । वे नही जानते थे कि लडाई अब और कितने दिन चलेगी, और उन्होंने अपने को उसमें पूरी तरह झोक दिया था । लडाई उनका दैनिक जीवन बन गई थी और टुकडी उनका एकमात्र परिवार ।

परिवार ! एक अजीब परिवार था वह जिसके सदस्य जीवन के फलो का ज्यादा दिनो तक एक साथ स्वाद नही ले पाते । कुछ अस्पताल चले जाते, और कुछ उससे भी दूर, उस जगह, जहा से लौटा नही जाता । इस परिवार का अपना खुद का छोटा किन्तु रंगीन इतिहास था, जो एक "पीढी" द्वारा दूसरी "पीढी" को स्थानान्तरित होता आ रहा था । कुछ लोगो को याद था कि कैसे अनीकानोव पहलीबार टुकडी मे आया था । काफी समय बीत जाने के बाद उसे गश्त पर ले जाया गया—कोई भी पुराने लोग उसे साथ नही ले जाना चाहते थे । यह सत्य है कि इस साइबेरियावासी की विशाल शारीरिक शक्ति बडे फायदे की चीज थी—यदि मौका पडता तो वह दो आदमियो को अपनी बाहो मे दबाकर अचेत कर देता । लेकिन वह इतना विशाल और भारी था कि स्काउट डरते थे कि यदि वह मारा गया या जख्मी हो गया, तो उसे लेकर कभी भी भाग न सकेंगे । उसकी इन मिन्नतो और कसमो का कोई फल नही होता कि यदि वह जख्मी हो गया, तो वह खुद रेंगकर भाग जायगा और यदि वह मारा गया, तो "जहन्नुम मे जाय, मुझे वही छोड आना, जब मैं मर चुकूगा, तो जर्मन मेरा क्या बिगाड लेगा ?" और यह अभी हाल की ही बात है, जब लेफ्टिनेंट त्रेवकिन जख्मी

लेफ्टिनेंट स्कवोर्टसोव की जगह पर आया तो चीजें बदली थी।

अपने पहले ही हल्ले पर त्रेवकिन अनीकानोव को अपने साथ ले गया। और "दैत्य" ने एक बड़े जर्मन को इतनी सफाई से पकड़ उठाया कि और स्काउट ठगे से खड़े रहे। विशाल बिल्ली की तरह फुर्ती से और निःशब्द उसने यह काम कर डाला। त्रेवकिन तक के लिए यह विश्वास करना मुश्किल हो गया कि अनीकानोव की बर-साती में एक अधघुटा जर्मन हाथ पैर फटकार रहा है—एक "भेदिया" जिसके बारे में डिवीजन पिछले एक महीने से स्वप्न देखता आ रहा था।

फिर सार्जेंट मर्चेन्को के साथ बाहर जाने पर अनीकानोव ने एक जर्मन कप्तान को बन्दी बनाया। मर्चेन्को के पैर में जख्म आ गया था, और अनीकानोव को उसे और जर्मन दोनों को लादकर लाना पड़ा। उसने अपने साथी और दुश्मन दोनो को साथ-साथ चिपटा रखा था, और दोनों मे एक को भी चोट न पहुँचने देने के लिए समान रूप से चिंतित था।

तपे हुए स्काउटो की सफलताएँ ही लम्बी रातो की चर्चा का मुख्य विषय होती, जो नए आदमियो की कल्पना को प्रेरणा देती और उनके विशिष्ट पेशे के प्रति उन्हे गर्व से भर देती। अब दुश्मन से दूर, इस लम्बी निष्क्रियता के समय में स्काउट ढीले पड़ते जा रहे थे।

पेट भर भोजन करने के बाद ममोचकिन ने पीछे ढासना लगाया, सिगरेट जलाई और बोला कि उसे इस गाँव मे रात बिताने और कुछ वोडका* लेने पर एतराज न होगा।

मर्चेन्को ने अस्पष्टता से कहा, "हाँ जल्दी भी काहे की है........ उनके पास पहुँच पाना कठिन है, जर्मन बहुत तेजी से भाग रहा है।"

इसी समय दरवाजा खुला और त्रेवकिन ने अन्दर प्रवेश किया।

---

*प्रसिद्ध रूसी शराब।

उसने टांग बँधे घोड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा, "दादी ये किसके है ?"

उनमे एक बादामी रंग की बड़ी घोडी, जिसके माथे पर सफेद तारा था, बुढ़िया की थी और शेष पडोसियो की । बीस मिनट के अन्दर वे पडोसी बुढ़िया के घर पर मौजूद थे, और त्रेवकिन जल्दी जल्दी रसीद लिखते हुए कह रहा था :—

"अगर चाहो तो अपना कोई छोकरा हमारे साथ भेज दो । वह घोड़ों को वापिस ले आएगा ।"

इस सुझाव से किसान खुश हुए । उनमे से हर एक अच्छी तरह जानता था कि सोवियत सेनाओं के तेजी से आगे बढने ने ही हिटलरियो को सब जानवर हँका ले जाने और गाँव को जलाने से रोक पाया था । उन्होने त्रेवकिन के सुझाव का कोई विरोध नही किया और तुरन्त एक नौजवान सईस को टुकडी के साथ जाने के लिए चुना । भेड की खाल का कोट पहने इस सोलह वर्षीय लडके को इस अचानक आई जिम्मेदारी का गर्व भी था, और भय भी । उसने घोड़ो को खोला, कसा और कुएँ पर पानी पिलाकर बोला— "घोडे तैयार है ।"

कुछ मिनट बाद बारह घुडसवार पश्चिम की ओर सरपट भागे जा रहे थे । अनीकानोव त्रेवकिन की बगल में पहुँचा और लडके की तरफ इशारा कर धीरे से बोला :—

"इस जब्ती के लिए आपकी गर्दन तो नही फँसेगी, कामरेड लेफ्टिनेंट ।"

"फँस सकती है", त्रेवकिन ने एक क्षण सोचने के बाद कहा— "लेकिन हम जर्मनी तक पहुँच सकेंगे ।"

एक दूसरे की बात समझकर दोनो मुस्करा दिये ।

अपने घोडे को एड मारते हुए त्रेवकिन ने प्राचीन जगल के मौन फैलाव को गौर से देखा । तेज हवा उसके मुह पर गिर रही

थी और घोड़े चिड़ियों की तरह उडते प्रतीत होते थे । पश्चिम में सूर्यास्त रक्तिम लालिमा से चमक रहा था । और घुड़सवार ऐसे आगे उड़े जा रहे थे मानो उसका पीछा कर रहे हो ।

——:o:——

अध्याय दो

डिवीजन हेडक्वार्टर ने रात के लिए एक बड़े जंगल मे बेकरारी से सोती हुई रेजीमेंटों के बीच डेरा डाला। कही आग नही जलाई गई क्योकि गुजरती हुई सेनाओ की घात में जर्मन हवाई जहाज सतत सिर पर सनसना रहे थे। सुरग लगाने वाला दल पहले ही आ चुका था, और उसने दिन भर काम कर, सीधी सड़को, नयनाभिराम संकेत बोर्डों और चीड़ की शाखो से छाई हुई साफ-सुथरी आरामगाहो युक्त एक आकर्षक हरा-भरा नगर बना डाला था। इस प्रकार के कितने क्षण-जीवी नगर यह सुरग लगानेवाले लोग युद्ध के इन वर्षो मे तैयार कर चुके थे।

सुरग लगानेवाली एक कम्पनी को कमाण्ड करनेवाला लेफ्टिनेंट बुगोर्कोव चीफ ऑफ स्टॉफ से बात करने के लिए इतजार कर रहा था। किन्तु लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव ने अपनी आँखे नक्शे पर जमाए रखीं। दुश्मन के स्थानो को दिखलानेवाली हमेशा की नीली पेन्सिल की रेखाएँ मौजूद न थी। और केवल ईश्वर ही जानता था कि पिछली टुकडियाँ कहाँ है? रेजीमेंट अथाह जंगल में खतरनाक रूप से एक दूसरे से विलग थी।

जिस जंगल में डिवीजन ने रात के लिए पड़ाव डाला था, वह एक प्रश्नवाचक की शक्ल का था। और ऐसा प्रतीत होता था कि मानो वह लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव से सेना के कमाण्डर की उप-हासात्मक आवाज में पूछ रहा है —"कहो क्या हाय? हल है उत्तर-पश्चिमी मोर्चा नही है, जहाँ आधी लडाई भर तुम अपनी पिछाड़ी पर बैठे रहे, और जर्मन तोपखाना नियमित घंटों पर गोलंदाजी करता रहता। यह चलता फिरता युद्ध है।"

गालीव, जो यह भूल गया था कि वह अन्तिम बार कब सोया, एक काकेशियन लबादे मे लिपटा बैठा था । आखिर उसने नक्शे से अपनी नजर उठाई और बुगोर्कोव को देखा ।

"क्या बात है ?"

लफ्टिनेट बुगोर्कोव बडे सतोष के साथ अपने आदमियों द्वारा बनाई हुई एक झोपड़ी को निहार रहा था ।

"मै यह जानने आया हूँ कि कल हेडक्वार्टर कहाँ रहेगा, कॉमरेड लेफ्टिनेट-कर्नल", उसने पूछा, "मै कल सबेरे ही वहाँ एक टुकडी भेज दूँ ।"

वह चाहता तो यही था कि डिवीजन इसी जगल में रुका रहे, भले ही एक ही दिन के लिए । तब तक शाखाओं के झोपड़ो वाले इस सुहावने नगर का कमसे कम थोड़ा तो इस्तेमाल हो चुकगा ; और तब इनको छोडकर जाने के पूर्व और इसके पहले कि बसंत की बयार इनमे अपना डेरा जमाए, यदि किसी ने गृह-निर्माण के इस चमत्कार के लिए बुगोर्कोव की प्रशसा मे दो शब्द कह दिए तो कितना अच्छा होगा ? बुगोर्कोव कुशल बढई और ख्याति-प्राप्त संगतराशो के वश का था, और दस्तकार का अभिमान प्रशसा का इच्छुक था ।

"अपना नक्शा मुझे दो", लेफ्टिनेट-कर्नल ने कठोरता से कहा । उसने उस पर एक छोटे झडे से निशान लगा दिया—एक दूसरे जंगल के सिरे पर, मौजूदा पड़ाव से लगभग चालीस किलोमीटर* दूर । बुगोर्कोव आह को दबाते हुए दरवाजे की तरफ मुड़ा लेकिन उसी समय दरवाजे पर पर्दा करनेवाली बरसाती हटी और टोह लेने के काम का मुखिया कैप्टेन बराशकिन अन्दर दाखिल हुआ । लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव ने उसका तीखेपन से स्वागत किया ।

"डिवीजन कमाडर हमारे टोह लेने के काम से असंतुष्ट है । आज हमने लेफ्टिनेट त्रेवकिन और उसके साथियों को देखा । उनकी

---

*किलोमीटर—⅝ मील या ५ फर्लांग ।

सूरत-शक्ल अपमानजनक थी। गन्दे और हजामत बढ़ी हुई। तुम सोच क्या रहे हो ?"

लेफ्टिनेंट-कर्नल एक क्षण तक चुप रहा, और फिर अचानक क्रोध के स्वर मे चिल्लाया—

"और कैप्टेन ! क्या तुम मुझे यह बतलाने की कृपा करोगे कि दुश्मन कहाँ है ?"

लेफ्टिनेट बुगोर्कोव झोपड़ी के बाहर खिसक आया और आगामी प्रयाण के लिए सुरग लगाने वाली एक टुकड़ी को तैयार करने चला गया। रास्ते मे उसने त्रेवकिन से मिलने और जो कुछ सुना था, वह उसे बता देने का निश्चय किया। "भला इसी मे है कि वह जल्दी मे अपने आदमियो की हजामत करवाए और उन्हे चुस्त बनाए ; स्नेहमय बुगोर्कोव ने सोचा, "अन्यथा उसे करारी डॉट मिलेगी।"

बुगोर्कोव को त्रेवकिन बहुत पसंद था, जो उसी के वोलगा-प्रदेश का वासी था। हालाँकि अब वह एक प्रसिद्ध स्काउट था, फिर भी त्रेवकिन वही पुराना शान्त और शर्मीला व्यक्ति था, जैसाकि उनकी पहली मुलाकात के समय था। यह सच है कि वे एक दूसरे से बहुत कम मिल पाते थे, दोनो के पास व्यस्त रखने लायक काफी काम था—लेकिन यह कल्पना करना सुखकर होता था कि उसका मित्र वोलोदया त्रेवकिन कही नजदीक ही साथ आगे बढ रहा है—शर्मीला, गभीर, विश्वसनीय त्रेवकिन, हमेशा मौत की छाया मे चलने-वाला, अन्य किसी की अपेक्षा मौत के सबसे निकट ....।

बुगोर्कोव त्रेवकिन को नही पा सका। उसने बाराशकिन की झोंपड़ी मे झाककर देखा, किन्तु वह अब भी डॉट से असतुलित था और उसने बुगोर्कोव के प्रश्न का उत्तर गालियो की एक बौछार द्वारा दिया—

"ईश्वर ही जानें, कहाँ है ! मुझे सकट में डाल रहा है...."

कैप्टेन बाराशकिन डिवीजन मे अपनी गन्दी भाषा और आलसी-

पन के लिए कुख्यात था। यह महसूस कर कि हेडक्वार्टर के लिए वह बेकाम है, और किसी भी दिन अपने पद से हटाए जाने की अपेक्षा करते-करते उसने कुछ भी करना बद कर दिया था। नए हमले भर उसको इस बात का अस्पष्ट ज्ञान न था कि उसके गश्त देनेवाले कहाँ है और क्या कर रहे है। वह खुद हेड क्वार्टर की ट्रक में यात्रा करता और नई आई हुई रेडियो आपरेटर, कात्या, जो सुनहरे केशो और सुन्दर आँखो वाली स्वप्निल सैनिक लडकी थी, से प्रेमालाप किया करता था।

बुगोर्कोव वाराशकिन को छोडकर आया और उसने अपने आपको उस क्षण-भंगुर मानव-घोंसले के बीच मे पाया, जिसका निर्माण स्वयं उसने किया था। जब वह सीधे रास्ते पर चल रहा था तब उसने सोचा कि कितना बढिया हो कि यदि लडाई खात्मे पर आए और वह घर लौटकर अपना काम फिर हाथ में ले सके —घर बनाए, रदा किये हुए तख्तो की खुशबू साँस मे भरे, मचानो पर चढे और दाढी वाले प्रख्यात कारीगरो के साथ नीले नक्शो पर बहस करे।

सबेरे बुगोर्कोव ने फावडे, कुदाली, और अन्य औजार एक गाडी में लादे और अपने सुरगवालों के साथ रवाना हो गया।

प्रातःकालीन चिडियो की चहचहाट बूढ़े पेडों में फैल रही थी, जिनके शिखर सकरे जगली मार्ग के ऊपर एक दूसरे से मिले हुए थे। अपने लबादों पर बरसाती ओढे सतरी सड़क के किनारे चहल-कदमी कर रहे थे और रात के पहरे से ठंडे हो रहे थे। पड़ाव के इर्द-गिर्द और सडक के किनारे खुदी खाइयों मे निंदासे मशीनगनर पहरे पर थे। सैनिक एक दूसरे से सटकर जमीन पर बिछी हुई चीड़ की शाखो पर लेटे हुए सो रहे थे। कुछ सबेरे की सर्दी से जागकर इधर-उधर दौड़कर अलाव जलाने के लिए शाखे और डंडियाँ जमा कर रहे थे।

सर्दी से ठिठुरते हुए बुगोर्कोव ने सोचा, "यही युद्ध है। हजारों-

लाखो आदमियों के लिए बेघरबार जीवन ।"

लगभग १० किलोमीटर चलने के बाद सुरंग लगानेवालो ने तीन घुडसवारो को तेजी से पश्चिम की ओर से आते हुए देखा । बुगोर्कोव घबडा उठा । वह जानता था कि आगे एक भी सोवियत सैनिक नही है । घुडसवार सरपट आए, और तुरन्त बुगोर्कोव ने राहत के साथ उनमे से एक को पहचाना—वह था त्रेवकिन ।

"जर्मन दूर नही है, तोपखाना और स्वयचालित तोपे उनके पास है", त्रेवकिन ने बिना उतरे हुए कहा ।

उसने बुगोर्कोव के नक्शे पर जर्मनो की रक्षा-पंक्ति का निशान बतलाया—वे जगल के सिरे पर उस स्थान से सीधी गुजरती थी, जहाँ अगले दिन के लिए झोपडो का गाँव बनने को था ।

"और दो जर्मन बख्तरबन्द गाडियाँ हैं और एक स्वयचालित तोप वहाँ जमी है । शायद छिपकर वार करने के लिए ....देखो," और त्रेवकिन ने कहा, "जर्मनो के साथ मुठभेड मे अनीकानोव जख्मी हो गया है ।"

अनीकानोव अपने घोडे पर भोंडेपन से और माफी मांगती मुस्कान लिए वैठा था मानो किसी असावधानी द्वारा उसने सबको बड़ी तकलीफ दे डाली है ।

बुगोर्कोव असमजस में था ।

"अब मै क्या करूँ ?" उसने पूछा ।

वे सहमत हुए कि सुरग लगानेवाले जहाँ है, वही रहे । त्रेवकिन चीफ ऑफ स्टॉफ को रिपोर्ट करेगा और फिर हेडक्वार्टर के आदेश बुगोर्कोव को पहुँचा देगा । त्रेवकिन ने अपनी विशाल, सफेद तारेवाली भूरी घोडी की रास झटकी और सरपट चला ।

कर्नल सर्वाचेन्को कैम्प के बीचोबीच अपनी जीप के पास खडा हुआ था । रेजीमेंटों के कमाडर, लेफ्टिनेंट-कर्नल और मेजर उसे घेरे खड़े थे । एडजूटेन्ट और अर्दली थोडी दूर पर खड़े थे । त्रेवकिन ने

जोर से सांसे खीची, सरककर जमीन पर उतरा और अनभ्यस्त लम्बी यात्रा के बाद जरा लगडाता हुआ कर्नल के पास पहुँच।।

"कामरेड डिवीजन कमाडर, जर्मन ज्यादा दूर नही है ।"

वह संक्षेप मे रिपोर्ट दे रहा था कि सब उसके चारो ओर घिर आए। दुश्मन ने नजदीक की एक नदी के किनारे मोर्चा जमा लिया था। उसने तोपखाने की स्थिति और छः स्वयचालित तोपे देखी थी। खाइयो मे जर्मन पैदल सेना दखल किये हुए है। दो बख्तरबन्द गाडियाँ और एक स्वयचालित तोप बीस किलोमीटर दूर वार करने के लिए छिपी हुई है।

डिवीजन कमाडर ने त्रेवकिन की दी हुई सूचनाओ को अपने नक्शे पर अकित कर लिया। आम चहल-पहल हो गई, रेजीमेटो के कमाडरो और स्टॉफ अफसरो ने अपने नक्शे निकाले, लेफ्टिनेट-कर्नल गालीव की सर्दी जाती रही, और उसने अपना लबादा जमीन पर डाल दिया; राजनैतिक विभाग का प्रधान राजनैतिक अफसरो को एकत्रित करने चला गया।

"तो तुम्हारा ख्याल है कि यह मोर्चे वास्तविक है ?" जीप की छत पर फैले हुए नक्शे पर नीली पेन्सिल की अन्तिम लाइने खीचते हुए अन्त मे डिवीजन कमांडर ने पूछा।

"जी हाँ, कामरेड कमाडर।"

"और तुमने स्वयंचालित तोपो को अपनी आँखो से देखा ?"

"जी हॉ, कामरेड कमाडर!"

"और तुम कोई चीज झूठ-मूठ तो नही गढ रहे हो ?" अपनी सिकुडी हुई भूरी और हरी आँखो से त्रेवकिन को तरेरते हुए कर्नल ने अचानक ही पूछा।

"नही, मै कुछ नही गढ रहा हूँ।"

"बुरा मत मानना," डिवीजन कमाडर ने उसे मनाने के स्वर में कहा। "मै सिर्फ पक्का कर लेना चाहता था क्योंकि भाई मै

जानता हूँ, स्काउटो को थोडा मनगढंत करना भी अच्छा लगता है ।"

"मै मनगढंत नही कर रहा हूँ ।" त्रेवकिन ने कहा ।

कही "तैयार हो" की आज्ञा दी गई और आदमियो के उठने से जंगल मे हलचल हो गई ।

अपने नक्शे की ओर देखते हुए डिवीजन कमाडर ने अपने आदेश जारी किए ।

"रेजीमेटे हमेशा की तरह रूट फार्मेशन में चलेगी । सिरे पर चलनेवाली रेजीमेट एक मजबूत बटालियन हिरावल के रूप मे आगे भेजेगी । रेजीमेंट का तोपखाना पैदल सेना के साथ रहेगा । गश्ती दल और टामीगनर बाजुओ की रक्षा करेगे । ऊँचाई न० १०८.१ पर पहुँचने पर सिरे पर चलनेवाली रेजीमेट युद्ध के लिए फेल जाएगी । उसका कमाड स्थल ऊँचाई न० १०८.१ पर रहेगा । मै इस जगल के पश्चिमी किनारे पर बन रखे के झोपड़े के पास रहूँगा । गालीव कार्यवाही के लिए आदेश तैयार करो । कोर हेडक्वार्टर पर रिपोर्ट करो ।" फिर सहसा अपनी आवाज धीमी कर बोला—"कामरेड अफसरो, सावधान रहना । तोपची रेजीमेट पीछे रह गई है, गोले और कारतूस कम है । हम खराब स्थिति मे हैं...........
हम सब अपने कर्त्तव्य को इज्जतदार ढंग से पूरा करेगे ।"

अफसर अपना काम देखने के लिए फुर्ती से इधर उधर चले गए । केवल डिवीजन कमाडर गालीव और त्रेवकिन ही मोटर के पास रह गए । सर्बीचेन्को ने त्रेवकिन और उसकी फेन से सनी घोड़ी की ओर देखा ।

"अच्छा काम किया तुमने", उसने मुस्कराकर कहा ।

"अनीकानोव को चोट आ गई है", उलझन में पड़े त्रेवकिन ने बिना मतलब कहा ।

कर्नल ने कोई उत्तर नही दिया , उसने गालीव को अन्तिम आदेश दिए और फिर मोटर पर बैठ रेजीमेंटो की ओर चला गया ।

स्टॉफ अफसर गालीव के इर्द-गिर्द जुड़ आए। वह एक बदला हुआ आदमी था---उत्साहपूर्ण और बातूनी* ऐसे मौकों पर अफसर हमेशा कहा करते थे, 'गालीव को जर्मनों की गन्ध, आ रही है।"

"अपने साथियों के पास पहुँचो।" उसने पुकार कर त्रेवकिन से कहा। "जर्मनो पर नजर रखो और खबरे भेजो।"

"अच्छा कामरेड लेफ्टिनेट-कर्नल!" त्रेवकिन ने चिल्लाकर उत्तर दिया और अपने घोडे पर सवार हुआ।

इस बीच दूसरा स्काउट अनीकानोव को दवाखाने ले गया था। वह फिर लेफ्टिनेट से आ मिला और बिना सवार के एक घोडे को साथ लाया।

त्रेवकिन ने बुगोर्कोव को व्यग्रता के साथ वहीं इंतजार करते पाया जहाँ वह उसे छोड़ गया था। उसने उतरकर अन्यमनस्क भाव से बुगोर्कोव द्वारा दी हुई वोडका गले के नीचे उतारी और नक्शे पर डिवीजन के अगले हेडक्वार्टर की स्थिति बतलाने लगा।

"तो लड़ाई फिर शुरू हो रही है", बुगोर्कोव ने त्रेवकिन की गंभीर आँखों की ओर देखते हुए कहा।

स्काउटो ने अपने घोड़ों को ऐंड़ लगाई, और अज्ञात का सामना करने के लिए चल पडे।

सुरग लगानेवाले भी धीमे स्वर से यह बाते करते हुए रवाना हुए कि कैसे लड़ाई फिर शुरू हो रही थी और लड़ाई का अन्त कही नजर न आता था। कोई अन्त नही, इस लडाई का कोई अन्त नही।

"भाइयो!" बुगोर्कोव ने कहा---"अब झोपड़े डालनेवाली टुकडी की जगह हम खाई खोदनेवाला दल बन जाएँगे।"

त्रेवकिन शीघ्र अपने आदमियों में पहुँच गया। घने जंगलवाले एक टीले पर जो उस अनाम नदी से दूर नही था, जिसके पास दुश्मन ने मोर्चा जमा रखा था, वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

---

*आज से तीस वर्ष पूर्व के बाक देशीय लड़के की भांति।

मर्चेन्को, जो जर्मनो को एक पेड के ऊपर से गौर कर रहा था, कूदकर नीचे आया और रिपोर्ट दी—

"वे जर्मन बख्तरबंद गाडियाँ और वह स्वयंचालित तोप लगभग आध घंटे तक रुकी रही, फिर उसने नदी को पार किया—और अपनी यूनिट को लौट गई। मैंने देखा कि नदी उथली है। पानी गाडियों के आधे तक ही आया।"

स्काउट रेंगकर नदी की तरफ चले, और झाडियों में जा छिपे। त्रेवकिन ने छोकरे को घोडो के साथ वापिस घर भेज दिया।

"इसी सड़क पर सीधे चले जाना। सब घोड़े मैं तुम्हे नही दे रहा हूँ। दो को मैं एक दिन और रक्खूगा। उन्हें मैं कल वापिस कर दूगा, अन्यथा मेरे पास रिपोर्ट भेजने के लिए कुछ भी साधन न रह जायगा।"

फिर त्रेवकिन रेंगकर अपने आदमियो के पास पहुँचा और जर्मनो की रक्षा-पक्ति को जांचने लगा। खाई ताजी ही खोदी गई थी, और अभी पूरी नही हुई थी। वह मुश्किल से अपने पास दो गुजरनेवाले जर्मनों के कधो तक पहुँचती थी। खाई के सामने काँटेदार तार की दो कतारे थी। सेवार से ढकी हुई एक सकरी नदी स्काउटो को दुश्मनो से अलग किए थी। एक आदमी दीवार पर खडा हुआ था और अपनी दूरबीन द्वारा पूर्वी किनारे की ओर देख रहा था।

"मैं उसे हिटलर की अम्मा के पास भेजता हूँ", ममोचकिन ने फुसफुसाकर कहा।

"बेवकूफी मत करो", त्रेवकिन बोला।

उसने दुश्मन के बचावो पर गौर किया। हाँ, वह कठिनाई से नजर आनेवाली धरती की भूरी पट्टी—वह दूसरी खाई है। जर्मनो ने बचाव के लिए अच्छी जगह चुनी थी—पश्चिमी किनारा पूर्वी किनारे से अधिक ऊँचा था और उस पर घना जगल था।

गाँव के इधर-उधर बसे घरों की ऊँचाई काफी सुविधाजनक थी और नक्शे पर वह न० "१६१.३" के रूप में अंकित थी। खाइयों में काफी सैनिक थे। गाँव के पूर्वी सिरे पर एक स्वयंचालित तोप लगी हुई थी।

त्रेवकिन को अचानक अनीकानोव का ख्याल आया, लेकिन यह एक अस्पष्ट उड़ता हुआ ख्याल था—जैसे कोई अपने उस सहयात्री के बारे में सोचता है जो ट्रेन से उतरकर रात में गायब हो गया हो।

"उधर देखो, कामरेड लेफ्टिनेंट", ममोचकिन ने फुसफुसाकर कहा, "जर्मन हवा खाने जा रहे हैं।"

लगभग तीस जर्मन जंगल से निकले और नदी की ओर बढ़े। वहाँ वे फैले और कनखियों से सामने के तट की ओर देखते हुए गन्दे पानी में उतरे।

त्रेवकिन अपने सबसे कुशल निशानेबाज मर्चेन्को की ओर मुड़ा।

"उन्हें जरा डराना तो।"

टॉमीगन से एक लम्बे गोलीबार ने पानी में छोटे छोटे फुव्वारे से उठाए। जर्मन अपने तट की ओर भागे। सब ओर व्याकुलता से देखते हुए और बतखों की तरह चीं चीं करते हुए जमीन पर लम्बे हो गए। खाईयों में काफी दौड़ा-दौडी और उत्तेजना मची; धड़धड़ाता हुआ एक हुक्म सुनाई दिया और तब गोलियाँ पास से सनसनाने लगी; गाँव की परिधि पर खड़ी हुई स्वयचलित तोप सहसा हिली, गरजी और एक के बाद एक कर तीन गोले उगल पड़ी। एक क्षण बाद जर्मन तोपखाना गड़गड़ाया, कम से कम दस तोपें रही होंगी और तीन या चार मिनट तक वे मिलकर टीले पर बरसती रहीं। गोलों ने गुस्से से धरती को फाड डाला, उनकी चीखती हुई आवाज ने जगल की शान्ति को टुकड़े टुकड़े कर दिया।

तोपखाने का गर्जन, डिवीजन के हरावल दस्ते, कुमक मिली हुई बटालियन तक पहुँचा। आदमी रुक गए। बटालियन कमाण्डर मुश्ताकोव और तोपखाना कमाडर कैप्टेन गुरविच अपने घोडो पर गड गए।

"हम तो इसे भूल ही गए थे", मुश्ताकोव ने कहा। "एक महीने से अधिक हो गया, यह सगीत नही सुना था।"

विस्फोट नियमित अन्तर पर होते रहे।

एक क्षण रुकने के बाद बटालियन आगे बढी। सडक की एक मोड पर सिपाहियो ने भेंड की खाल का कोट पहने एक लड़के को कुछ घोडे ले जाते देखा। अपने घोडे पर वह दुबका हुआ बैठा था। उसकी गर्दन अन्दर खिची हुई थी और वह तोपो के गर्जन को सुन रहा था।

बटालियन कमाडर उसके पास पहुँचा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"जल्दी करो", उसने भयभीत फुसफुसाहट से कहा। "बहुत बहुत से जर्मन नदी के पास है और स्काउट केवल दर्जन भर............"

अध्याय तीन

जिसे सैनिक शब्दावली मे "रक्षात्मक कार्यवाही" कहा जाता है वह इस प्रकार अमल में आती है—यूनिटे इधर-उधर फैल जाती है और बढती हुई सीधी दुश्मन के मोर्चे को भेद जाने की कोशिश करती हैं। किन्तु सैनिक निरतर कार्यवाही से थके हुए है और तोपखाना तथा गोला-बारूद कम है। हमला पीछे ढकेल दिया गया। पैदल सेना दुश्मन की गोलाबारी के नीचे नदी की भीगी जमीन पर जमी रही। टेलीफोन आपरेटर बडे अफसरों के गुस्से भर आदेश और कसमे सुन रहे है "दुश्मन को तोड आगे बढो। आदमियो को खडा कर फासिस्टों को मार भगाओ।" दूसरे असफल हमले के बाद आदेश आया : "वही जम जाओ।"

लड़ाई एक विशाल खुदाई कार्य के रूप मे बदल गई। जर्मनो द्वारा छोड़े बहुरंगे राकेटों* और जर्मन तोपखाने द्वारा पडोसी गावो में लगाई आग से निकली लपटों की रोशनी मे खुदाई हो रही है। सारी जमीन छेदों और खंदको की भूलभुलैयो से चलनी हो रही है। जल्दी ही जगह की सारी सूरत बदल गई। अब वह घासो और सेवार से भरी नदी का जगली तट नही रहा है, बल्कि बमो और गोलो से कटामटा एक "अग्रिम सिरा" है। जो दाते के नर्क† की तरह हिस्सो में बटा हुआ है और नंगा, खाइयों से जख्मी तथा

*अग्निवाणो

†प्रसिद्ध इतालवी महाकवि दाते के महाकाव्य "स्वर्गीय सुख" का एक सर्ग जहा नायक नर्क से गुजरता है। इसमे नर्क का बड़ा वीभत्स चित्रण है।

व्यक्तित्वहीन है । अजीब हवाएँ उस पर से गुजर रही है ।

जिसे पहले नदी का किनारा कहते थे (अब उसे 'निर्जन प्रदेश' कहा जाता था) वहा से रात को गश्त करते समय स्काऊटो को जर्मनो की कुल्हाडियों की चोट और जर्मन सुरंग लगाने वालो के स्वर भी सुनाई पड़ते थे जो अपने अग्रिम सिरे को मजबूत बना रहे थे ।

लेकिन हर निराशा के पीछे आशा भी छिपी रहती है । पिछड़ी हुई टुकड़िया पहुचने लगीं । चू–चू करती गाडिया गोले, कारतूस, रोटी, भूसा और डिब्बा बन्द खाना लाई । और अन्त मे डाक्टरी बटालियन, मैदानी डाकघर, क्वार्टरमास्टर का भडार और जानवरो का अस्पताल भी आ पहुंचा और जगलो के नीचे छिपा कर उन्होने भी नजदीक ही अपने को जमा लिया ।

तोपखाना रेजीमेन्ट भी पहुंची और सबने उसका हार्दिक स्वागत किया । तोपे जमीन मे गाडी गईं । फिर उन्होने परीक्षण के लिए गोलदाजी की और दुश्मन की खाइयो और बिलो को धम–धमा दिया––हमारे सैनिको को इससे बडा सन्तोप हुआ ।

अपेक्षाकृत शान्त जीवन शुरू हुआ––भीगा, चिपचिपा, कष्ट–मय ,छछूदर-सा जीवन । लेकिन तब भी जीवन तो था ही । और जब मैदानी डाक आई और पूरे एक महिने के आगे बढने के दौरान मे इकट्ठा हुए पत्रो के मोटे पुलिन्दे सैनिको के ठिठुरते हाथो मे पहुचे तो जीवन सुखमय-सा हो उठा ।

त्रेवकिन ने अपने पत्रो को एक लोमडी की मॉद मे पढा जो नदी के तट पर ही घासपात और सेवार में थी । पत्र उसकी मा, जो वोल्गा के एक छोटे से कस्बे में स्कूल शिक्षक थी, और मास्को में रहने-वाली उसकी बहन के पास से आये थे । उसकी मां के सब पत्रो का एक ही निष्कर्ष था, उत्कठा भरी और करुण किन्तु मौन निवेदन कि––मरना नही । उसकी बहन लेना ने, जो मास्को की संगीतशाला मे एक वायलिन कक्षा मे शिक्षा पा रही थी, अपनी प्रगति के बारे

में लिखा था । उसने बारव* और चेकोवस्की† के विषय मे गुस्ताखी भरी निकटता से लिखा था ।"बूढा चेकोवस्की उतना कठिन नही है जितना मै सोचा करती थी... .... और वह बूढा बारव.........
...."आदि आदि ।

तरुणाई की गपशप, बिजली के झाडफानूसो की एकटक चमक, वायलिनो के मुलायम स्वर ---यह सब कितनी दूर की चीजे है अब ! सच कहे तो त्रेवकिन को यह बुरा भी लगा कि लोग नाटकघर जाते है, सगीत सुनते है, प्रेम करते है, अध्ययन करते है---जबकि वह, त्रेव-किन और अन्य लोग यहां मौत के खतरे में बैठे है---और वह भी बरसते पानी मे ।

"क्या लिखा है, कामरेड लेफ्टिनेन्ट ?" मर्चेन्को ने पूछा, जो दुरबीन लिए हुए उसी के पास बैठा हुआ था ।

"किसी तरह घिसट रहे है और हमारी तरफ देख रहे है--- सोच रहे है कि हम जल्दी ही तो ठिकाने नहीं लग जायेगे " त्रेवकिन ने उत्तर दिया ।

जर्मनो के मोर्चे से अपनी नजर हटाये बिना मर्चेन्को ने सिर हिलाया और हँस दिया ।

"जर्मन कुछ करने वाले है, " उसने कहा ।

त्रेवकिन ने दुरबीन ले ली । सेनिक एक तोप को जंगल के बाहर लुढका कर ले जा रहे थे । "उस बूढे बारव" के बारे में अपनी बहन के शब्दो की याद कर वह हँसा ।

उसने गुरेविच को फौन किया ।

"होशियार रहो गुरेविच---उन्होंने एक तोप बिलकुल नजदीक से वार करने के लिए निकाली है---खंडहर घर के दो अंगुल दाई ओर ।

*बारव एक विश्व-विख्यात जर्मन संगीतज्ञ जिसके लिखे गीत आज भी उच्चकोटि के माने जाते है और लोकप्रिय है ।

†चेकोवस्की---एक प्रसिद्ध सोवियत संगीतकार ।

उसे देखना ।"

"धन्यवाद, त्रेवकिन," सदा सतर्क रहने वाले तोपची की दूरस्थ आवाज आई । "हम उन्हे एक 'बडल' भेजते है ।"

ममोचकिन ने अपना सिर घास के अन्दर से निकाला । "कुछ खाओगे कामरेड लेफ्टिनेण्ट ?"

वह त्रेवकिन के लिए एक प्लेट मे अखबार से लिपटा हुआ आधा गूज* लाया था ।

मर्चेन्को के साथ गूज खा लेने के बाद अचानक उसे यह विचार आया कि कुछ दिनो से ममोचकिन बहुधा ऐसे ऐसे पकवान ला रहा है जो सेना के राशन में शुमार नही है । वह पूछने ही वाला था कि यह सब कहा से आता है लेकिन उसी पल मर्चेन्को ने उसका ध्यान जर्मनो की ओर खीचा और बात उसके दिमाग से निकल गई ।

ममोचिकन सचमुच ही धनाढ्य हो गया था । कोई नही जानता था कि वह यह, अन्डे, मक्खन, मुर्ग, पेठे का मुरब्बा और बन्द गोभी का अचार कहा से पा जाता था ।

"तदबीर का सवाल है," स्काउटो के पूछने पर उसने वक्र हँसी हँसते हुए उत्तर दिया ।

वास्तव मे बात बडी सीधी थी, और बहुत गदी । जब त्रेवकिन द्वारा ममोचकिन अन्तिम दो घोडे लौटाने के लिए भेजा गया तो उसने उन्हें उनके मालिकों को लौटाने की बजाय पास के गाँव मे एक विधुर को "अस्थायी तौर पर" किराए से दे दिया । उसने धन नही लिया लेकिन ठहराया कि बुड्ढा उसे भोजन देता रहे । और बुड्ढे ने यह काम बडी उदारता से किया । क्योकि यह जुताई और बुवाई का व्यस्त समय था ।

नौजवान स्काउट ममोचकिन की प्रशंसा करते थे—उसकी चतुरता और उसके भाग्य पर आश्चर्य करते थे । सुन्दर किम्रोकटिस्टोव

*गूज—हस की जाति का एक पक्षी

उसका सबसे निष्ठावान अनुयायी था। वह हर चीज में ममोचकिन की नकल करने की कोशिश करता था। यहाँ तक कि मूछें तक अपने आदर्श की तरह रखता था। रोज सांझ को ममोचकिन टुकडी का जबानी इतिहास नए आने वालो को सुनाता—जिसमे उसकी खुद की सफलताओ पर विषेश जोर रहता था। यह सच है कि अनीकानोव की प्रशंसा मे भी वह कुछ उदार शब्दो का प्रयोग करता—लेकिन अनीकानोव इतिहास बन गया था और इसलिए ममोचकिन की ख्याति को धुधला नही कर सकता था।

ममोचकिन की बाते सुनते-सुनते अक्सर स्काउट उसकी असभावनाओ और उसकी असंगतियो को पकड लेते। लेकिन इससे उसे ज्यादा उलझन नही होती। सिर्फ त्रेवकिन की उपस्थिति मे ही उसकी वाचालता तुरन्त थम जाती। त्रेवकिन को झूठ से घृणा थी। जब शाम को वह खाली होता तो खुद भी लडाई की घटना सुनाता, और ऐसी शामे नए आदमियों के लिए चिरस्मरणीय होती।

उसकी शीलता सबको अचम्भे में डाल देती। वह अनीकानोव के विषय मे बातें करता, मेजर बीलोव के विषय मे जो लडाई में मारा गया था, और मर्चेन्को तथा ममोचकिन के बारे में, लेकिन वह अपने विषय मे बोलने से बचता और अपने को सिर्फ एक आँखो देखे गवाह के रूप मे पेश करने की चेष्टा करता।

"तुमको अनीकानोव की भाति काम करना सीखना चाहिए", अक्सर वह एक कहानी खत्म करते हुए कहता। और ममोचकिन अपने कोने मे बैठा हुआ ईर्ष्या से कुढता।

ऐसी शामों को युरागोलूब लेफ्टिनेट के पैरो के पास जा बैठता और पूजा भरी नजरो से उसकी ओर एकटक देखता रहता। वह ममोचकिन की अतिरंजित वीरता पर आश्चर्य कर सकता था, लेकिन उसके लिए एकमात्र आदर्श था यह कम बोलने वाला तरुण लेफ्टिनेट।

ममोचकिन को भी यह शामे अच्छी लगती । आम तौर पर चुप रहने वाला लेफ्टिनेट इन दुर्लभ मौको पर जैसे खिल उठता था । ढेर-सी कहानियाँ उसे आती थीं, और कभी कभी वह उन्हे सेना के नेताओं और वैज्ञानिको के जीवनों के विषय में भी बतलाता और ममोचकिन को ज्ञान के लिए बडी प्यास थी ।

त्रेवकिन का कृपापात्र बनने के किसी विचार के बिना वह अपने रहस्यमय प्राप्ति स्थान से लाकर त्रेवकिन को खाना देता । ममोचकिन आदमियो का अच्छा पारखी था, और वह जानता था कि इस प्रकार लेफ्टिनेट से कोई सुविधाएँ पाने की वह कभी भी कोई भी आशा नही कर सकता है । त्रेवकिन ने यह देखे बिना कि वह मुह में क्या रख रहा है, गूज खा लिए । ममोचकिन ने अपनी इस "सरक्षणता" की परिधि मे अपने अफसर को इसीलिए शामिल कर लिया था क्योकि वह उसे बहुत चाहता था—उन्ही गुणों के लिए उसे चाहता था जिनका खुद उसमे अभाव था । कर्त्तव्य के प्रति त्रेवकिन की नितान्त तन्मयता और उसकी पूर्ण नि स्वार्थता । बडे आश्चर्य से वह देखता कि किस खरी नाप के साथ लेफ्टिनेट बोडका का राशन बाँटता है और हमेशा अपने को दूसरो से कम देता है । और दूसरो से कम आराम करता है । ममोचकिन यह समझने मे असमर्थ रहता । वह महसूस करता कि जो लेफ्टिनेट करता है वह उचित है किन्तु यह वह अच्छी तरह जानता था कि यदि वह त्रेवकिन के स्थान पर होता तो दूसरे ढग से व्यवहार करता ।

लेफ्टिनेट को "घोडे के मांस" (ममोचकिन ने गूज को यही नाम दे रक्खा था), चूजे तथा अन्य स्वादिष्ट चीजे पहुँचाने के बाद जो उसे घोडों के 'किराए' के रूप मे मिलती थी, वह उस घुडसाल ही की तरफ चला, जिसे स्काउटो ने अपने डेरे के रूप में ले रखा था । यहाँ वह डिवीजन कमांडर कर्नल सर्बीचेन्को से भिडते-भिड़ते बचा । अपनी हरी कज्जाक टोपी और भूरे जूतों के कारण वह उससे बडी

सावधानी से कतराकर निकला—नियमित यूनीफार्म पहनने मे किसी भी प्रकार के अतिक्रमण को कर्नल जरा भी बर्दाश्त नही करता था ।

कर्नल के पास ही एक लडकी खडी थी जिसके बाल सुनहले और लडको की तरह कटे हुए थे और जो सेना की सामान्य यूनीफार्म पहने थी जिस पर जूनियर सार्जेंट के बिल्ले टके हुए थे । ममोचकिन ने—जो डिवीजन की सब लडकियो के नाम गिना सकता था—उसे इसके पहले कभी नही देखा था । सर्बीचेन्को उससे बात करते हुए स्नेह के साथ मुस्करा रहा था ।

कर्नल सर्बीचेन्को औरतों के प्रति बुजुर्गाने ढंग से मृदु रहता था । दिल ही दिल मे वह सोचता था कि मोर्चा औरतो के लिए उचित स्थान नही है लेकिन और बहुतो की तरह वह उन्हे इस कारण नीचा नही देखता था। वह उनके साथ उस पुराने सिपाही की दयालुता का व्यवहार करता जो युद्ध की तकलीफो को जानता है ।

"कहो, अच्छा लगता हे यहाँ ?" उसने पूछा ।

"ठीक है—जितना ठीक कही और हो सकता है", लडकी ने शर्मीलेपन से उत्तर दिया ।

"सचमुच ? नही, मेरी जगह किसी और जगह की तरह नही है । मेरा डिवीजन प्रख्यात है.................. लाल झंडा* विजेता डिवीजन है.............कोई तुम्हें तंग तो नही करता ?"

"नहीं कामरेड कर्नल ।"

"अच्छा, अगर कोई तग करे तो सीधी मेरे पास आना । यहाँ ज्यादा लडकियाँ नही है और मै किसी को उन्हें परेशान नही करने देता.... ....और तुम ? तुम तो लड़कों के साथ नही उड़ती फिरती '?"

"मै क्यो करने लगी ?" लड़की ने हँसकर कहा ।

"हाँ, भला यह करना भी मत. ....मै सब जानता हूँ ।

---

*सोबियत सघ मे एक ऊँचा सम्मान ।

तुम कई बार कैप्टेन बाराशकिन के साथ देखी गई हो। " उसका स्वर एकाएक गभीर हो गया। "अपना चलन ठीक रखो। पुरुष बड़े कपटी होते है, वह जो कहते है वह करते नही।"

उसने बिदा ली और अपनी झोपडी की तरफ चला गया। लडकी पेड के नीचे खडी रही।

दूसरे क्षण ममोचकिन उसके सामने खडा था।

"मेरा विनम्र नमस्कार, मिस!"

उसने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"सार्जेट ममोचकिन, स्काउट!" उसने अपनी एड़ियाँ खटकाकर कहा।

लडकी हँस दी।

"मैने तुम्हे इसके पहले नही देखा।" उसने कहा। "तुम किसी दूसरी यूनिट से आई हो या आकाश से टपकी हो ?"

वह हँसी और उसने समझाया कि वह दूसरे डिवीजन से बदल कर आई है।

"क्या वहाँ स्काउटों के साथ तुम्हारी दोस्ती थी ?"

"मै पिछले हेड क्वार्टर में थी!"

वे साथ साथ चलने लगे।

लडकी हँस रही थी और ममोचकिन अपनी सर्वोत्तक रसिकता से मजाक कर रहा था और सोच रहा था कि कैसे उसे भीड भरे रास्ते से दूर ले जाय।

"मेरी बात मानों, कात्यूशा"—उसने उसका नाम तक जान लिया था—"हमेशा स्काउटो से दोस्ती रखो। औरतों के प्रिय कौन होते है ? स्काउट, और कौन ? किन्हे हमेशा वोडका और खाने के लिए बढ़िया चीजे मिलती है ? स्काउटो को। आजाद और दु:साहसी कौन होते हैं ? नि:संशय स्काउट। समझी ? क्या तुम सचमुच किसी स्काउट को नही जानती ? उसने विनोद भरी

मुस्कान से कहा । "हमारे प्रसिद्ध कैप्टेन बाराशकीन को जानती हो न ?" हूँ............"

"तुम्हे कैसे मालूम ?" उसने आश्चर्य से पूछा ।

"स्काउट सब कुछ जानते है ।"

उसने उसके साथ जंगल मे टहलने जाने से इन्कार कर दिया लेकिन फिर कभी मिलने का वायदा किया । पहले तो ममोचकिन को उसकी इन्कारी से बुरा लगा पर शीघ्र ही उसने अपने मन को सँभाल लिया, और मित्रों की तरह बिदा हुए ।

घुड़साल मे लौटकर ममोचकिन को मौन किन्तु तीव्र हलचल दिखी, जो हमेशा किसी "कार्यवाही" की अग्रदूत होती है । उसे याद आया कि आज मर्चेन्को ६ आदमियो के एक गश्ती दल की अगुवाई कर जाने वाला था ।

मर्चेन्को अभी अभी अग्रिम मोर्चे से लौटा था और कोने मे एक पुराने, जंग लगे थेशर* के पास बैठा हुआ पत्र लिख रहा था । जिन लोगों को उसके साथ जाना था वे अपने छिपावटी लबादे पहन रहे थे और हथगोले बाध रहे थे ; वे एक विशिष्ट फुर्ती से चल फिर रहे थे, और मर्चेन्को की तरफ देखते रहते थे---क्या चलने का समय आ गया है ?

मर्चेन्को अपनी पत्नी और खारखोव स्थित अपने बूढ़े पिता को लिख रहा था । उसने लिखा कि वह जिन्दा और ठीक है और वह उसने अपनी पत्नी को बतलाया कि उसको यह सोचना गलत है कि उसने यहाँ एक लडकी खोज ली है । तुह बिलकुल सही नही है, और उसने सचमुच अक्सर लिखा पर हमले के कारण डाक रोक ली गई । पत्र मामूली चीजो के बारे में था, लेकिन इस बार उसने शब्दों मे एक नया अर्थ भी दिया था, हर पंक्ति कई पंक्तियों का विचार पैदा करती जो पहले से भी महत्त्वपूर्ण होते । जब उसने

*थेशर---अनाज फटकने की एक मशीन ।

लिखना खत्म किया तो वह बड़ी उत्तेजित स्थिति में था । उसने पत्र अर्दली को दे दिया और शान्ति के साथ कहा—

"चलो भई, चलें । सब तैयार हैं ?"

उसने अपने आदमियों को कतार मे खडा किया, उनका सावधानी से निरीक्षण किया और पूछा—

"क्या सुरग लगाने वाले अभी नही आये हैं ?"

"नही आए का क्या मतलब ?" एक सुदूर कोने में भूसे के ढेर से एक तेज, कामकाजी आवाज आई । "सुरंग लगाने वाले यहाँ मौजूद है ।"

भूसे से ढंके दो सुरग लगाने वाले उठे, वे बुगोर्कोव द्वारा गश्तीदल के साथ जाने के लिए भेजे गए थे ।

"मै सीनियर हूँ ।" उसी आवाज ने कहा जो लगभग २० वर्षीय, ठिंगने और मोटे सैनिक की थी ।

"तुम्हारा नाम ?" मर्चेन्को ने उसे स्वीकृति के साथ देखते हुए कहा ।

"मैक्सीमैन्को, तुम्हारी तरह यूक्रेनवासी हूँ ।"

"किस जगह के ?" मर्चेन्को ने पूछा ।

"क्रेमनचग !"

"हाँ, मेरे घर के आस पास ही के हो.. ....

"जानते हो, कि तुम्हे क्या काम सौंपा गया है ?"

"जानता हूँ ।" मैक्सीमैंको ने फुर्ती से जवाब दिया । "जर्मन सुरगों को हटाना, जर्मन तारों को काटना, बनी जगह से तुम्हे अन्दर कर देना और कल तरुण कम्यूनिस्टों की बैठक के लिए समय से लौट आना । मैं तरुणों का संगठनकर्त्ता हूँ । यही मेरा काम है ।"

"अच्छा लडका है", मर्चेन्को हँसा । "अब हम दो चीजो में समान है, मै भी तरुणो का संगठनकर्त्ता हूँ । चलो चलें ।"

दल एक एक की कतार में सडक के किनारे किनारे अग्रिम मोर्चे के लिए रवाना हुआ जहाँ ब्रेव।केन उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

अध्याय चार

मर्चेन्को के जाने के पाँचवे दिन ममोचकिन फिर कात्या से मिला और उसे स्काउटो के गोदाम मे आमंत्रित किया, जहाँ उसने घर की खिची हुई वोड़का का एक कटल छिपा रखा था।

गोदाम के एक कोने मे उसने एक सफेद मेजपोश बिछाया, स्वादिष्ट पकवान परोसे, फिओकतिस्तोव तथा अन्य कुछ और मित्रों को साथ देने का आमंत्रण दे वह कात्या के पास भूमि पर जा बैठा।

दावत अपने पूरे जोर पर थी, कि त्रेवकिन, जिसको किसी को उन्माद न था, गोदाम मे दाखिल हुआ।

लेफ्टिनेंट के प्रवेश से जरा गड़बड़ मची, जिसके दौरान मे ममोचकिन कंटल और प्याला छिपाने मे सफल हुआ। सच बात तो यह है कि ममोचकिन को यह अच्छा नही लगता कि लड़की देखे कि वह अपने अफसर से डरता है, किन्तु त्रेवकिन की फटकार उसे इससे भी कम रुचती।

किसी अजनबी लड़की के साथ कोने में बैठे हुए दल पर लेफ्टि-नेंट ने कुतूहल भरी नजर डाली, आदमी उचक कर अटेन्शन हो गए थे, किन्तु उसने धीमे से "एट ईज" कहा और दूर कोने मे अपने बिस्तर पर जा लेटा। तीन दिन और तीन रातो से वह नहीं सोया था। मर्चेन्को दो रात पहले लौटने को था, लेकिन नीद से संघर्ष करते हुए त्रेवकिन वृथा ही खाई मे उसकी प्रतीक्षा करता रहा। अजीब और घबड़ाने वाली चीज यह थी कि दोनों सुरंग लगाने वाले भी नही लौटे थे, हालांकि जैसे ही गश्ती दल सुरंग बिछे क्षेत्र मे पार होता, उन्हें तुरन्त लौट आना चाहिए था। पूरा दल शून्य अन्धकार में

घुल गया था, और लापता हो गया था, और वर्षा ने उनके निशान साफ कर दिए थे ।

त्रेवकिन कम्बल पर लेटा और अशान्त नींद ने उसे धर दबाया।

जरा ठंडे पड़े स्काउटों ने एक एक प्याला और चढ़ाया ।

"तुम्हारा कमांडर यही है ?" कात्या ने धीरे से पूछा । "कितना शान्त है... ...और कितना तरुण ?"

त्रेवकिन ने नींद में करवट ली और अचानक जोर से बोला—

"अजीब आदमी हो । तुम्हें लौटने में इतनी देर क्यों लगी ? बूटे स्मट्स ? और सुरंग वाले भी नहीं लौटे हैं । हम लोग चेकोवस्की के स्वर सुन रहे थे और तुम गायब रहे । अजीब आदमी हो ।"

वह धीमी सामान्य आवाज में बोला—नींद में बर्राने वाले व्यक्ति की तरह कतई नहीं । बड़ी विचित्र चीज थी ।
व्यग्रता सी लगी और ममोचकिन को सफेद मेजपोश के पास अकेला छोड़कर वे गोदाम में तितर बितर हो गए ।

कात्या दबे पैर त्रेवकिन की ओर चली और उसके पास जा खड़ी हुई । उसकी आँखें आधी खुली थीं, सोते हुए बच्चे के समान । धुंधले कोट के बटन खुले हुए थे और कटु वेदना का भाव उसके चेहरे पर अंकित था ।

"कितना सुन्दर ?" उसने धीमे से कहा ।

"उसे जगाओ मत ।" ममोचकिन ने रुखाई से कहा । लेकिन उसने बुरा नहीं माना क्योंकि उसके पीछे उसके सोने वाले व्यक्ति के प्रति उसी कोमलता का आभास हुआ जो स्वयं उसके दिल में भी थी । "हमारा लेफ्टिनेंट चिन्तित है", ममोचकिन ने सूक्ष्मता से समझाया ।

हाँ, दावत पूरी तरह से बिगड़ गई थी—सबने यह महसूस किया ।

कात्या एक अजीब उन्नत भावना से और गंभीर उदासी के साथ गोदाम से निकली। बसन्ती जगल के बीच चलते-चलते सहसा आश्चर्य और व्यग्रता के साथ उसे अपनी भावना का आभास हुआ। किस चीज ने उसका दिल यो वेध दिया, उसको इतनी कोमल और ऊपर उठाने वाली पीडा से भर दिया : और फिर उसने लेफ्टि-नेंट का बाल-सुलभ चेहरा देखा। शायद उसमे उसने अपने आप का कोई अंश देख पाया था—उस पीडा से कुछ मिलता-जुलता जो उसके अन्तरतम में बैठा हुआ था, एक कम उम्र शहराती की ताजी पीडा, जिसे मोर्चे पर जीवन की कटुतम कठोरता का सामना पड़ा था।

कात्या स्काउटों के गोदाम मे अक्सर जाने लगी। ममोचकिन ने जल्दी ही उसकी भावना को भांप लिया, तथा औरों ने भी। ममोचकिन को खुशी भी हुई। रोजमर्रा के सब कामों मे अपने कोर लेफ्टनेंट को रक्षक मानकर उसने तय किया, कि कात्या के साथ उसका थोड़ा उड़ना उद्विग्न विचारों से उसका ध्यान बटाएगा। क्योंकि मर्चेन्को और उसके गश्ती दल की निश्चित मृत्यु के बाद से लेफ्टिनेंट बहुत उदास रहता था।

कात्या को गोदाम में आमंत्रित करने के लिए स्काउट एक दूसरे से होड़ लेने लगे। वे उसे लेफ्टिनेंट के बारे मे सब समाचार देते, संकेत भेजने वाली टुकडी तक उसे यह समाचार देने दौड़े जाते कि "हमारा लेफ्टिनेंट बाहरी चौकियों से वापिस आ गया है"—मतलब यह कि कात्या और त्रेवकिन को निकट लाने के लिए वे जो कुछ भी कर सकते थे, वह सब उन्होने किया। एकमात्र व्यक्ति जिसने यह षडयन्त्र नही समझा, वह था स्वयं त्रेवकिन।

एक दिन गोदाम में लौटने पर उसने देखा कि उसके कोने को मोमजामे के एक पर्दे द्वारा अलग कर दिया गया है, और उसके पीछे भूसे पर बिछे कम्बल की जगह असली चारपाई ला रखी गई है; चारपाई के पास ही एक छोटी सी मेज है जिस पर सफेद फूलों

ने भरा एक फूलदान रखा है ।

"यह सब क्या है ?" उसने पूछा ।

"क्या ?" ब्रेजनीकोव ने भोलेपन से उत्तर दिया । "वह कात्या, रेडियो आपरेटर ने किया है, जो आपकी देखरेख करती है, कामरेड लेफ्टिनेंट !"

त्रेवकिन का चेहरा लाल हो गया । "तुम बाहरी लोगो को टुकडी के निवास स्थान मे क्यो दाखिल होने देते हो ?"

ब्रेजनीकोव लज्जित हो गया और कुछ नही बोला । जब ममोचकिन ने यह सुना तो उसने हाथ ऊपर फटकारते हुए कहा—

"क्या आदमी है ! सिवाय जर्मनो के और कुछ सोच ही नही सकता । हमेशा उनकी रक्षा पक्ति के नक्शे खीचते रहना नक्शो पर गडे रहना, और पूरे के पूरे दिन अग्रिम मोर्चे पर बिता, देना.. "

जहाँ तक कात्या का प्रश्न है, पहले तो वह भी लेफ्टिनेंट की अंतर्लीनता और उसके तरुणाई भरे शर्मीलेपन से निरुत्साह हुई, वह ऐसे व्यवहार की अभ्यस्थ न थी । वह हर जगह स्वागत पाने की आदी थी । हालाँकि वह जानती थी कि उसकी सहज सफलता का रहस्य उसकी स्वय की किसी मोहिनी मे निहित नही है, बल्कि उसका कारण सीधा यही है कि यहाँ आदमी बहुत है और लडकियाँ बहुत थोड़ी ।

फिर अचानक उसे दोहरी खुशी हुई । उसका प्रियतम कोई मामूली आदमी न था ; नही, वह स्वाभिमानी, कडा और पावन था । और उसे वैसा ही होना भी चाहिए था । उसकी उपस्थिति मे एक अजीब लज्जा उसे पकड लेती, और उस लज्जा से वह स्वय भी चकित रह जाती । क्या यह वही लडकी है जो अपने आपको हमेशा उच्छृ-खल समझती आई है ? युद्ध के जीवन की हडबड मे चोरी से लिए

गए चुम्बनों और आलिंगनों—जो तेजी से गुजरती किसी भावना विशेष के प्रतीक होते या केवल ऊब के कारण लिए गए—को ही वह जीवन कहती थी ।

एक हीन और सुदूर अतीत क रूप मे इन सबका स्मरण उसे ाता था ।

वह रोज गोदाम में फूल और सुन्दर गुलदस्ते लेकर आती । लेकिन फूलो मे अधिक महत्त्व की जो चीज वह साथ मे लाती, वह थी मधुर नारीत्व की सुगन्ध, सैनिकों के एकाकी हृदय जिसके भूखे थे । और उन्होंने निश्चय ही लडकी के प्रति अपने अफसर की उदासीनता को नापसंद किया, हालाँकि साथ ही उन्हे इस बात का गर्व भी था कि वह इतना अप्राप्य है ।

एक दिन डिवीजन की जाँच के लिए आए हुए, सेना के टोह लेने के विभाग के अध्यक्ष कर्नल समियोकिन ने गोदाम मे उसी समय प्रवेश किया जब कात्या एक नीले फूलदान मे ताजे फूल सजा रही थी । वह देखने आया था कि स्काउटो का क्या हाल-चाल है । किन्तु वहाँ उसे रसोइये, अर्दली और एक लड़की के अतिरिक्त कोई नही मिला ।

"तुम कौन हो ?" उसने पूछा ।

"जूनियर सार्जेंट सिमाकोवा, रेडियो आपरेटर", उसने कहा ।

"ओह ! मै तो समझा था कि तुम फूलवाली हो", गुस्सैल कर्नल ने कहा और गोदाम से चला गया ।

उसके बाद उसने डिवीजन कमांडर से काफी लम्बी बातचीत की । उन्होंने विनम्रतापूर्वक किन्तु स्पष्टवादिता से चर्चा की ।

"तुम्हे इस हिस्से मे दुश्मन के बारे में तिनका भर भी जानकारी नही", कर्नल सेमियोकिन ने डिवीजन कमाडर पर आरोप लगाया । "क्या तुम कह सकते हो कि तुम्हे उसकी शक्ति और योजनाओ के बारे में स्पष्ट ज्ञान है ?"

बडे संयम के साथ कर्नल सर्बीचेन्को ने उसे हँसकर उडा देने की कोशिश की।

"मै जानू भी तो कैसे ?" कभी कभी तो एक डिवीजन कमांडर को यह भी पता नही होता कि उसकी सेनाओ मे क्या हो रहा है। वह कैसे जाने कि दुश्मन क्या कर रहा है ? मैंने स्काउटो को गश्त पर भेजा पर वे लौटे ही नही। नौ आदमी तुम्हारे लिए कोई मतलब नही रखते। पूरी सेनाओ से तुम्हारा साबका पडता है। किन्तु मै छोटा आदमी हूँ और यह नौ हताहत बडी हानि हैं। एक बहुत ही बड़ी हानि। लडाई मे मै काफी स्काउट खो चुका हूँ।"

"यह सही है। लेकिन देखो, तुम्हारे स्काउटो मे हो क्या रहा है ?" कर्नल मिमियोर्किन ने ताना कसा। "मै उनके गोदाम मे गया, कोई भी मौजूद नही। अर्दली तक को पता नही कि वे कहा है। हाँ, एक लडकी वहाँ जरूर थी, जो फूल सजा रही थी। कितना कवितामय ! लेकिन तुम्हारे पड़ताल करने वाले अफसर ने अभी हमे बतलाया कि उसे तुम्हारे स्काउटो के विषय मे एक गभीर शिकायत मिली है। हाँ, कामरेड कर्नल, तुम्हें इसके बारे में कुछ पता नही, पर मुझे है। शिकायत किसी गाँव से आई है। स्काउटो के खराब काम का यही कारण है।"

कर्नल सर्बीचेन्को ने पडताल अफसर को पेश करने की आज्ञा दी।

कैप्टेन येरिकन शीघ्र उपस्थित हुआ। वह एक पिद्दी और शान्त व्यक्ति था जिसके चेहरे पर चेचक के हल्के दाग थे और सिर गंजा और विशाल तथा गुम्बजाकार था। उसने पास के गाँव की इस शिकायत का विस्तृत ब्योरा दिया कि स्काउटो ने मनमाने तौर से बारह घोडे जब्त किए जिनमें केवल १० ही उन्होंने वापस किए है। शिकायत के साथ एक रसीद नत्थी थी, जिसके हस्ताक्षर अस्पष्ट थे।

"तुम्हे कैसे पता कि ये हमारे स्काउट थे ?"

पड़ताल अफसर डिवीजन कमांडर की धमकी भरी भाव भगिमा से ज़रा भी नही डरा ।

"यह अभी निःसंशयात्मक रूप से निश्चित नही हो सका है", उसने कहा ।

"तो निश्चय करके फिर रिपोर्ट करो । तुम जा सकते हो।"

पड़ताल अफसर बाहर चला गया, और डिवीजन कमांडर ने कर्नल सैमियोंकिन से शिथिल स्वर मे कहा--

"अच्छा, हम दुश्मन के भीतर एक गश्ती दल भेज देंगे । लेकिन तुम कोशिश कर हमे खाली जगहे भरने के लिए और स्काउट भेजो।"

जब बातचीत खत्म हुई तो कर्नल सर्बाचिन्को भी औरो की भाति झापड़ा से बाहर हो गया ।

"मै जल्दी से लौटूगा", उसने अर्दली से कहा, जो दरवाजे पर उचक कर अटेन्शन हो गया था ।

वह अलसाए ढंग से चलने वाली एक पवन-चक्की की ओर चला, और इधर-उधर फैले हुए गोदामो में से एक के पास पहुँचकर दरवाजे पर खड़े अर्दली से पूछा--

"स्काउट ?"

"जी हाँ, कामरेड कर्नल", आदमी ने उत्तर दिया और गोदाम के अन्धकार मे मुडकर चिल्लाया ।

"अटेन्शन ।"

अन्दर थोडी खडबड हुई, कमांडर ने आँख गडाकर देखा । धुधली रोशनी में आठ स्काउट अटेन्शन खड़े थे । एक कोना मोमजामे के पर्दे द्वारा अलग किया हुआ था । कर्नल चुपचाप इस कोने मे पहुंचा, पर्दा उठाया, और कात्या को भी अटेन्शन खडे पाया । छोटी मेज पर एक नीला फूलदान रखा था, जिसके इधर उधर किताबें और

नोटबुके सजी थी ।

कमाडर की क्रोध भरी निगाह जरा मुलायम पडी । उसने कात्या की ओर भेदक दृष्टि से देखा ।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो ?" फिर वह ड्यूटी पर तैनात सार्जेंट की ओर मुडा, जो रिपोर्ट करने के लिए भागा आया था । "तुम्हारा कमाडर कहाँ है ?"

"लेफ्टिनेंट अगली पक्ति पर है ।"

"लौटने पर उसे मेरे पास भेजना ।"

वह दरवाजे के पास पहुँचा और तब मुडकर देखने लगा । "तुम यही रुक रही हो, कात्या, या मेरे साथ आ रही हो ?"

"मै तुम्हारे साथ आ रही हूँ ।"

दोनो साथ चले ।

"तुम इतनी उलझन मे क्यो हो ?" कर्नल ने पूछा । इसमे कोई बुराई नही है, अेवकिन अच्छा लडका है और बढिया स्काउट है ।"

उसने कोई उत्तर नही दिया ।

"क्या बात है ? प्रेम हो गया है ? सुन्दर । लेकिन केप्टेन बाराशकिन का क्या हुआ ? निकाल फेका ?"

"वह कुछ नही था ", उसने कहा । "उसमे कोई गभीरता न थी, यो ही अर्थहीन.... ...."

कर्नल कुछ बडबडाया, फिर लड़की की झुकी हुई पलको की ओर भेदक दृष्टि से देखते हुए कहा--

"और अेवकिन ? दावे के साथ कहता हूँ, उसे खुशी हुई होगी ? सुन्दर लडकी और फूल घाते मे. .... "

उसने कुछ नही कहा और वह समझ गया ।

"तुम्हारा मतलब है कि वह तुम्हे प्यार नही करता ?"

अनादृत प्रेम की युगों प्राचीन दुःख गाथा ने, जो जूनियर सार्जेंट के फीते लगाए इस नौजवान लड़की के रूप मे उसके सामने खडी

थी, उसके हृदय को कुरेद दिया। यहाँ युद्ध की भट्टी में जवानीभरा प्रेम मगर के मुंह में फँसी चिड़िया की तरह फड़फड़ा रहा था। कर्नल मुस्कराया।

उनकी मुलाकात सेना की सहायक डाक्टर उलीविशेवा से हो गई और कर्नल ने उसे तथा कात्या को एक कप चाय के लिए आमंत्रित किया।

कर्नल की झोपड़ी में डाक्टर और कात्या अर्दली की सहायता से चाय बनाने में लग गईं, और जब सामोवार खौलने लगा गया तो वे दुनियां की सब चीजों पर प्रसन्नता से गप करते ए मेज पर जा बैठे।

शीघ्र ही त्रेवकिन उपस्थित हुआ।

"बैठो" कर्नल ने कहा।

कात्या घबरा रही थी कि शायद कर्नल उसे त्रेवकिन के बारे में चिढायेगा, लेकिन वह उस विषय को जबान तक पर नहीं लाया। वह कुछ घोडो आदि के बारे मे बात करता रहा। उसने लाज के साथ लेफ्टिनेन्ट और उसके गम्भीर तरुण चेहरे की ओर देखा, और कर्नल को दिये गये उसके स्पष्ट, कामकाजी जबाबों को सुना हालाँकि वह उनका अर्थ समझने में असमर्थ रही।

अवर्णनीय उदासी की एक लहर उसके ऊपर से गुजर गई।

"मै उसके लिए किस काम की हो सकती हूं?" उसने सोचा। "वह इतना चतुर और गम्भीर है, उसकी बहन वायलिन बजाने वाली है, और वह एक वैज्ञानिक बनेगा। और मै? एक मामूली लड़की मात्र—अन्य हजारो की तरह।"

त्रेवकिन को अपने बारे में कात्या की भावनाओं का शक तक नहीं था। वह उससे परेशान होता था, चक्कर में पड जाता था। गोदाम में उसका अनपेक्षित आना-जाना, उसकी आराम के लिये अयाचित चिन्ता—यह सब चीजें उसे एक मूर्खता, दखलअंदाजी और बेहूदापन लगती थी। उसे अपने स्काउटों के सामने बड़ा अट-पटा

लगता। जब वह गोदाम में आती तो बेमतलब भरी निगाहें एक दूसरे पर डालते और उन दोनों को अकेला छोड जाने की जाहिर कोशिशें करते।

उसे अपने डिवीजन कमाडर के कमरे मे—और वह भी सामोवर के निकट—बैठा देख कर बडा आश्चर्य हुआ था। और जब कर्नल ने घोडो के विषय मे बात करना शुरू किया तो, त्रेवकिन को पहला ख्याल यह हुआ कि कात्या ने यह बात स्काउटों मे मालूम की है और वह अब उसके लिए सकट पैदा कर रही है।

उसने संक्षेप मे बतलाया कि घटना कैसे घटी। अचानक कर्नल को प्रगाण के वे दिन याद आ गये—अनंत पथ, छुटपुट और तीखे सघर्ष, और मार्च महीने का वह तीसरा पहर जब वह कीचड भरी सडक पर खडा हुआ स्काउटों को व्यग्य के साथ फटकार रहा था। और एक पल के लिये कार्पोरल सर्बीचेन्को, पहले विश्व युद्ध के पुराने स्काउट, ने कर्नल सर्बीचेन्को की सिकुड़ी हुई भूरी-हरी आंखो मे अनुमोदनपूर्वक बाहर झांका।

"ठीक है, त्रेवकिन।"

फिर कर्नल ने पूछा :

"तुमने वास्तव मे सब घोडे लौटा दिये थे न ?"

"निश्चय" त्रेवकिन ने उत्तर दिया।

दरवाजे पर कराघात हुआ और केप्टिन बरागकिन झोपडी मे दाखिल हुआ।

"क्या चाहते हो ?" सर्बीचेन्को ने अप्रसन्नता से पूछा।

"आपने मुझे बुलाया था ना, कामरेड कर्नल ?"

"मैंने तुम्हारे लिए तीन घण्टे पहले आदमी भेजा था। क्या सेमियोकिन ने तुमसे कहा ?"

"जी हाँ, कामरेड कर्नल।"

"तो ?"

"हम एक गश्ती दल दुश्मन के आन्तरिक प्रदेश में भेजेंगे ।"

"उसका नेतृत्व कौन करेगा ?"

"यह, त्रेवकिन" बराशकिन ने दुर्भावना को छुपाकर उत्तर दिया ।

लेकिन अपने आसामी को पहचानने मे उसने भूल की थी । त्रेवकिन ने पलक भी नही झपकाई । उलीबिशेवा ने चुपचाप ग्लासो को भर दिया—उसे कुछ पता नही था कि यह सब क्या हो रहा है । और कात्या को कल्पना तक न थी कि यह शब्द उसके प्रेम के भाग्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखते थे ।

एकमात्र व्यक्ति जिसने केप्टन की आखो की भावना को पढ पाया वह था डिवीजन कमाडर, लेकिन उससे असहमत होने का उसके पास कोई कारण न था । इसमे कोई शक नही कि इस आसामान्य रूप से कठिन कार्यवाही का भार संभालने के लिए त्रेवकिन सबसे उपयुक्त व्यक्ति था ।

"बहुत ठीक" कमाडर ने कहा और बराशकिन को इजाजत दी ।

त्रेवकिन भी ज्यादा देर नही रूका ।

"अच्छा, तो जाओ" जब वह उठने लगा तो कर्नल ने कहा । "उचित तैयारी करो, काम कठिन है ।"

"जी, कामरेड कर्नल," त्रेवकिन ने कहा । वह झोपड़ी से बाहर चला ।

स्काउट की दूर जाती पद-चाप को कर्नल सुनता रहा और फिर उत्साहहीन स्वर मे बोला—

"बढ़िया आदमी है ।"

त्रेवकिन के जाने के बाद कात्या अधीर हो उठी । उसने भी नमस्कार कहा और बिदा ली । चाँदनी भरी गरम रात थी और जंगल गहरी शान्ति में लिपटा हुआ था जिसे केवल सुदूर विस्फोट या किसी

एकाकी मोटर ट्रक की खड़–खड़ भग करती थी ।

कात्या प्रसन्न थी । उसे लगा कि अेवकिन ने हमेशा से ज्यादा अनुराग के साथ उसकी ओर देखा था । और उसने बड़ी अभिलाषा के साथ सोचा कि सर्वशक्तिमान डिवीजन कमाडर, जो उसके प्रति हमेशा इतना दयालु रहा है अेविकन को यह विश्वास दिलवा सकेगा कि वास्तव मे वह ऐसी खराब लडकी नही है और उसमे आदर के योग्य गुण है । और अपने प्रियतम को खोजती हुई, पुराने शब्दो को, जो 'गीतों के गीत' के समान थे, हालाकि उसने उन्हे कभी पढ़ा या सुना नहीं था, गुनगुनाती हुई वह चाँदनी से भीगी रात मे विचरती रही ।

अध्याय पांच

"बधाई, कामरेड लेफ्टिनेन्ट, यह पत्र मै ईवान यमीलीविच अनीकानोव, तुम्हारा स्काउट, सार्जेन्ट और पहली टुकड़ी का नेता लिख रहा हू । आपको विदित हो कि मैं मजे में हूँ और अपने हृदय के अन्तरतम से आपके लिए भी यही कामना करता हू । अस्पताल मे उन्होंने वह गोली निकाल दी जो मेरे पैर के मांस मे थी । अस्पताल से मैं एक रिजर्व रेजीमेन्ट मे भेज दिया गया । शुरू शुरू मे वहा ज्यादा अच्छा नही लगा क्योंकि उन्होने वहा मोर्चे से भी कही ... को दिया, और मै काफी खाना पसन्द करता हू और मोर्च की पंक्ति मे मिलने वाले राशनो का आदी हू । और सारे दिन मुझे कबायद करना और फिर शुरू से सारे कायदों का अध्ययन करना होता था, और हमला करना तथा "बढ़े चलो" चिल्लाना पडता था—और हाँ, वहा न तो जर्मन ही थे और न गोली चलाने के लिये कारतूस ही । एक और बात भी । मेरा वाल्टर रिवाल्वर उन्होंने मुझसे ले लिया—यह रिवाल्वर मैंने उस जर्मन कैप्टेन से पाया था, आपको याद होगा, वह जर्मन आख पर काली पट्टी बाधे था । मैं शिकायत करने बटालियन कमाडर के पास गया लेकिन उसने कहा कि कायदे के अनुसार एक सार्जेन्ट को रिवाल्वर नही रखना चाहिये । और जब मैंने कहा कि मै सामान्य सार्जेन्ट नही हू बल्कि एक स्काउट हू और अब तक ऐसे कम से कम दो सौ रिवाल्वरों से काम ले चुका हू तो भी उसने मेरी बात नही मानी । फिर मै एक सहायक खत पर स्थानान्तरित कर दिया गया और यहां मैं एक समृद्ध सामूहिक किसान की तरह रह रहा हू । सब चीजें मुझे मिलती है—

खट्टी मलाई, मक्खन और सब तरह की तरकारियां । विशेषतः इसलिये भी कि मैं सचालक हूँ, क्योंकि पहले मै सामूहिक खेत का अध्यक्ष था । इस प्रकार हम अपना सारा समय जुताई और बुवाई मे बिताते हैं । और शाम को मैं बढ़िया बयालू करता हू, बाद मे दूध चढाता और मुलायम बिस्तर पर लेट जाता हू । और जिस घर मे मैं रहता हूँ उस स्त्री का पति युद्ध के पहले वर्ष मे मारा गया था और वह हमेशा मदद को तैयार रहती है । और कामरेड लेफ्टि-नेन्ट मैं तुम्हारे और दल के अन्य सब लोगों के बारे मे सोचता रहता हू, और अपनी सब कार्यवाहियो का स्मरण करता हूँ । और खास कर यह कि कैसे तुम कष्ट सह रहे हो और हमारे महान् देश के लिये लड़ते हुए अपना खून बहा रहे हो—इससे मेरा दिल बह उठता है । और कामरेड लेफ्टिनेन्ट क्या तुम दया कर कर्नल सर्बीचेन्को से मेरे बारे मे बात करोगे । शायद वह अर्जी भेजने पर राजी हो जाय और यह लोग मुझे तुम्हारे पास वापिस लौट आने दे । मुझसे यहा तुम्हारे बिना नही रहा जाता । मुझे इस बात से शर्म आती है कि मै तुम्हारे साथ युद्ध के खात्मे तक नही रहा और यहा एक समृद्ध सामूहिक सदस्य की तरह रह रहा हूँ और मानो तुम मुझे फासिस्टों से बचा रहे हो । तुम्हे तथा समस्त गौरवमय दल को बधाई के साथ,

ईवान वसीलीविच अनीकानोव"

पत्र को कितनी ही बार पढा और त्रेवकिन विचलित हो उठा और वह मुस्कराया । अनीकानोव को साफ देख सकता था मानो वह उसके पास ही खडा हो और उसने सोचा कि यदि अनीकानोव इस समय उसके पास होता तो कितना अच्छा रहता । कुछ कुछ तिरस्कार के साथ उसने अपने सोते हुए आदमियो की ओर देखा और मन ही मन उनकी तुलना अनुपस्थित अनीकानोव के साथ करने लगा ।

"न, न" त्रेवकिन ने सोचा । कोई तुलना नही । इनमे

उसका ऐसा निश्चल साहस और उसकी धीरजता, और उसका स्वच्छ दिमाग नही है। मै हमेशा अनीकानोव पर निर्भर रह सकता था। "घबराहट" शब्द तो वह जानता ही नही था। ममोच्किन बहादुर है पर उसमे यथेष्ट सहज बुद्धि नही और वह स्वार्थी है। वायकोव मे विवेक है पर जरूरत से ज्यादा। ऐसे मौके भी आते है जब शान्त विवेक कायरता से कम नही होता। ब्रेजनीकोव अपने पैरो पर काफी दृढता से खडा नहीं हो सकता, हालाँकि उसमे कुछ अच्छाइयाँ भी है। गोलूब, सेमियोनोव अन्य लोग ---वे अभी स्काउट ही नही हैं। मेर्चेन्को ---अमूल्य व्यक्ति था, लेकिन लगता है कि वह मार डाला जा चुका है और हमारे पास से हमेशा के लिए चला गया है।"

इन कडवे विचारो से तिलमिलाकर ---जो अनीकानोव के पत्र मे पैदा हुई भावना के रग से रंगे होने के कारण उसके स्काउटों के प्रति पूरा-पूरा न्याय करने वाले नही थे---त्रेवकिन गोदाम से शीतल प्रभात में निकल पडा।

वह उस ऊंचे करारे की तरफ बढा जिसे उसने स्काउटो के अभ्यास के लिए चुना था।

यह जगह युद्ध पंक्ति के भूमि-प्रदेशों की अच्छी खासी प्रति-लिपि थी। कगारा चौडी नदी से कटा हुआ था और हरियाली में बदलते वृक्ष उस के ऊपर से लटके हुए थे। स्काउटों द्वारा निरीक्षण के लिए खोदी गई उथली खाई और काँटेदार तार की दो पंक्तियाँ दुश्मन की अगली रेखा की सूचक थीं।

हर रात त्रेवेकिन अपने स्काउटों को इस "युद्ध-स्थल" पर लाता था। अपनी चरित्रगत दृढ़ता के साथ वह अपने आदमियों से नदी के बर्फीले पानी को पार करवाता, तार कटवाता और सुरंग लगाने वालों के लम्बे अनुसन्धान यन्त्रो से अविद्यमान सुरंगों के लिए परीक्षा करवाता और तब खाई के पार कूदने को कहता। कल उसे एक नया खेल सूझा। उसने कुछ स्काउटों को खाई में बैठाया और फिर

शेष मे जितने चुपचाप हो सके रेंगकर उनके पास पहुँचने के लिए कहा जिससे लोग निःशब्द आगे बढ़ने के आदी हो जाये। वह स्वय खाई मे बैठा हुआ रात की आवाजों को सुनता रहा। लेकिन उसके विचार वहाँ नही थे, वे थे दुश्मन की वास्तविक चौकियो पर, जो इजीनियरी साधनो द्वारा मजबूती से किलेबन्द थी और जहाँ से उसे जल्दी ही गुजरना पडेगा।

पल्टन को नये आदमी मिल गये थे—दस स्काउट आये थे जिसके कारण आगामी कार्यवाही में उसके साथ जाने के लिए चुने गये दल को विशेष अभ्यास कराने के साथ ही उसे नवागतुको को भी शिक्षित करना पडा। और फिर उसे दुश्मन के अग्रिम सिरो पर रोज चौकसी रखना पडती थी और उसकी कार्य पद्धति तथा व्यवहार का अध्ययन करना पडता था।

इस अविराम कार्याधिक्य ने धीरे धीरे उसको बहुत हाजचिड़चिडा बना दिया। पहले वह स्काउटो के छोटे छोटे अपराधो की ओर आखे मूंद लिया करता था। पर अब मामूली-सी गलती के लिये भी उन्हें आडे हाथो लेने लगा। ममोचकिन सबमें पहले पकड मे आया। त्रेवकिन ने कठोरता से पूछा कि वह इतना सब भोजन कहाँ से पाता है। ममोचकिन ने बुतबुता कर किसानों से मिलने वाली भेटो के विषय मे कुछ कहा लेकिन त्रेवकिन ने उसे तीन दिन के लिए पहरे में बैठा दिया।

"किसानों को तुमसे कुछ तो राहत मिले, तीन ही दिन के लिये सही", उसने कहा।

जहाँ तक कात्या का प्रश्न है त्रेवकिन ने उससे बडे विनम्र शब्दो मे किन्तु दृढता के साथ फिलहाल के लिए— उसके शब्द यही थे : फिलहाल के लिये— गोदाम में आना बन्द कर देने की प्रार्थना की। यह सच है कि उसकी भयभीत आँखो को देखकर उसे बड़ा अटपटा-सा लगा;

वह अपने शब्दो को वापिस लौटाने वाला ही था कि उसने अपने आप को रोका ।

लेकिन जिस चीज ने उसे सबसे अधिक नाराज किया वह था कजान प्रदेश के रहने वाले, लम्बे और सुन्दर फिग्रोकतिस्तोव का अप्रतिम मामला ।

उस दिन सबेरे पानी बरस रहा था, और त्रेवकिन ने स्काउटों को विश्राम देने का फैसला किया । गोदाम से निकल कर वह बराश-किन की खन्दक की ओर चला, जहाँ वह दुभाषिये लेविन से जर्मन भाषा सीखा करता था । चक्की के पास झाडियों में उसने लम्बे और बलिष्ठ फिग्रोकतिस्तोव को बरसते पानी में कमर तक नगे घास मे लेटे देखा । त्रेवकिन ने चकित होकर पूछा कि वह वहा क्या कर रहा है । फिग्रोकतिस्तोव उछल कर खडा हो गया और सिटपिटाकर बोला

"मै ठण्डे पानी में नहाने का आदी हूँ, कामरेड लेफ्टिनेन्ट । घर पर भी मैं यही करता था ।"

लेकिन उस रात जब सैनिक निःशब्द पेट के बल रेंगने का अभ्यास कर रहे थे तो फिग्रोकतिस्तोव जोर से खाँसा । पहले तो त्रेवकिन ने कोई ध्यान नही दिया, लेकिन जब फिग्रोकतिस्तोव ने दूसरी बार खाँसना शुरू किया तो वह समझ गया । फिग्रोकति-स्तोव ने जानबूझ कर सर्दी कर ली थी । वह पुराने स्काउटों की बातों से जानता ही था कि खासने वाले व्यक्ति को गश्त पर नहीं ले जाया जाता है क्योंकि उसकी खाँसी पूरे दल को पकडवा दे सकती है ।

अपने पूरे संक्षिप्त जीवन में इसके पहले कभी भी त्रेवकिन को इतना तेज क्रोध नही आया था । बडे कठिन प्रयास के बाद ही वह इस लम्बे और सुन्दर बुजदिल को उसी समय चाँदनी में अन्य चकित स्काउटों के सामने गोली से उडा देने के निर्णय को रोक पाया ।

"हूँ, तो इसीलिये तुम ठण्डे पानी से नहाते हो, नीच कायर।"

दूसरे ही दिन फिओकतिस्तोव पल्टन से निकाल दिया गया।

जब इस घटना की उसे याद आती वह अपने को घृणा की भावना से दूर न कर पाता।

सूरज उगा, अग्रिम पक्ति पर जाने का समय आ गया था। अपने साथ दो स्काउट लेकर, त्रेवकिन सामान्य रास्ते से नदी की ओर चला।

अग्रिम मोर्चे के वे जितने निकट पहुँचते जा रहे थे वातावरण खिचाव से उतना ही भारी और भरा होता जा रहा था, मानों वह धरती की चीज न होकर किसी अजनबी और अतुलनीय रूप से बड़े ग्रह की वस्तु हो। मशीनगन की गोलबाजी की भारी चमक ....बमो का कान फोड़ने वाला विस्फोट....और फिर अचानक मौत से सपृक्त डरावना मौन . . । बमो मे चिथे हुए पञ्जा का पार करते हुए, तोपो के जमाव को पार करते हुए, स्काउट अपनी हरी वर्दी मे एक एक की कतार में युद्ध के नजदीक बढते जा रहे थे।

दूसरी बटालियन की खदकों में त्रेवकिन को ममोचकिन मिला। तीन दिन की सजा के बाद त्रेवकिन ने उसे दुश्मन पर नजर-रखने की चौकी पर स्थाई तौर से भेज दिया था जिसमें वह "दु-श्मन के निकटतम और मुर्गी के बच्चों से दूरतम रहे।" अपनी एड़ियो को खडाके से मिलाकर ममोचकिन ने दुश्मन की चौकियो का नक्शा और पिछले चौबीस घन्टो मे दुश्मन की गति विधि के संक्षिप्त विवरण उसके हवाले किये। मशीनगन के एक घोसले से त्रेवकिन ने टेलीस्टेर-स्कोप द्वारा दुश्मन की चौकियो की ओर देखा। बटालियन कमाडर कैप्टेन मुस्ताकोव और तोपखाने के कैप्टेन गुरेविच भी अक्सर उससे यहाँ आ मिलते थे। गश्ती दल की आगामी यात्रा के विषय मे उन्हे पता था, और त्रेवकिन को उनकी आँखो मे क्षमा-याचना के

भाव पढकर गुस्सा आता था मानों वे कह रहे हों—"तो तुमको वहाँ जाना पडेगा, जब कि हम लोग यहाँ मजबूत छतों वाली खन्दको मे बैठे होंगे।"

उनकी विनयशीलता, उसको मदद पहुँचाने की उनकी सतत् उत्कंठा उसके धैर्य को तोड़े डालती थी। ऐसा लगता था कि मानों उनके विचार उसे अभी से फाँसी की सजा दे रहे है। और उसकी सारी आत्मा इन विचारों के विरोध म उठ खडी होती थी। टेलीस्टेरस्कोप के द्वारा एक आँख सिकोड़ कर देखते हुए वह हँसा और उसने मन ही मन कहा।

"देखते रहो मेरे दोस्तों, मै तुमसे ज्यादा जियूगा।"

इसका यह अर्थ नही कि वह उनका बुरा चाहता था। बल्कि वह उन दोनों को ही बहुत पसंद करता था। खूबसूरत नौजवान मुंस्तांकीव डिवीजन का सर्वश्रेष्ठ बटालियन कमाडर था। और जहाँ तक गुरेचिव का प्रश्न है, त्रेवकिन हर परिस्थिति में उसकी विनम्रता, और नियमितता, और उसकी गणित संबंधी असामान्य प्रतिभा से विशेषत: प्रभावित था। उसका तोपखाना आश्चर्यजनक कुशलता से गोलदाजी करता था, और उससे जर्मनों के दिल दहल उठते थे। गुरेविच सबेरे से लेकर शाम तक खाई में डटा रहता, अविचल घृणा के साथ जर्मनों की टोह लेता रहता, और उसके पास हमेशा त्रेवकिन के के लिए अमूल्य जानकारी रहती थी। गुरेविच मे त्रेचकिन अपने समान ही कर्त्तव्य क प्रति प्रमादपूर्ण निष्ठा पाता था। अपने फायदे की बात न सोचकर केवल हाथ में लिए काम के बारे में सोचना—त्रेवकिन को शुरू से यही शिक्षा मिली थी। गुरेविच भी इसी सप्र-दाय का था। वे एक दूसरे के बारे में संबधियों की भाति बात करते, और वे सचमुच एक ही वश के थे भी—हमारे देश के उन इंसानो के वश के, जो अपने उद्देश्य में विश्वास करते है और उसके लिए अपने प्राण देने को तत्पर रहते हैं।

त्रेवकिन बडे गौर से जर्मन खाइयो और उनके पहले कटीले तार की जालियों की ओर देखता रहा—और उसने धरती के मामूली से मामूली चढाव-उतार, दुश्मन की मशीनगन, गोलदाजी की दिशा और आवागमन के लिए बनी खाइयो के अन्दर यदाकदा होने वाली हरकतो को अपने दिमाग मे बैठा लिया।

कुछ ईर्ष्या की भावना से उसने उन कौओ की ओर देखा जो हमारे और दुश्मन की अगली चौकियो के बीच उड रहे थे। उनके लिए कोई डरावने विघ्न न थे। वे चाहते तो जर्मनो की तरफ होने वाली हर वस्तु को बतला सकते थे? उसने मन ही मन एक बात-चीत करने वाले कौए की कल्पना की—एक कौआ स्काउट की—और सोचा कि यदि वह वैसा बन सकता तो खुशी से मानव स्वरूप का त्याग कर देता।

चौकसी करते करते और नोट लेते लेते त्रेवकिन का सर चकराने लगा। उसने कुछ स्काउटो को चौकसी पर बैठाया और मुश्ताकोव की खंदक मे पहुँचा।

नौजवान पल्टन कमाडर और ट्रेनिंग सस्थाओ से ताजे आए जूनियर लेफ्टिनेंट नई यूनीफार्म और किरमिच के चौडे ऊपरी जूते पहने हुए यहाँ एकत्रित थे। अपनी शोरभरी बाते बन्द कर उन्होने सम्मान पूर्ण शान्ति के साथ उसका अभिवादन किया। मेज पर बैठते हुए त्रेवकिन को अपने ऊपर नौजवान अफसरों की उत्सुकता भरी नजरो का अहसास हुआ, और उसके विचार उनकी ओर मुडे।

इन नौजवानो के जीवन का मिशन अक्सर बहुत छोटा होता है। वे बडे होते, स्कूल जाते, उनकी अपनी आशाएँ, अपने हर्ष और अपने विषाद होते। और एक धुधले प्रभात को कोई अपने आदमियों को हमले के लिए तैयार करता और फिर वे कभी न उठने के लिए गीली जमीन पर लेट जाते। कभी कभी तो लोगों को उनके बारे में दो अच्छे शब्द कहने का भी मौका नहीं मिलता—उनका परिचय

बहुत अल्प होता और वे एक दूसरे के लिए अजनबी ही रहते । इस पोषाक के अन्दर कैसे दिल हरकत कर रहे है, उन चिकने और तरुण माथे के पीछे क्या विचार है ?

उनके ही समान उम्रवाला अेवकिन अपने को कितना ही बुजुर्ग अनुभव करता । यह याद कर सतोष होता था कि वह अब तक कुछ कर चुका है । यदि वह काम आया तो उसके साथी उसके लिए दुःखित होंगे । डिवीजन कमांडर तक उसके बारे में दो शब्द कहेगा । और वह लड़की—वह कात्या ? अचानक उसे कात्या की याद हो आई ।

और अपनी सभावित मृत्यु के पहले उसने आत्मीयता और एक प्रकार की दया के साथ इन नौजवान लेफ्टिनेटों की ओर देखा ।

बड़ी बडी आँखो वाले एक लडके की ओर, जो उस पर आँख गड़ाए था, अेवकिन देखते ही आकर्षित हुआ । अेवकिन से नजर मिलते ही लडके ने शर्माकर कहा :—

"मुझे अपने साथ ले चलो । बड़ी खुशी के साथ मै गश्ती दल में शामिल होऊँगा ।" हाँ, उसने यही मुहाविरा इस्तेमाल किया था—"बडी खुशी के साथ !" अेवकिन मुस्कराया ।

"अच्छा । मै डिवीजन के चीफ ऑफ स्टॉफ से कहूँगा कि तुम्हें आने दें । मेरे पास कोई बहुत अधिक आदमी नहीं हैं ।"

हेडक्वार्टर पहुँचने पर उसने लेफ्टिनेन्ट-कर्नल गालीव से इसके बारे मे प्रार्थना की और गालीव ने राजी होकर रेजीमेंट को उचित आदेश फोन द्वारा भेजने के लिए आज्ञाएँ जारी की ।

और इस प्रकार लेफ्टिनेट मस्चरस्की —गठीले बदन और नीली आँखों वाला बीस वर्षीय तरुण जो किरमिज के चौड़े ऊपरी जूते पहनता था—गोदाम में उठ आया । उसके सूटकेस मे कई किताबें थीं और अपने खाली समय मे वह स्काउटों को कविताएं पढ़कर सुनाया करता था । गोदाम की मद्धिम रोशनी में बैठकर वे उत्सुकता के

साथ शब्दों की सुरीली लय सुनते, कवि की कला और मस्चरस्की के आवेग पर चकित होते ।

कात्या अब अेवकिन की अनुपस्थिति मे ही गोदाम मे आती थी । मस्चरस्की हमेशा उसका शिष्टता के साथ स्वागत करता, हाथ मिलाता और बैठने के लिए आमन्त्रित करता । स्काउटो ने यह पसंद किया, हालाँकि उससे उनका थोडा विनोद भी होता, क्योंकि वे ऐसी शिष्टता के आदी नही रह गए थे ।

एक बार मस्चरस्की अेवाकन मे कात्या का जिक्र कर बैठा ।

"वह रेडियो आपरेटर लडकी आश्चर्यजनक है ।"

"किसके बारे मे कह रहे हो ?"

"कात्या मिमाकोवा के बारे मे । वह अक्सर यहाँ आती है ।"

अेवकिन चुप रहा ।

"क्यों ? तुम उसे नही जानते क्या ?" मस्चरस्की ने पूछा ।

"जानता हूँ । लेकिन तुम उसे इतना आश्चर्यजनक क्यो समझते हो ?"

"बडी दयालु है वह । स्काउटो के कपडे धोती है, और वे अपने घर से आए पत्रो को उसे सुनाते हैं । उसे अपने सब समाचार बतलाते है । उसके आने पर सबको खुशी होती है और वह गाती भी बहुत अच्छा है ।"

एक दूसरी बार मस्चरस्की सहसा अपने विशिष्ट जोश के साथ कह बैठा :—

"लेकिन वह तुमसे प्रेम करती है ! ईमानदारी से कह रहा हूँ—प्रेम करती है । तुम्हारा मतलब है कि तुमने कभी गौर ही नही किया ? कोई भी देख सकता है ...बडे मजे की रही ! कितनी खुशी की बात है ।"

अेवकिन की मुस्कराहट दबी हुई थी ।

"तुम्हे कैसे मालूम ? उसने तुमसे कहा था क्या ?"

"नही, वह क्यो कहने लगी ? मै खुद देख सकता हूँ। मै तुमसे कहता हूँ, वह आश्चर्यजनक लडकी है।"

"ओह ! वह किसी से भी प्रेम कर सकती है", त्रेवकिन ने अनुदारता से कहा।

मस्चरस्की ने अपने मुह को वेदना से सिकोडा।

"ऐसा नही कहना चाहिए तुम्हे ?" उसने अपने हाथ को हिलाते हुए कहा। "तुम ऐसी कल्पना तक कैसे कर सकते हो ? यह सही नही है।"

"रात के अभ्यास का समय हो गया है", त्रेवकिन ने विषय को बन्द करते हुए कहा।

मस्चरस्की अपने अभ्यास पर बडा ध्यान देता था। वह बच्चों की तरह इसमे रस लेता था। जब तक चूर चूर न हो जाता, वह रेंगता रहता और बर्फीले पानी में बहादुरी से कूद पडता। पल्टन की सफलताओ की अनन्त कहानिया सुनने के लिए वह रात रात भर बैठें रहने के लिए उद्यत रहता।

मस्चरस्की त्रेवकिन को हर दिन ज्यादा भाने लगा। वह अनुराग के साथ नीली आँखों वाले लड़के की ओर देखता और सोचता, "यह वही धातु है, स्काउट जिसमें ढले होते हैं......"

———:०:———

अध्याय छै

"तो कल रात हम लोग रवाना हो रहे हैं। आशा करें कि रात अंधेरी रहेगी---टोह के काम के लिए यही खास चीज है", ममोचकिन ने नए स्काउटों के सामने शान बघारते हुए कहा।

उसे थोड़ी चढ़ी हुई थी। आगामी गश्त को देखते हुए त्रेवकिन ने उसे आराम देने के लिए पहरे के काम से मुक्त कर दिया था। और ममोचकिन तुरन्त "अपने" बूढ़े किसान के पास पहुँचा। शहद से भरे एक घड़े, घर पर खींची हुई कटल भर वोडका, एक डिब्बा मक्खन, कुछ अडे और तीन किलोग्राम* सासेज साथ लिए वह गोदाम में लौटा। इस बड़े खिराज के खिलाफ बूढ़े के डरते विरोध का उत्तर उसने किंचित उदासी से दिया ——

"चिंता मत करो, बूढ़े बाबा। संभव है कि तुम दोबारा हमें न देखो। यह तय है कि मैं सीधे स्वर्ग जाऊँगा। वहाँ जब तुम्हारी बुढ़िया मिलेगी तब उसे बतलाऊँगा कि तुम कितने अच्छे आदमी हो। अब बहस मत करो। हो सकता है कि तुम आखिरी बार मुझे कुछ दे रहे हो.........."

असामान्य परिस्थितियाँ देखकर ममोचकिन ने अपने "रसद स्रोत" का रहस्योद्घाटन कर देने का निश्चय किया। बायकोव और सेमियोनोव को वह अपने साथ ले गया और उन्हें चीजों से लाद दिया—आत्मसंतोष से मुस्कराते हुए बार-बार पूछता·

"कहो, कैसा लगता है ?"

---

*एक किलोग्राम = सवासेर

ममोचकिन के दुर्बोध और जादू भरे सौभाग्य के प्रति मेसियो-नोव प्रशंसा से भर उठा :

"बहुत बढ़िया ! कैसे कर लेते हो यह सब तुम ?"

लेकिन बायकोव को शक हुआ कि यह व्यापार नैतिकता पूर्ण नहीं । "होशियार रहना, ममोचकिन", उसने कहा, "लेफ्टिनेंट को पता चल जायगा ।"

जब वे बूढ़े के खेत से गुजरे तो ममोचकिन ने हल और बसर में जुते हुए "अपने" घोड़ों की ओर आंख मारी । वे बूढ़े के लड़के—एक मौन और झुके हुए मूर्ख—तथा उसकी बहू—एक लम्बी सुन्दर औरत—द्वारा हाँके जा रहे थे ।

उसने सफेद तारे वाली बड़ी बादामी घोड़ी की ओर देखा और याद आई कि वह घोड़ी उस अजीब बुढ़िया की थी, जहाँ पलटन विश्राम करने के लिए रुकी थी ।

"वह बुढ़िया निश्चय ही हमें कोस रही होगी ।" यह विचार उसके दिमाग में कौंध गया । क्षण भर के लिए उसके मानस पर एक चोट सी लगी । लेकिन अब यह सब महत्त्वहीन था । गश्त का काम सामने था, और कौन जाने, उसका अन्त कैसा हो ?

जब ममोचकिन गोदाम में दाखिल हुआ तो उसने त्रेवकिन को थ्रेशर के पास बैठे अपने हाथ में पेन्सिल लिए अपनी माँ और बहन को पत्र लिखना शुरू करते हुए पाया । अचानक उसका रंग उड़ गया और वह चुपचाप त्रेवकिन के पास पहुँचा । एक विरल डर उसकी आँखों में चमक उठा । त्रेवकिन ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा ।

"कामरेड लेफ्टिनेंट", ममोचकिन ने कहा, "रेडियो का सामान भी क्या हम साथ ले रहे हैं ?"

"हाँ, ब्रेजनीकोव उसके लिए गया है ।"

"और आपरेटर ?"

"मैं खुद संदेश भेजूंगा। आपरेटर साथ लेने की कोई जरूरत नहीं। कोई बुजदिल और बटाधार भी पल्ले पड़ सकता है। नहीं, हम खुद सँभाल लेंगे, मैं बेतार के बारे में थोड़ा बहुत जानता हूँ।"

"अच्छा .. ....!"

ममोचकिन के लिए आगे कहने को स्पष्टतः कुछ भी नहीं था किन्तु फिर भी वह वहाँ खड़ा रहा।

"कामरेड लेफ्टिनेंट", उसने कहा, "सुअर के माँस का थोड़ा सासेज खाओगे क्या ?"

वह अपेक्षा करता था कि अेवकिन उसे फाड़ खाएगा—"फिर किसानों को लूटने लगे......" लेकिन उसने तीखे स्वर में मना कर दिया और अपने पत्र में जुट गया। तब ममोचकिन ने निश्चय कर डाला। अचानक काँपती आवाज में उसने कहा :—

"कामरेड लेफ्टिनेंट, पत्र मत लिखो!"

"क्यों तुम्हें क्या सूझ रहा है ?" अेवकिन ने चकित होकर कहा।

"मर्चेन्को ने भी जाने के पहले इसी प्रकार थ्रेशर के पास पत्र लिखा था। यह अपशकुन है। देश में मछुए शकुनों में विश्वास करते हैं—और सच मानो, वे सही उतरते हैं।"

"बस करो, ममोचकिन, यह कपोलकल्पित बातें हैं", अेवकिन ने ठिठोली करते हुए किन्तु मृदुता से कहा।

ममोचकिन चला गया, अेवकिन ने फिर अपनी पेन्सिल उठाई, लेकिन उसी क्षण उसकी नजर दरवाजे के पास भूसे के काले ढेर पर पड़ी। एक किनारे पर समय, पसीने और पानी से काला हुआ एक थैला पड़ा था.... मर्चेन्को का बिस्तर।

आखिर अेवकिन अपना पत्र खत्म नहीं कर पाया। एक

छोटा रेडियो सेट लिए हुए ब्रेजनीकोव ने भीतर प्रवेश किया। डिवीजन सिगनल अफसर मेजर लिखाछेव, कात्या तथा दो और रेडियो आपरेटर भी उसके साथ थे। लिखाछेव ने एक बार फिर संकेतों में बने हुए नक्शे और तालिका का उपयोग त्रेवकिन को समझाया।

"देखो, त्रेवकिन। दुश्मन के टैंकों के लिए संकेत है ४६, पैदल सेना के लिए २१। नक्शा आयतों में बँटा हुआ है। मानों तुम्हें इस जिले में टैंकों के बारे में सूचना देना है। तुम कहोगे, ४६ आयल साँड चार। यदि पैदल सेना का पता देना हो तो कहोगे, २१ साँड चार इत्यादि, इत्यादि।"

उन्होंने अन्तिम बार अभ्यास किया। दल का संकेत तय हुआ तारा और डिवीजन का धरती।

गुप्त अर्थ से भरे हुए अजीब शब्द गोदाम की नीरवता में सुनाई पड़ने लगे। लिखाछेव और त्रेवकिन को घेरे खड़े चुपचाप सुनते स्काउट आकस्मिक रोमांच से भर उठे।

"धरती, धरती! तारा पुकार रहा है। तारा पुकार रहा है। २१ साड़ तीन। इक्कीस साड तीन। अब तुम बोलो।"

उत्तेजित लिखाछेव ने नीरस पोली आवाज में उत्तर दिया:

"धरती तारे को पुकार रही है, धरती तारे को पुकार रही है। क्या मैं ठीक समझा? दोहराता हूँ, 'इक्कीस साड़ तीन। अब तुम बोलो।"

"तारा धरती को पुकार रहा है। ठीक है। आगे बढ़ता हूँ। उनंचास बाघ दो।"

ग्रह मंडल के बीच रहस्यमय बातचीत गोदाम के धुंधलेपन में चलती रही, और सुनने वाले लोगों को ऐसा लगा मानों वे सचमुच ही शून्य में खो गए हैं। और जहाँ तक छप्पर में घोसला बनाती हुई गौरइयों का सवाल है, लापरवाही से चरू चा चाव जारी रखते हुए उन्होंने खुशी से पंख फड़फड़ाए।

चलते ममय लिखाछेव ने ग्रेवकिन का हाथ दबाया ग्रौर कहा :—

"फिर भी शायद तुम एक ग्रापरेटर साथ ले जाना चाहो ? मेरे पास ग्रच्छे छोकरे है ग्रौर वे जाने के लिए कई बार कह चुके है। मुझे ग्राज एक की ग्रर्जी भी मिली—"ग्रटपटाकर वह जरा हँसा—"जूनियर सार्जेट सिमाकोव की—वह तुम्हारे साथ जाना चाहती है।"

ग्रेवकिन ने भौह सिकोड़ी।

"नही, कामरेड मेजर, मुझे किसी ग्रापरेटर की जरूरत नही ! हम पार्क मे टहलने के लिए नही जा रहे है।"

ग्रपनी हार्दिक विनय के प्रति यह ग्रनुदार फटकार मुनकर कत्या तेजी से गोदाम के बाहर चली गई। ग्रेवकिन के घृणा भरे शब्दों से उसे गहरी चोट लगी। "कितना जगली ग्रौर ग्रशिष्ट इन्सान है", उसने सोचा। उसके दिल में रोष उमड ग्राया था। "केवल एक मूर्ख ही इस जैसे ग्रादमी से प्रेम कर सकता है......"

जब वह कैप्टेन बाराशिकन की खदक के पास पहुँची तो उसने ग्रपनी चाल धीमी कर दी। "मै ग्रन्दर जाऊँगी, सिर्फ बदले के लिए।" ग्रौर सहसा प्रशसा के साथ उसे कैप्टेन की ग्रपने प्रति निरन्तर मधुर भावनाग्रो, उसकी विनय, उसके काँपते हुए स्वर, उसकी प्रणय की कानाफूसी की—जो काफी सामान्य होने पर भी एकाकी मन के लिए बडे मुखकर होते है—याद हो ग्राई। गानो ग्रौर कविताग्रों की उसकी पतली नोटबुक तक की उसे ग्रब गरमाहट के साथ याद ग्राई। उसके बारे मे हर चीज सामान्य, सादी ग्रौर ममझ मे ग्राने वाली थी, ग्रौर इस क्षण उसे ऐसा लगा कि सुख के लिए इन्ही की ग्रावश्यकता होती है।

वह खंदक मे घुसी। बाराशकिन ने किंचित ग्रचंभे पर खुशी की मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया। उसके दिमाग

से यह विचार गुजरा कि चूंकि अब ग्रेबकिन जा रहा है, इसलिए इस सियार ने कम से कम मुझे अपनी उँगलियो से न फिसलने देने का निर्णय किया है। फिल्मी गीतों और भावुकता पूर्ण प्रेम गीतों वाली काफी इस्तेमाल की गई नोटबुक फिर खुल गई। लेकिन आज कात्या गाने के मूड मे नही थी।

बाराशकिन ने दुभाषिए लेविन को चलता करने की भरपूर कोशिश की। लेकिन अन्त में जब लेविन टला और बाराशकिन ने मीठेपन से मुस्कराते हुए कात्या को अपनी भुजाओं मे लिया, तो कात्या ने उसे परे ढकेल दिया और चरमराते जंगल मे भाग गई। नही, अब फिर कभी नही। यह सब पुराना मामला अब उसको पसद न था, विकृति पैदा करने वाला था। उसकी आँखे भर आई।

इस बीच ग्रेबकिन एक बहुत ही अरुचिकर बातचीत मे व्यस्त था।

नात्सी लगने वाला शान्त और चेचक मुंह दाग पडताल अफसर कैप्टेन याश्किन गोदाम में आया। इस बातचीत मे कुछ भी ग्रह मडलीयता न थी। मोमजामे के पर्दे के पीछे वह ग्रेबकिन के पास बैठ गया और उसने विस्तार से पूछना शुरु किया, कि कैसे और कब घोडे लिए गए थे, किस बिना पर, कब और किन परिस्थितियो मे वे लौटाए गए थे। और क्यो उसने उनके लिए रसीद हासिल नही की।

ग्रेबकिन ने रुक्षता के साथ लेकिन विस्तार मे बतलाया कि कैसे क्या हुआ। रसीद के लिए पूछे जाने पर स्मृति को टटोलते हुए वह पल भर के लिए रुका। अरे हाँ, दो घोड़े उसने दूसरे दिन तक के लिए रोक लिए थे और ममोचकिन उन्हे वापिस लौटा आया था। उसने ममोचकिन को पुकारा, पर वह गोदाम मे नही था। कैप्टेन याश्किन ने कहा कि वह फिर आएगा। गोदाम से जाने के पहले उसने चारो तरफ नजर डाली, जैसे केवल संयोगवश उसने ममोचकिन के बिस्तर पर सफेद मेजपोश बिछा देखा, जबकि

बाकी सब के बिस्तरो पर मोमजामे के लबादे बिछे हुए थे। पर वह बिना कुछ कहे चला गया।

जब ममोचकिन लौटा तो त्रेवकिन ने उसे बुलाया लेकिन फिर कुछ सोचकर घोड़ो के बारे मे कुछ नही पूछा। आखिर ममोचकिन उसके साथ गश्त पर जाने को था। वह यही पूछकर रह गया कि वह पिछले दो घटो मे कहाँ था। ममोचकिन ने कहा कि वह सुरग लगाने वालो के पास था। बात वही खत्म हो गई।

त्रेवकिन और मस्चरस्की बुगोर्कोव से मिलने के लिए चले क मस्चरस्की किसी चीज मे खोया चल रहा था। सहसा उसने पूछा —

"त्रेवकिन तुम चाहे जो कहो, लेकिन मैं कात्या से मिलने जा रहा हूँ। तुमने कुछ नही देखा, पर मैंने देखा। मैं उसके लिए बहुत दुखित हूँ। जब वह बाहर भागी तो वह बहुत विचलित थी। त्रेवकिन तुम्हे उसको इस प्रकार चोट नही पहुँचानी चाहिए थी।"

बहुत शरमाती हुई कात्या को लिए हुए वह बुगोर्कोव की खदक मे पहुचा। तथापि त्रेवकिन की अपराध भरी नजर उससे छिपी न रही। कात्या के लिए यह उजज्वल आशाओ भरी एक अद्भुत शाम थी। और त्रेवकिन के लिए उसका अत बहुत ही सुहावने आश्चर्य के साथ हुआ।

लेकिन जब हाँफता हुआ अजनीकोव खदक मे घुसा तो आनन्द भरी गपशप हठात् रुक गई। उसकी आँखे चमक रही थी। टोपी भूल आया था और सन की लच्छियो के समान सीधे बाल उसके माथे पर लटके हुए थे।

"कामरेड लेफ्टिनेंट, आपको बुलाया है, जल्दी चलकर देखो।"

गोदाम के पास उत्तेजना भरा शोर और चहल-पहल थी। स्काउट चिल्लाते हुए त्रेवकिन से मिलने दौड़े।

"देखो कौन आया है?"

त्रेवकिन रुका। चतुर आँखो मे चमक लिए और चौड़ी

हँसी हँसते हुए अनीकानोव उससे मिलने आगे बढ़ा । अपने लेफ्टि-नेंट का गले भेंटने की हिम्मत न हुई और उलझन मे कभी इस पेर पैर जोर डालता कभी उस पैर पर ।

"देखो कामरेड लेफ्टिनेंट, मे आ गया हूँ ।"

त्रेवकिन गाज गिरासा उसकी ओर ताकता रहा । बोलते न बनता था । सहसा उसे लगा कि एक बोझा उसके कधो से उतर गया है । और उस क्षण उसने उन शकाओ और अनिश्चितता की गहराई महसूस की, जिसमे वह गत सप्ताहो से हाथ पैर मार रहा था ।

"लेकिन तुम आए कैसे हो ? हमेशा के लिए या किसी और यूनिट में जाते हुए सिर्फ मिलने ?" जब आखिर वे छोटी मेज के पास बैठे, तब त्रेवकिन ने पूछा ।

"मै भेजा तो दूसरी यूनिट को गया था ।" अनीकानोव ने उत्तर दिया, "लेकिन मै गाडी से उतर आया । मैने सोचा कि जरा जाकर अपनी पल्टन और लेफ्टिनेंट को एक नजर देख आऊँगा । अपने डिवीजन का एक सिपाही मुझे मिला था और उसने बतलाया कि तुम अभी भी इसी जगह हो ।"

वह जरा चुप हुआ फिर मुस्कराकर बोला '—

"और मैने सोचा कि बाकी वहाँ पहुँचने पर देखूगा ।"

अनीकानोव का एक गिलास वोड्का और कुछ नाश्ते से स्वागत किया गया । त्रेवकिन उसको प्रसन्नता के साथ धीरे धीरे खाते हुए—स्वाद ले लेकर पर बिना लालच के—और विस्मयजनक ग्राम्य शिष्टता के साथ हर चीज के लिए रमोइए झिलिन को धन्यवाद देते हुए देख रहा था । उसी अविकल ढग से उसने बतलाया कि जब वे रिजर्व रेजीमेट के खेतो मे बुवाई कर चुके तो उसने मोर्चे पर जाने के लिए अर्जी दी, और एक पुनर्स्थापन कम्पनी मे नियुक्त किया गया ।

"तो तुम जर्मनो के मर्म में जा रहे हो ?" उसने त्रेवकिन से पूछा, "तुम्हारे सग कौन जा रहा है ?"

"यह जूनियर लेफ्टिनेंट मस्करस्की, ममोचकिन, ब्रेजनीकोव, बायकोव, सेमियोनोव और गोलूब ।"

"और, मर्चेन्को, वह कहाँ है ?"

उसने लोगो के उदास चेहरे देखे और चुप हो गया । सब समझकर उसने सावधानी से अपनी प्लेट खिसकाई, सिगरेट जलाई और बोला —

" वह अमर हो. "

थोडी देर मौन रहा । फिर त्रेवकिन ने अपनी भँवो के नीचे से अनीकानोव की ओर तरेरा ।

"और तुम ?" उसने पूछा, "तुम मेरे साथ आ रहे हो या उस यूनिट मे जा रहे हो जहाँ तुम्हारी नियुक्ति हुई है ?"

अनीकानोव ने तुरन्त कोई उत्तर नही दिया। हालाँकि उसने किसी की ओर देखा नही, पर उसे लगा कि लोग व्याकुलता से उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे है ।

"मे तुम्हारे साथ चलने की सोच रहा हूँ, कामरेड लेफ्टिनेंट" उसने कहा, "ऐसी हालत मे हमे मेरी रेजीमेंट को सूचित करना पडेगा— समझे, कि सार्जेंट अनीकानोव भगोडा नही है । यानी हमे बाकायदा पत्र लिखना पड़ेगा ।"

ममोचकिन दरवाजे मे खडा हुआ सराहना और ईर्ष्या मिश्रित भावना से बातचीत सुन रहा था । वह यह स्पष्ट देख रहा था कि केवल अनीकानोव ही चीजो को इस ढग से कर सकता है । और उस समय वह अनीकानोव होने के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर सकता था ।

इस बीच अनीकानोव अपने चारों ओर देख रहा था । उसने भूसे पर पड़े हुए बरसाती लबादों, हरे छिपावटी कपडो, कोने मे दस्ती बमो के ढेर, खूटी पर लटकती टामीगनों, सैनिकों की पेटी से लटकते

छुरी को देखा और जीवन को जानने वाले एक सतोषी दार्शनिक की भाति उसने महसूस किया कि फिर "घर" लौटना कितना सुखकर है ।

• शान्त और मुलायम पडे त्रेवकिन ने नक्शा खोला और वह सोपे गए काम और योजना अनीकानोव को समझाने ही वाला था कि सहसा हेड क्वार्टर का एक हरकारा उसे डिवीजन कमाडर के पास ले जाने के लिए दरवाजे मे दिखलाई पडा । मस्त्वरस्की को यह आदेश देकर कि वह अनीकानोव को सब चीजो से अवगत करादे, त्रेवकिन कर्नल के पास चला गया।

कमाडर की झोपड़ी मे किंचित अधकार था । कर्नल सर्बीचेन्को बीमार था ; खिड़की के पास अपनी चारपाई पर पडा हुआ वह चीफ ऑफ स्टॉफ से एक रिपोर्ट सुन रहा था ।

"तुम तो सन की सैण्डिले पहने हुए हो ।" पहली चीज जो उसकी निगाह मे आई, वह थी त्रेवकिन की जूतियाँ ।

"आदत डाल रहा हूँ, कामरेड कर्नल । रयाजान के सेमियोकोवा ने पूरे दल के लिए ऐसी तैयार की है । इनसे आवाज नही होती और पैर को आराम भी देती है ।

कर्नल ने अनुमोदन से 'हूँ' किया और विजय भरी नजर से लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव की ओर देखा । मानो कह रहा हो—देखा, यह स्काउट कितने होशियार है !

कर्नल सर्बीचेन्को को अक्सर लोगो को खतरनाक कामों पर भेजना पड़ता था, लेकिन आज त्रेवकिन के विषय मे उसे पछतावा-सा था । उसने सोचा कि कर्नल सेमियोंकिन का कहना सही था, लेकिन जहाँ तक सेना के हेडक्वार्टर का संबध है, टोह लेने का काम, रिपोर्ट, संक्षिप्त सूचनाओं, स्थिति के नक्शो और बडे पैमाने पर की जाने वाली कार्यवाहियों के लिए मौके पर लिए गए निर्णयो वाले सामान्य काम से अधिक नही है । लेकिन उसके लिए सन की सैण्डिले,

और हरे छिपावटी लबादे पहने इस हजामत बढे व्यक्ति का, जो सुन्दर वन-देवता के समान लग रहा है, खास मूल्य है।

उसकी इच्छा हुई कि उससे एक ऐसे माँ या बाप की तरह बात करे, जो अपने बेटे को किसी जोखिम के काम पर भेज रहा हो। वह कहना चाहता था—"अपना ख्याल रखना। काम तो काम है, लेकिन अपनी गर्दन मत सकट मे डालना। होशियार रहना, लडाई जल्दी ही खत्म हो जायगी।"

लेकिन वह खुद भी एक समय स्काउट रह चुका था और अच्छी तरह जानता था कि इस प्रकार की बिदाई कल्याणकारी नहीं होती—बड़े कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति तक के कलेजे दहला दे सकती है। एक व्यक्ति काम पर सब कुछ भूल सकता है पर ऐसे शब्द "अपना ख्याल रखना" खासकर एक ज्येष्ठ अफसर के मुह से निक-लने वाले तो कभी भी भुलाए नही जाते —और उसका मतलब होता है निश्चित असफलता। इसलिए कर्नल ने त्रेवकिन से हाथ मिलाया और सिर्फ कहा :—

"सावधानी से..."

अध्याय सात

जब वह छिपावटी लबादे पहन लेता है और टखने, कमर, ठोडी के नीचे और गर्दन के पीछे सब बध बाध लेता है तो स्काउट दुनिया की सब छोटी बड़ी चिन्ताओं को सलाम कर लेता है। उसका अपने आप से, अपने कमाड से, या अपनी स्मृतियों से कोई नाता नही रह जाता। अपनी पेटी मे दस्ती बम और छुरा लटकाकर, और लबादे के अन्दर सीने के पास रिवाल्वर खोसकर वह सारे मानव रिवाजो को त्याग देता है और बहिष्कृत व्यक्ति-सा बन जाता है और भविष्य में केवल अपने ऊपर ही निर्भर रहता है। अपने सब कागज, पत्र, चित्र, सम्मान सूचक फीते और तमगे अपने सार्जेंट-मेजर को सौप देता है, और अपने कम्यूनिस्ट पार्टी अथवा कोमसोमोल कार्ड को पार्टी संगठन-कर्त्ता के हवाले कर देता है। इस प्रकार वह अपने सारे अतीत और भविष्य को तिलाजलि देता है और वे उसके हृदय मात्र मे ही विद्यमान रह जाते है।

जगल की चिडिया की तरह वह बेनाम होता है। कभी कभी वह मानव भाषा का भी परित्याग कर देता है और अपने साथियों को संकेत देने के लिए चिड़िया की बोली, और सीटी से ही काम लेता है। वह खेतो, जगलो, नालों मे एकाकार हो जाता है और इन जगहो का प्रेत बन जाता है---एक खतरनाक प्रेत---एक प्रेत जो दुश्मन की घात मे रहता है और जिसका दिमाग केवल एक ही चीज पर केन्द्रित रहता है, अपने मिशन पर।

इस प्रकार केवल दो खिलाड़ियो--मानव और मौत--वाला सनातन खेल शुरू होता है।

मस्चरस्की और बुगोर्कोव के साथ त्रेवकिन अगली चौकियों की ओर बढा; अपने आदमियो को वह पहले ही आगे भेज चुका था। मस्चरस्की बहुत ही दुःखित था। जब लेफ्टिनेंट-कर्नल गालीव को अनीकानोव की वापिसी का पता चला तो थोडे ही विचार के बाद उसने मस्चरस्की को त्रेवकिन की जगह लेने को रोक लिया।

"कौन जाने, क्या जरूरत आ पडे, और स्काउट बिना किसी अफसर के रह जायँ", उसने डिवीजन कमाडर से कहा, जो उससे सहमत हो गया।

जगल मे पगडडी पर चलते हुए तीनो अफसर धीरे-धीरे बाते कर रहे थे। वास्तव में बोलने का सब काम बुगोर्कोव ही कर रहा था, जबकि उदास मस्चरस्की केवल सुन रहा था और त्रेव-किन अन्यमनस्कता से अपने सामने घूर रहा था।

"लडाई जल्दी खत्म हो जाए तो कितना अच्छा रहे", बुगो-र्कोव ने त्रेवकिन के गभीर चेहरे की ओर कनखियो से देखते हुए असम्बद्धता से बात खत्म करते हुए कहा।

त्रेवकिन ने कोई उत्तर नही दिया। किसी कार्यवाही के पहले वह हमेशा मौन रहता था। इस निदामी शान्ति के लिए उसे इच्छा शक्ति पर काफी जोर डालना पडता था। मानों वह अपने को तकदीर के हाथो सौंप कर कह रहा हो--जो कुछ किया जा सकता था, वह मैने किया, और अब जैसी घटे, वैसी घटने दो।

तोपखाने की रेजीमेंट का एक दल सरो के पौधो से ढंकी हुई एक चौडी कगार पर पैर जमा रहा था। तोपची लोग तोपें बैठाने में लगे थे। त्रेवकिन को देखते ही उन्होने हाथ हिलाकर उसे पुकारा:

"फिर काम पर चल दिए ?"

"हाँ", त्रेवकिन ने संक्षेप मे उत्तर दिया।

खाई में वे लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कैप्टेन मुरता-

कोव, कैप्टेन गुरेविच, तथा मोरटर* कम्पनियों के दो कमाडरों के साथ वहाँ मौजूद था। अनीकानोव तथा अन्य स्काउट खाई में अपने पेरो पर उकड़ूं बैठे हुए आहिस्ता-आहिस्ता बाते कर रहे थे।

कैप्टेन गुरेविच ने अपनी समन्वित योजना को विस्तार से बतलाते हुए कहा :

"जर्मनो का ध्यान हटाने के लिए मैं निशाने नं० छै पर बमबारी करूँगा। ख्याल रखना त्रेवकिन कि तुम बहुत बाएँ न जाओ, अन्यथा मेरी गोलंदाजी के नीचे आजाओगे। उसके बाद मोरटर और मेरी तोपें निशाने नं० चार पर बरसेगी। यदि तुम्हारे पास से लाल राकेट छूटेगा तो तुम्हारी वापिसी की रक्षा के लिए मै निशाने न० दो, तीन, चार, पांच और सात पर गोलंदाजी करूँगा।

"मोरटरों ने निशाने ले लिए है?", त्रेवकिन ने पूछा।

"हाँ, सब तैयार है", मोरटर कमांडरों ने उत्तर दिया।

"जरूरत के लिए मेरी मशीन-गनें भी तैयार हैं ?" मुस्ताकोव ने कहा।

वे सब उत्तेजित दीखते थे।

त्रेवकिन मुंडेर पर चढा और जर्मन चौकियों की ओर मे आने वाली आवाजों पर कान लगाए।

कहीं दूर ग्रामोफोन नाच की एक ताल बजा रहा था। उधर बांयी ओर सफेद रोशनियाँ थोड़ी-थोड़ी देर बाद आकाश में चमक जाती थी।

वह वापिस खाई में कूदा, अपने स्काउटो और सुरग लगाने वालों की ओर मुडा और बोला :—

"सुनो !"

आदमी धीरे-धीरे खड़े हो गए।

---

*एक प्रकार की बड़ी तोप।

"दुश्मन इस प्रदेश को अपने एक सौ इक्कतीसवे तोपखाने डिवीजन से दखल किए हुए है। हमारे पास जो सूचना है उसके अनुसार वह अपनी सेनाओ को अपनी पिछली रक्षा पंक्ति के पीछे एकत्रित कर रहा है। डिवीजन कमाडर की आज्ञा है कि हम दुश्मन के पिछले भाग में टोह लें, सेना के एकत्रीकरण का मंशा जानें और दुश्मन की सुरक्षित सैन्य तथा टैंको का पता लगाएँ और हेडक्वार्टर को रेडियो से सूचना दें।"

स्काउटों को यह बतलाने के बाद कि वह किस क्रम से आगे बढ़ेंगे, और उन्हे यह सूचित कर कि अनीकानोव उपनायक है, त्रेवकिन ने खाई मे अफसरो को सिर हिलाकर मौन अभिवादन किया, मुडेर पर चढा और निःशब्द नदी के किनारे की ओर बढ़ा। एक के बाद एक कर, ब्रेजनीकोव, ममोचकिन, गोलूब, सेमियोनोव, बायकोव और वे तीनो सुरंग लगाने वाले भी जो दल के साथ भेजे गए थे, उसी प्रकार आगे बढे। अनीकानोव सबसे पीछे था।

खाई के लोग कई मिनट तक निःश्चित खडे रहे। फिर गुरे-विच ने सहसा बडे व्यापक रूप मे गाली बकना शुरू किया। मुस्ता-कोव से थोडी 'वोड़का' मागी और घृणा से मुह बनाते हुए सचमुच पूरा एक गिलास पी गया। गुरेविच कभी गाली न बकने और शराब न पीने के लिए प्रख्यात था। मुस्ताकोव को अचम्भा था, पर उसने कोई टीका नही की।

इस बीच त्रेवकिन नदी के किनारे छोटी झाडियो मे रुक गया था। स्काउट इंतजार करते रहे लेकिन त्रेवकिन ने कोई हरकत नहीं की। कोई तीन मिनट तक वे चुप खड़े रहे। सहसा एक जर्मन ज्वाला अन्धकार को चीर गई। नदी पर एक दूधिया रोशनी फैली और उतने ही मे सहसा लोप हो गई। स्पष्ट था कि त्रेवकिन इसी के लिए ठहरा हुआ था। अपने साथियों के आगे-आगे वह ठंडे

अँधेरे पानी मे घुस गया। फुर्ती से नदी को पार कर वे फिर पश्चिमी किनारे की छाया मे ठहरे और दूसरी ज्वाला की प्रतीक्षा करने लगे। इसके बाद अेवकिन ने सुरग लगाने वालो को आगे भेजा और उनके पीछे चला। उसके स्काउट उसके पीछे चल।

एक गढइया को चक्कर लगा कर पार कर, जो अेवकिन द्वारा दूर से देखकर लगाये अंदाज से कही बड़ी थी, सुरग लगाने वाले रुक गये। सुरग बिछा प्रदेश यही से शुरू होता था।

जमीन को अपने लम्बे यत्रो से जाँचते हुए और उनमे से एक के सीने पर लटके ध्वनि-यत्र में आवाजो पर कान लगाये हुए, वे धीरे-धीरे आगे बढे।

एक और ज्वाला आकाश मे चढ़ी। स्वाभाविक भय से स्काउट धरती पर चिपक गये। वे ऊँची, समतल धरती पर लेटे हुये थे और उन्हे लगा कि सारा विश्व उन्हे उस दिशा मे भी रोशनी मे देख सकता है। लेकिन ज्वाला बुझ गई और शान्ति छा गई।

अपने हाथो को अधेरे मे सावधानी से चलाते हुये सुरंग वालो ने कई सुरगे काट डाली। मशीनगन की ट्रेसर गोलियो की एक बाढ उनके सिरो से गुजरी और क्षितिज की ओर चली गई। स्काउट फिर मूर्तिवत खडे हो गये। वैसी ही एक बाढ नीरसता से बायी ओर कडकी। सोवियत स्थितियो से भी एक एकाकी मैक्सिम चहकी और अन्तिम बिदाई के रूप में उसकी गोलियाँ कही दायी ओर से गुजर गई।

आगे चलते सुरंग वाले ने अंधेरे मे एक तार का पता लगाया और अपने पीछे रेंगते अेवकिन की ओर मुडा। "हाँ, चलने दो," अेवकिन फुसफुसाया। सुरंग वालो ने अपनी बडी कैंचियो से तार काटना शुरू किया। दूसरी ज्वाला चमकी, ट्रेसर गोलियो की एक दूसरी बाढ चम-चमा कर गुजरी और गहरे अधकार में लुप्त हो गई।

इस ज्वाला की रोशनी मे त्रेवकिन जर्मन मुडेरे, नजदीक पडी कुछ बल्लियाँ, खाइयो की दूसरी पंक्ति के परे जगल का सिरा और बमो से नष्ट–भ्रष्ट तीन पेड देख सका जो जर्मन पंक्तियो को दूर से जाँचने पर उसकी पहचान के खास निशान थे। वह थोडा दाहिनी ओर मुड गया था। अधेरे मे कुतुबनुमे की मुई का हरा रग चमक रहा था।

रात्रिकालीन नीरवता उमके आस पास छाई थी। लेकिन त्रेवकिन जानता था कि यह नीरवता छल भरी है और हो सकता है कि बहुत-सी आँखे उसे अधेरे में तरेर रही हो। अपने कन्धे पर सुरग वाले के स्पर्श से वह जरा चमक भी उठा। इमका मतलब था कि तार के बीच रास्ता काटा जा चुका है। रास्ते की रक्षा के लिए सुरग वाले यही रुके रहेगे जिसमे कही त्रेवकिन और उसके साथियो को लौटना पडे तो वे मदद कर सके। यदि सब कुछ शान्त रहा तो वे आध घण्टे मे "घर" लौट जायेगे।

एक सुरग वाले ने बिदाई मे त्रेवकिन का हाथ कस कर दबाया। अब अंधेरे की आदी आँखो से तरेरते हुए बडी–बडी मूछे और काली, गहरी, दया भरी आँखे उसने देखी। ·'मेजीदोव'–त्रेवकिन ने उसे पहचाना। डिवीजन का सर्वोत्कृष्ट सुरग लगाने वाला। बुगोर्कोव ने कोई कसर नही छोडी।

स्काउट तार मे कटे रास्ते से रेग कर पार हुए, और जर्मनो की मुडेर पर निश्चल खड़े हो गये : बायी ओर धडाको की आवाज हुई। धरती काँपी। एक सेकेण्ड बाद बम दाहिनी ओर फूट पडे। त्रेवकिन ने सोचा, "यह रहा गुरेविच"।

अपनी बायी ओर उसने जर्मनो की आवाज सुनी। अनीकानोव और अजनीकोव खाई मे तैयार थे। आवाजे नजदीक आती जा रही थी। त्रेवकिन ने अपनी साँस रोकली। दो जर्मन याता–

यात-खाई द्वारा बिलकुल उसकी ओर चले आ रहे थे। उनमें से एक कुछ खा रहा था। त्रेवकिन उसको जोर से चबाते हुए सुन सकता था। वे दूसरी दिशा में मुड गये। अनीकानोव मुंडेर पर आया और उसने त्रेवकिन को नीचे कूदने में मदद की।

दूसरे ही क्षण सातो व्यक्ति जर्मन खाई में पास-पास खड़े हुए थे।

त्रेवकिन गौर से सुनता रहा, फिर उस यातायात-खाई में बढा जिससे थोड़ी देर पहले दोनों जर्मन प्रगट हुए थे। खाई में शाखें हो गईं। एक मोड पर त्रवकिन को सहसा अनीकानोव का, जो नेतृत्व कर रहा था, सचेतक स्पर्श मिला। एक जर्मन मुंडेर के पास चल रहा था। स्काउट खाई की दीवाल से चिपक गये। जर्मन अंधकार में खो गया। यहां तक तो सब कुशल रही। अब जरूरत यह थी कि वे जंगल मे दाखिल हो जाये।

त्रेवकिन ने यातायात-खाई से बाहर निकल कर चारों ओर देखा। बनरखे की झोंपड़ी की काली रूपरेखा उसने पहचानी जिसे वह अक्सर टेलिस्टेरोस्कोप द्वारा देखा करता था। उस घर के पास ही जर्मनों की एक मशीनगन का अड्डा था। वह जर्मन स्वरों को वहां गरम बहस में व्यस्त सुन सकता था। जंगल मे अन्दर जाने का रास्ता अब बिलकुल सामने ही होना चाहिए। रास्ते के बायी ओर एक चढ़ाव था जिस पर चीड के दो पेड़ थे और चढ़ाव के बायी ओर दलदली जमीन का फैलाव था। वही से उन्हे पार जाना था।

एक घण्टे बाद दल जंगल में लुप्त हो गया।

मस्चरस्की और बुगोर्कोव खाई में खड़े हुए रात्रि के अन्तर में घूर रहे थे। जरा-जरा देर बाद मुश्ताकोव या गुरेविच पास आते और धीमे से पूछते :

"कोई खबर ?"

नही, कोई लाल राकेट नही छूटा—इस बात का सकेत कि दल का भेद खुल गया है और वह लौट रहा है। दुश्मन की मशीनगन से तीन बार गोलीबार हो चुका है लेकिन वह सामान्य अटकल-पच्चू गोलंदाजी ही है। मस्चरस्की बुगोर्कोव, दोनो केप्टिन और खाई में मौजूद मौन सैनिक व्यग्रता से नदी, उसके ऊंचे पश्चिमी किनारे, झाड़ियों और सरपत, जर्मन तारों और जर्मन मुंडेरो की ओर देखते रहे। लेकिन कोई भी असामान्य चीज नजर नही आती थी, कुछ भी नहीं।

"भूतनाथ।" मुस्ताकोव सराहना पूर्वक चिल्लाया, "जंगल मे जिनों की तरह गायब हो गये।"

"लगता है कि वे पार हो गये है,"

मस्चरस्की ने चैन की साँसली, और अचानक पाया कि वह पसीने में डूबा है।

रेजीमेन्ट के हेडक्वार्टर ने केप्टिन मुस्ताकोव को फोन किया। कुछ उत्तेजना के साथ आपरेटर ने कहा :—

"छैसी आपसे बात करना चाहते है।"

रात्रि-कालीन निस्तब्धता में पूरे डिवीजन की सुपरिचित कर्नल सर्बीचेन्को की गहरी आवाज आई।

"ग्रेवकिन का क्या हाल है ?"

"लगता है कि सब ठीक है, कामरेड छैसी।"

"तो तुम्हारा हिस्सा शान्त है ?"

"जी हाँ, कामरेड छैसौ।"

"बुगोर्कोव के आदमी अभी वापिस नहीं लौटे ?"

"अभी नही, कामरेड छैसौ।"

एक पल रुकने के बाद डिवीजन कमान्डर ने कहा :—

"अच्छी बात है। जाओ कुछ देर सो रहो, मुस्ताकोव।"

"अच्छा कामरेड छैसो ।"

थोडी शान्ति के बाद फिर :-

"तो जर्मन शान्त है ।"

"सब शान्त है ।"

"ज्वालाएं ?"

"है, लेकिन ज्यादा नही ।"

"गोलीबार ?"

"थोडी-थोडी देर बाद ।"

"ऐसा तो नही लगता कि ...."

"नही, नही, कामरेड छैसो । हमेशा की तरह मामूली गोलीबार ।"

रिसीवर रखते हुए मुश्ताकोव ने कहा

"बुड्ढा चिंतित है ।"

अध्याय आठ

प्रभात ठंडा और कोहरे से आच्छादित था और चिड़ियों की ठिठुरती चहचहाहट से आलोडित ।

डिवीजन में पहुँची जानकारी के प्रतिकूल जंगल जर्मनों से भरा हुआ था । जहाँ भी नजर जाती ढेर सी ट्रकें, उससे भी अधिक मोटर बसे और ऊँची दीवार की दो घोडे वाली भारी गाडियाँ दिखलाई पडतीं । हर जगह सोते हुए जर्मन नजर आते । गले से बोलते हुए संतरी जोडों में जंगल के रास्तों पर पहरा दे रहे थे । स्काउटों के लिये एकमात्र शरण थी स्याह अंधीकार में लेकिन वह किसी भी क्षण उन्हे धोखा दे सकता था । जब तब दियासलाई या बिजली-बत्ती उसको चीर जाती, और त्रेविकन तथा उसके साथी संकट से भरी धरती पर लम्बे हो जाते। कटे हुए पेडो के ढेर में सरों को चुभने वाले काँटो पर उन्हे डेढ घंटा बिताना पडा ।

हाथ में बिजली-बत्ती लिये हुये नंगे पैर चलता एक जर्मन त्रेविकन के निकट आया । रोशनी बिलकुल उसके चेहरे के पास चमकी, लेकिन निंदासे जर्मन ने कुछ भी गौर नहीं किया । गले से आवाज करता और फू-फू करता वह अपना पैन्ट खिसका कर बैठ गया ।

ममोचकिन अपना छुरा निकालने को हुआ । त्रेवकिन ने यह देखा नही, लेकिन तेज हरकत उसने महसूस की और ममोचकिन की बाँह पकड़ ली ।

आदमी उठा और चला गया । जाते समय उसकी बिजली-

बत्ती ने जंगल के एक टुकड़े को रोशनी से भर दिया। और त्रेव-किन पेड़ों के बीच से एक ऐसा रास्ता चुन सका जहाँ बहुत कम जर्मन नज़र आते थे।

उन्हें उस जंगल के बाहर निकलना था, और जितनी जल्दी हो सके उतना अच्छा।

डेढ़ किलोमीटर तक वे करीब-करीब सोते जर्मनों के ऊपर से सरकते आगे बढ़े। रास्ते में उन्होंने अपनी कार्यपद्धति तय करली। जब कभी भी कोई जर्मन पहरेदार या अपने काम से इधर-उधर घूमते सैनिक नजदीक आते तो स्काउट जमीन पर चिपक जाते। दो बार रोशनियाँ बिलकुल उनके ऊपर फेंकी गईं, लेकिन जैसा कि त्रेवकिन ने आशा की थी, जर्मनों ने उन्हें अपना ही समझा। और इस प्रकार वे आगे बढ़ते गये——रेंगते हुए, सोते हुए, जर्मनों का अभिनय करते हुए और फिर रेंगते हुए। आखिर उन्होंने जंगल पार किया और प्रभात के कुहासे में उसके छोर पर पहुँचे।

यहाँ उनको झकझोर डालने वाला अनुभव हुआ। वे शब्द-शः तीन जर्मनों से जा टकराये, ऐसे तीन जर्मनों से जो सो नहीं रहे थे। अध-लेटे और अध-बैठे, अपने कम्बलों में लिपटे हुए वे एक ट्रक में बैठे बातें कर रहे थे। उनमें से एक की निगाह अचानक नज-दीक की झाड़ी पर पड़ी और वह स्तम्भित रह गया। निःशब्द, न इधर देखते न उधर, एक दूसरे के पीछे अलौकिक जलूस में, अजूबा पोशाकें पहने सात आदमी जगल के रास्ते पर बढ़े जा रहे थे—— नहीं आदमी नहीं, ढीले हरे कपड़ों में सात भूत जिनके चेहरे करीब करीब हरापन लिये पीले और मौत की तरह उदास थे।

इन हरी परिछाइयों की मायावी आकृति या शायद सबेरे के कुहासे में उनकी आकृतियों की अस्पष्ट रूप-रेखा ने उन्हें भुतहे-पन और अलौकिकता का स्वरूप प्रदान कर दिया था। उस समय

रूसियों, दुश्मनों की कल्पना तक उनके दिमाग में नही घुसी ।

"हरे भूत" वह डर कर चिल्लाया।

यदि त्रेवकिन या उसके साथियों ने जरा भी आश्चर्य या घबडाहट दिखलाई होती, हमले या रक्षा का जरा भी प्रयास किया होता तो जर्मन लोग सभवतः शोर मचा देते और धुधले जंगल का वह शोर एक द्रुत किन्तु खूनी कुश्ती का अखाड़ा बन जाता जहाँ सारी सुविधा असंख्य दुश्मनों के साथ होती । त्रेवकिन की रक्षा उसकी प्रत्युत्पन्नमति ने की । उसने तुरन्त निर्णय किया कि जब सिर्फ तीन ही जर्मनों ने उन्हे देखा है तो झगडा खडा करने मे कोई फायदा नही है, और यदि वह नजदीक वाले कुज मे पहुँच गया और वहाँ जर्मन न हुए तो इन तीनो के शोर मचा देने पर भी उसे भागने का मौका मिल जायगा । तर्क की जगह उसकी अन्तरात्मा ने उसे यह जता दिया कि इसी प्रकार कुत्ते के पास से डरकर नही भागना चाहिये क्योंकि वह तुरन्त तुम्हारे भय को भाप जाता है और जोरो से भौकने लगता है ।

निरतर निश्चिन्तता से कदम धरते हुए स्काउट स्तम्भित जर्मनो के सामने से गुजर गये । कुज में पहुँचते ही त्रेवकिन ने फुर्ती से इधर-उधर देखा और भागा । तेजी से कुज पार कर वे एक चौरस मैदान में निकले और दलदल की चिड़ियो को चौकाते हुए दूसरी कुज में घुस गये । यहाँ उन्होंने जरा दमली । अनीकानोव ने टोह लेकर पता लगाया कि आस-पास में कोई जर्मन नही है । थकावट से चूर-चूर आदमी जमीन पर बैठे और सिगरटें सुलगाईं । पिछली शाम के बाद से त्रेवकिन पहली बार बोला —

"पकडे जाते जाते बचे ।"

वह मुस्कराया । बोलना मुश्किल हो रहा था, रात भर के लम्बे मौन के बाद जबान भारी और अटपटी लग रही थी ।

उन्हें दस जर्मनों को थोडी देर पहले छोड़े हुए कुज को व्यग्रता से छानते देखने का सौभाग्य मिला। उसके पश्चिमी छोर पर पहुँचकर जर्मनो ने बड़ी गहराई से उस दलदली चौरस मैदान की ओर देखा जिसे अभी अभी स्काउटों ने पार किया था। फिर वे एक समूह मे जमा हुए, बातें की और हँसने लगे---शायद वे उन तीनों पर हँस रहे थे जिन्होने हरे भूत देखे थे---फिर उन्होने सिगरेट पी और लौट गये।

नये आदमियों---सेमियोनोव और गोलूब---ने घृणाभरे आश्चर्य के साथ जर्मनो की ओर देखा। पहली ही बार वे दुश्मन को इतने नजदीक से देख रहे थे। खुद त्रेवकिन नये स्काउटो को बडे गौर से देख रहा था। उनका आचरण ठीक था वे और लोगों की तरह ही व्यवहार कर रहे थे। हालाकि सेमियोनोव स्काउट के रूप मे नया था किन्तु वह काफी युद्ध देख चुका था, दो बार घायल हो चुका था, और पुराने सैनिक के भाति ठन्डे दिमाग वाला था। कुर्स्क का सत्रह-वर्षीय फुर्तीला, नन्हॉ गोलूब, जिसका बाप सोवियत अधिकारी था और जर्मनो द्वारा फॉसी चढा दिया गया था, हमेशा उत्तेजना की स्थिति मे रहता था। उसके धडकते दिल में अपने पिता के हत्यारों के प्रति सच्ची घृणा और मार्ग-दर्शकों, रेडइडियनो और साहसिक अन्वेषकों के रोमासवाद का अजीब मिश्रण था। स्थिति की विलक्षणता ने उसे उत्साह से भर दिया था।

ममोचकिन त्रेवकिन के लौह आत्म-नियंत्रण की सराहना किए बिना नही रह सका और अचानक, पिछले दिनों में पहली बार, उसे अपने खतरनाक लक्ष्य में सफलता का विश्वास महसूस हुआ। उसे याद आया कि कैसे उसने कल शाम कात्या से विदा ली थी। उसने त्रेवकिन का ध्यान रखने के लिए उससे अनुरोध किया था, और ममोचकिन ने आत्म-संतोष के भाव मे उसका कंधा थपथपा दिया था।

"चिन्ता मत करो, कात्यूशा", उसने कहा। ममोचकिन के साथ तुम्हारा लेफ्टिनेंट उतना ही सुरक्षित है, जितना सरकारी बैंक में।"

"लगता है कि बात उलटी है—इस लेफ्टिनेंट के साथ सुरक्षित तो ममोचकिन है।" उसने मन मे मजूर किया, और फिर प्रसन्न तथा धृष्ट नजरो से त्रेवकिन की ओर देखा। लेफ्टिनेंट के लिए सबमें बडा टुकडा बचाकर उसने सबको सासेज का एक एक टुकड़ा दिया। और उसके लिए अपनी बोतल से ग्लास भर वोडका उँड़ेली।

यह निश्चय करने के बाद कि कुन्ज मे एक भी जर्मन नही है, और बिलकुल निश्चिन्त होने के लिए पहरा बैठाकर अपना पहला रेडियो संदेश भेजने के लिए त्रेवकिन ने ब्रेजनीकोव की पीठ मे सेट उतारा।

उत्तर पाने में उसे काफी देर लगी। ईथर कडकड़ाहट और अस्पष्ट धमाको, बातो और संगीत के टुकड़ों से भरी हुई थी, और अपनी वेवलेन्थ के पास ही एक वेवलेन्थ पर उसे एक दृढ अधिकार पूर्ण जर्मन आवाज सुनाई पडी। वह सहसा चौक उठा—इतने नजदीक की वेवलेन्थ 'तारे' को पकडवा भी दे सकती है!

अन्ततः उसे एक मद्धिम आवाज सुनाई पडी। एक आवाज उसी शब्द को बार बार दोहरा रही थी :—

"तारा। तारा। तारा। तारा।"

त्रेवकिन और 'धरती' के सुदूर आपरेटर एक साथ प्रसन्नता से चिल्ला उठे।

त्रेवकिन ने कहा—"तुमसे कह रहा हूँ। इक्कीस उल्लू दो। इक्कीस उल्लू दो।"

सुदूर 'धरती' ने एक पल के मौन के बाद सूचित किया कि वह समझ गई है। अच्छी तरह समझ गई है।

ग्रेवकिन ने फिर कहा---"बहुत, बहुत से इक्कीस। इक्कीस अभी अभी पहुँचा है ।"

'धरती' वह भी समझ गई और उसने प्रतिःध्वनि की तरह दोहराया .---"बहुत, बहुत से इक्कीस !"

उत्साह बढ़ा । ऐसा मोर्चा पार करना , फिर जर्मनो से ठसाठस जगल, और उसके बाद रेडियो से संपर्क करना और इन जर्मनो के बारे में सूचना भेजना---यही जिन्दगी है ।

ग्रेवकिन बार-बार अपने साथियो के चेहरे पढ रहा था । वे उसके अधीनस्थ नही थे बल्कि वास्तविक साथी थे, उनमे से एक एक पर सबके जीवन निर्भर करते थे और उनका कमाडर, ग्रेवकिन उन्हे अपने से अलग इंसान न समझकर अपने ही शरीर के अग समझने लगा था । 'धरती' पर वह उन्हे अपने पृथक् जीवन बिताने की इजाजत दे सकता था, उनकी कमजोरियो को तरह दे सकता था---पर यहा इस एकाकी "तारे" पर वह और वे एक अभिन्न इकाई थे ।

ग्रेवकिन अपने से खुश था---अपने से, सात बार गुणा कर ।

अनीकानोव से सलाह कर उसने योजना मे अंकित गाॅव के लिए, जहाँ एक सडक रेलवे लाइन को काटती थी, तुरन्त प्रस्थान करने का निश्चय किया । यह सही है कि दिन में चलना खतरनाक था, पर गाँव और सडकें बचाते हुए वे जंगलो और दलदलो मे ही बढ सकते थे । जर्मन बहुधा ऐसे स्थानो से दूर रहते थे ।

जैसे ही वह कुज के पश्चिमी छोर पर निकले, स्काउटों ने जर्मनों के एक दस्ते को दलदल मे एक गडवाॅत में चलते देखा । यूनीफार्म सामान्य थी । गहरी हरी के बजाय काली थी, और उनके आगे चलने वाले अफसर का सुनहरा चश्मा धमकी भरे ढंग से चमक रहा था ।

"एम. एस लोग", अनीकानोव ने धीरे से कहा ।

"एस. एम" दस्ते के पीछे रसद के सामान से भरी बीस विशाल गाडियों की एक कतार थी ।

पास के जंगल मे घुस कर स्काउटो ने ताजे पहियो के चिन्ह देखे । उनका पीछा करते हुए वे सावधानी से एक जंगल तक गए । जहाँ उन्होंने बारह छिपाई हुई सैनिक वाहक हथियार बन्द-गाडियाँ देखी । पहियो के निशानो पर ताजी पडी धूल से पता लगता था कि दल अभी अभी ही यहाँ आया है । आदमियो के व्यवहार से भी यही पता चलता था । वे जगल मे शोर करते हुए इधर-उधर भाग रहे थे, पेड काट रहे थे, जलाने के लिए लकड़ियाँ चीर रहे थे और तम्बू खडे कर रहे थे—सक्षेप में, ऐसे कामो मे व्यस्त थे जिन्हे लोग किसी नई जगह पहुँचने पर किया करते हैं।

स्काउट रेंगते हुए इस खतरनाक जगल से बाहर निकले और उसके काफी दाहिनी ओर चक्कर लगाकर आगे बढे, पर यहाँ उन्होंने हथियारो से लदे हुए ट्रकों से भरा एक दूसरा जर्मन डेरा देखा ।

जगल की नई घास सिगरेट की डिब्बियो, डिब्बो, गोथिक टाइप मे छपे हुए समाचार-पत्रो के गन्दे टुकडो और खाली बोतलो से ढकी पडी थी—घृणास्पद, अजनबी जिन्दगी के निशानो से ढकी हुई । असख्य सकेत पेडो पर टगे हुए थे जिनमे अक "५" और अक्षर "W" वाले निशान ज्यादा सख्या में थे ।

उन्हे अँधेरे के लिए प्रतीक्षा करनी पडेगी—दिन में चलना असंभव है । जगह कठ से बोलते, सोते, चलते और सवारी करते जर्मनो, एकत्रित हुई जर्मन सेनाओ से ठसाठस है ।

त्रेवकिन तथा अन्य स्काउटों ने देखा कि जर्मन लोग ताजी फौजों को इन विस्तृत जंगलो के धुधलेपन मे छिपाकर कुछ तैयारी कर रहे है । शायद उन्होंने पहली बार अपने को सौपे गए काम के

पूरे महत्त्व व अपनी जिम्मेदारी की पूरी गहराई को समझा । शेष दिन एक गढ़े मे औंधाकर बिता देने के बाद शाम होते ही स्काउट फिर चल पडे ।

थोडी देर मे एक सुन्दर स्थान पर पहुँचे, जहाँ कई छोटी-बडी झीलें थीं, खूब ठंडक थी । किनारे बर्च के पेड़ो से सजे हुए थे । और मेंढको की आवाजों से सारी जगह अनुप्राणित थी ।

झील के नजदीक ही अखरोट के घने पेड़ों से ढँके हुए एक गड्ढे में त्रेवकिन ने रुकने का आदेश दिया । सामने के किनारे पर पत्थर का एक विशाल दुमंजिला मकान था । वहाँ से जर्मन भाषा सुनाई पड़ रही थी । एक पतली, कच्ची सडक मकान के दाहिनी ओर चली गई थी, और क्षितिज पर तार के खम्भो के बीच मुख्य सड़क थी ।

त्रेवकिन ने सड़क से थोड़ी दूर पर चौकसी बैठा दी । ट्रकें और कारें अटूट धार में गुजर रही थीं । उनकी चौकसी करना उपयोगी था । कभी-कभी यातायात एकाध घंटे के लिए रुक जाता और फिर पहले की तरह तेजी से चलने लगता । ट्रकें जर्मनों और मोमजामें से ढँकी हुई रहस्यमय चीजों से भरी हुई थीं । दो बार तोपें गुजरीं, जिन्हें ताकतवर मोटरें खींच रही थीं—कुल मिलाकर चौबीस तोपें ।

यातायात के इस प्रवाह को त्रेवकिन लगातार देखता रहा, कुछ लोग बारी-बारी से सो लेते थे और शेष त्रेवकिन के साथ बैठकर जर्मन सेनाओं की गिनती कर रहे थे ।

"कामरेड लेफ्टिनेंट", ममोचकिन ने अचानक अंधकार से प्रकट होकर कहा । "उस रास्ते पर एक गाड़ी जा रही है, जिसमें सिर्फ दो जर्मन हैं—और गाड़ी में खाने का सामान भी है । इजाजत दो तो हम उन्हें एक भी गोली चलाए बिना साफ कर दें ।"

त्रेवकिन सावधानी से उसके साथ हो लिया। सचमुच रास्ते पर एक गाड़ी धीरे-धीरे चली जा रही थी। दो अलसाते• जर्मन सिगरेट धौंकते हुए गप्पे मार रहे थे। एक·सुअर गाडी मे चिल्ला रहा था। काफी लोभ होता था इन जर्मनो को सफाया कर देने का। जैसे आमत्रण-सा दे रहे थे। लेकिन त्रेवकिन ने अफसोस से सिर हिला दिया।

"जाने दो इन्हे।"

ममोचकिन को चोट-सी लगी। हरचीज इतनी सुविधाजनक चल रही थी और वह लडने के मूड मे था। अपनी कुशलता दूसरो, खासकर अनीकानोव को दिखलाने के लिये व्यग्र था। उसने सोचा, जब चारों तरफ भेद देनेवाले मिल सकते है तो चक्कर खाने और लुकने-छिपने की क्या जरूरत ?"

धीरे-धीरे उगते सबेरे के साथ खास सड़क पर आवागमन बद हो गया।

अनीकानोव बोला—"यह लोग सिर्फ रात मे चलते रहे है, हमारे हवाई बेडे से छिपते है। लगता है कि यह पाजी किसी तैयारी में है।"

त्रेवकिन अपने साथियो को वापिस अखरोट की कुन्ज मे ले गया और सबेरे की सर्दी में ठिठुरते हुए स्काउटो कोनींद आ गई। सहसा झील के नजदीक खड़े मकान से चीखने, कराहने की आवाज आई।

न जाने कैसे मर्चेन्को का विचार त्रेवकिन के दिमाग मे चमक गया। फिर चीख की आवाज आई और तब शान्ति।

"मैं जाकर देखता हूँ कि वहाँ क्या हो रहा है ?" ब्रेजनीकोव ने सुझाव रक्खा।

त्रेवकिन ने उत्तर दिया, "जाना ठीक नही होगा। उजेला

हो रहा है।"

० सबेरा हो चुका था, और उषा की लालिमा झील पर झिलमिला रही थी। कुछ रोटी और सासेज खाने के बाद, जो ममोचकिन ने अपनी अतल जेबो से बरामद किए थे, स्काउट फिर सो गए।

लेकिन त्रेवकिन नही सो सका। वह झील के नजदीक खिसक आया और उसके बिलकुल नजदीक झाडियो मे निश्चल लेट गया। दूसरे किनारे वाला मकान धीरे-धीरे जागने लगा। लोग आगन मे चलने-फिरने लगे।

थोड़ी देर बाद उसमे से तीन व्यक्ति दरवाजे से बाहर निकले। सबमें लम्बे आदमी ने सलाम किया और घर से बाहर चलने लगा। एक चढ़ाव के पास पहुँचकर वह पीछे घूमा और दरवाजे के पास खडे दोनों आदमियों को हाथ मिलाकर अभिवादन किया और फर तेजी से कच्ची सड़क पर चलने लगा। तब त्रेवकिन ने देखा क उसकी पीठ पर एक थैला है, और उसकी बाई भुजा पर एक सफेद पट्टी।

त्रेवकिन के दिमाग से यह विचार कौंद गया कि सैनिक को बन्दी बना लिया जाना चाहिए। यह विचार से अधिक एक हार्दिक प्रेरणा थी जो किसी नाजी को देखते ही हर स्काउट में पैदा होती है। अचानक त्रेवकिन ने उस सफेद पट्टी तथा रात को स्काउटो को चौका देने वाली चिल्लाहट के बीच सबंध समझा। झील के पास का मकान एक जर्मन अस्पताल है। कच्ची सडक पर जाने वाला लम्बा जर्मन अस्पताल से छोडा गया है और अपनी यूनिट को वापिस जा रहा है। इस सिपाही के लापता होने का किसी को भी पता न चलेगा।

अनीकानोव और ममोचकिन जाग रहे थे। त्रेवकिन उनके पास पहुँचा और बिर्च पेड़ों के बीच से गुजरती हुई लम्बी आकृति की ओर

संकेत किया।

"हमें उस जर्मन को पकड़ना है।"

दोनो व्यक्ति चकित थे। हमेशा इतना सावधान रहने वाला लेफ्टिनेंट उन्हें दिन दहाड़े एक जर्मन को पकड़ने के लिए आज्ञा दे रहा है। त्रेवकिन ने घर की ओर इशारा किया :

"वह अस्पताल है", उसने समझाया।

उन्होंने सफेद पट्टी को धूप मे चमकते हुए देखा और समझ गए।

सोते हुए स्काउटों को उन्होंने जगाया और उसका रास्ता काटने के लिए जंगल के बीच से चल पड़े। वह सीटी बजाता हुआ चल रहा था, बसंती प्रभात का मजा लेता हुआ। काम असामान्य रूप से सरल था। छोटा गोलूब, जिसने इसके पूर्व कभी किसी "भेद देने वाले" को नही पकड़ा था, बहुत निराश हुआ। उसे तो जर्मन को छूने तक का मौका नही मिला। इसके पहले कि उत्तेजित गोलूब समझ सके कि क्या हो रहा है, जर्मन को बांधकर उसकी टोपी से उसका मुह बन्द कर दिया गया।

अखरोट के कुन्ज के गढ़े मे जर्मन जमीन पर पड़ा हुआ था। और उसकी नुकीली नाक आकाश की तरफ इशारा कर रही थी।

टोपी उसके मुह से निकाल ली गई। वह कराहा। जर्मन शब्दों का भारी रूसी आवाज के साथ उच्चारण करते हुए त्रेवकिन ने पूछा :

"तुम किस यूनिट के सदस्य हो ?"

जर्मन ने जवाब दिया—"१३१वी पैदल डिवीजन, सुरंग लगाने वाली कम्पनी का।"

स्काउट जानते थे कि यही डिवीजन अगली पंक्ति पर जमा हुआ है।

त्रेवकिन ने गौर से कैदी की ओर देखा। वह करीब २५ वर्ष

का नौजवान था, सन जैसे बाल थे और खास जर्मन पनीली नीली आँखे थी ।

उन पनीली आँखों की ओर घूर कर देखते हुए त्रेवकिन ने अपना दूसरा सवाल पूछा :

"क्या तुमने एस. एस लोगों को यहाँ देखा है ?"

"हाँ, हाँ", जर्मन ने ऐसी आवाज से जवाब दिया मानों उसे इस बात की खुशी है कि वह सब बाते जानता है । और अपने को घेरे हुए रूसियो की ओर उसने ज्यादा साहस से देखा । "उनके काफी लोग यहाँ हैं ।"

"वे किन यूनिटों के है ?" त्रेवकिन ने पूछा ।

"वाइकिंग टैंक डिवीजन के । जो एक बहुत ही प्रख्यात और मजबूत डिवीजन है, हिटलर की चुनी हुई सेना ।"

"हूँ..." त्रेवकिन ने कहा ।

स्काउट समझ गए कि त्रेवकिन ने कोई बड़ी महत्त्वपूर्ण बात का पता पा लिया है । हालाँकि कैदी को वाइकिंग डिवीजन की संख्या या उसके यहाँ केन्द्रीकरण के उद्देश्य का ज्ञान न था फिर भी त्रेवकिन उस सूचना के महत्व का अन्दाज लगा सकता था, जो उसने हासिल की थी । उसने सौहार्द्र की सी भावना के साथ इस जर्मन की ओर देखा और उसके कागज जाँचें । और इस तरुण आदमी, उदास-से लगने वाले इस रूसी को देखते हुए जर्मन को अचानक आशा की एक किरण दिख पडी । क्या मन को आकर्षित करने वाला यह तरुण सचमुच उसकी मौत की आज्ञा दे सकता है ?

त्रेवकिन ने अपनी आँखे जर्मन के सैनिक कागजो पर से उठाईं, और याद आया कि आदमी का खात्मा किया जाना है । उसके विचार को भांपकर कैदी सहसा चौका, फिर बड़ी वेदना के साथ बोला :

"मि० कम्यूनिस्ट, कामरेड ! मैं मजदूर हूँ। मेरे हाथों की तरफ देखो। विश्वास करो, मैं नाजी नही हूँ। मैं मजदूर हूँ और मजदूर का बेटा हूँ।"

जर्मन ने जो कुछ कहा था, अनीकानोव उसका आशय समझ गया, वह जर्मन भाषा का 'मजदूर' शब्द समझता था।

अपने घट्टेपडे हाथों को दिखलाकर वह कह रहा है—"मै मजदूर हूँ", अनीकानोव ने विचारपूर्ण ढंग से कहा। "इसका अर्थ यह है कि वह जानता है कि हम कामगारो का सम्मान करते है। वह जानता है कि वह किससे लड़ रहा है, और फिर भी हमसे लडते रहना जारी रखता है... "

अपने छुटपन से त्रेवकिन को कामगारो से प्रेम और उनका सम्मान करना सिखाया गया था, लेकिन लीपजिग के इस कम्पोजीटर को मारना ही पडेगा।

जर्मन ने त्रेवकिन की आँखो में दया और अटलता दोनो को पढ लिया। वह बुद्धू नही था। टाइप बैठाते हुए उसने बहुत सी ज्ञान भरी किताबे पढी थीं। और वह जानता था कि किस किस्म का आदमी उसके सामने खडा है। और दया भरी किन्तु अटल आँखो वाले इस सुन्दर तरुण के रूप मे मौत को देखकर वह रो पड़ा।

अध्याय नौ

उनके दिलों में क्या हो रहा था ? शायद वे खुद भी न बता सकते । जो कुछ भी असंबद्ध था, जो कुछ भी अतीत का था उनकी स्मृति से पुँछ चुका था, और यदि वह फिर कभी वापिस लौटता भी था, तो अस्पष्ट झलक के रूप में । वे केवल अपने काम के लिए जी रहे थे । किसी और चीज की ओर उनका ध्यान न था ।

अनीकानोव और गोलूब रास्ता दिखला रहे थे, उनके करीब ४० मीटर पीछे त्रेवकिन था, और फिर सेमियोनोव जो ट्रान्समीटर लिए था । उनकी बायी ओर, उनके मार्ग से समानान्तर दौड़ती खास सड़क के करीब करीब किनारे ममोचकिन और बायकोव थे, और दाहिनी ओर श्रेजनीकोव जंगल की तरफ से दल की रक्षा के लिए था । वे एक समद्विबाहु त्रिकोण के रूप में थे । त्रेवकिन जिसके आधार के केन्द्र में था और अनीकानोव शिखर पर । कभी-कभी जर्मनों की निकटता का अहसास कर त्रिभुज सिकुड जाता था और ज्यादा धीरे-धीरे चलने लगता था । और सैनिक रुक कर रात्रिकालीन आवाजों को गौर से सुनने लगते थे । जब कभी अनीकानोव चिडिया की बोली बोलता तो सब लोग जहाँ के तहाँ गडकर रह जाते ।

बायी ओर सडक पर ट्रकें और ट्रेक्टर गुजर रहे थे । जर्मन गीत, जर्मन गालियाँ और जर्मन आज्ञाएँ भी उन्हे सुन पड़ती थीं । कभी-कभी पैदल सेना पास से गुजरती और सिपाहियो की आवाज इतनी साफ सुनाई पडती कि उन्हें लगता कि अपना हाथ बढ़ाते ही वे किसी जर्मन को पकड़ सकते हैं, उसके चेहरे का स्पर्श कर सकते हे, और जर्मन सिगरेट से अपना हाथ जला ले सकते है ।

त्रेवकिन ने फिलहाल और "भेद देने वाले" न पकड़ने का दृढ निश्चय कर लिया था। वह समझता था कि वह अब दुश्मन की यूनिटों के बिलकुल बीचोबीच मे है। एक गलत कदम, एक अधदबी चीख—और पूरा एस. एस झुण्ड उन पर टूट पड़ेगा। वह जानता था कि वाइकिंग एस. एस टैंक डिवीजन वहाँ एकत्रित हो रहा है, लेकिन उसका बल या इरादा उसे मालूम न था। बल का मोटा अन्दाज वह यूनिटों, टैंकों और तोपखानो को गिनकर लगा सकता था, लेकिन उसके कमाड के इरादे तो काफी जानकारी रखने वाले किसी जर्मन को ही ज्ञात हो सकते थे। रेलवे स्टेशन को एक नजर देखने के बाद उन्हे ऐसे जर्मन की खोज करना पड़ेगी।

लेकिन त्रेवकिन की सावधानीभरी योजना अप्रत्याशित रूप से उलट-पुलट हो गई। उसने अचानक अपनी बायी ओर आवाज सुनी और फिर ममोचकिन अँधेरे से निकला और फुसफुसाकर रिपोर्ट दी।

"यहाँ सडक के किनारे एक जर्मन पडा हुआ है, नवाब की तरह पिए हुए है.. "

"पिए हुए" जर्मन की ओर एक नजर ने ही त्रेवकिन को बतला दया कि हुआ क्या था। वह असावधानी से भटक कर झाड़ी मे पहुँच गया था और ममोचकिन ने उस पर चोट कर उसके हथियार उतार लिए।

"वह सीधा मुझसे टकराया", ममोचकिन ने थोड़ा सिटपिटाकर खुलासा दिया। "मै क्या कर सकता था ?"

बहस के लिए समय नही था। कैदी को उठाकर वे जंगल में घुस गए। जर्मनो की आवाजे—जो रूसी कानों के लिए अजीब थी—अपने खोए साथी को पुकारती सुनाई पडने लगी थी। "उहू-हू-हू-हू-हू। उ हू-हू-हू'।"

"'विली बाल्ड ! विली बाल्ड !!"

"हेर ब्रेनेक !"

उन्होंने कैदी को झील के पास घास पर लिटा दिया। ममोचकिन ने थोड़ा पानी उसके ऊपर छिड़का। और अपनी बोतल से थोडी वोडका देने में भी कजूसी नही की। वह बड़ा खुश था और "अपने" जर्मन के बारे मे डीग हाँक रहा था और उसे आकाश पर चढा रहा था :

"यह सचमुच एस. एस. का आदमी है, यह सब जानता है...... देखो न कामरेड लेफ्टिनेट ! यह अफसर है, कसम से कहता हूँ, अफसर है।"

जर्मन को उत्सुकता से देखते हुए युरा गोलूब ने अपनी नन्ही सी नाक निराशा से सिकोड़ी और व्यथित हो लम्बी साँस छोड़ी।

"हर कोई 'भेद देनें वाले' पकड़ लाता है, पर मेरे हाथ एक भी नही आता।"

"चिंता मत करो, गोलूब", दूर पर अस्त होती हुई पुकार को ध्यान से सुनते हुए अनीकानोव ने कहा। "ढेर से लोग आसपास है, तुम्हारा भी अवसर आएगा।"

जर्मन अफसर भयभीत आँखो से त्रेवकिन की ओर देख रहा था। काँपते और हकलाते हुए उसने बतलाया कि वह पाँचवे वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन की नौवी पश्चिमी क्षेत्र मोटर रेजीमेंट मे है--यानी वही जो कि उसके सेना के पत्रों मे दर्ज था, जिन्हे ममोचकिन ने उसकी जेब मे पाया था। उसने आगे बतलाया कि पश्चिमी क्षेत्र रेजीमेट मे चार-चार कम्पनी वाली तीन बटालियनें है और "भारी हथियार वाली रेजीमेंटो" के पास छः और दस नली वाली तोपें है। रेजीमेंट में कोई टैंक नहीं है--और रेजीमेंटों के पास भी है या नही, वह नही जानता। डिवीजन युगोस्लाविया से आया है। हेडक्वार्टर

थोडी ही दूर पर एक गाँव में है लेकिन नाम वह नहीं जानता क्योंकि रूसी और पोल नाम उसे याद नही रहते। उसको केवल "मास्को" और "वार्सा" याद है। उसने चुनौती भरे स्वर अजीब में कहा।

"संरक्षक" ममोचकिन के हाथ का एक तमाचा मुंह पर खाकर उसका वह आत्म नियंत्रण टूक-टूक हो गया, जो उसने क्षण भर के लिए जमा पाया था, और वह जानवर की तरह चिंघाड उठा। ममोचकिन उसे मौत से भी अधिक भयावह लगने लगा था। ममोचकिन का उसके ऊपर झुकना ही काफी होता और वह काँपता और याचना भरी नजर से त्रेवकिन की ओर देखने लगता।

जर्मन अफसर जब झील मे फेंक दिया गया तो त्रेवकिन ने 'धरती' से सपर्क किया।

इस बार बिलकुल साफ साफ सुनाई पड रहा था और उसने जमा की हुई सब जानकारी भेज दी।

'धरती' से आने वाली आवाजों को सुनकर त्रेवकिन को **पता** चला कि उसने जो जानकारी भेजी, वह अप्रत्याशित थी और बहुत महत्वपूर्ण समझी गई थी। अन्त में एक नारी स्वर सुनाई पडा और उसने कात्या को पहचान लिया। कात्या ने उसकी सफलता और जल्दी वापसी की कामना की।

"हम तुम्हे अपना प्यार भेजते है", उसने भावुकता और उसकी सफलता से पैदा गर्व से कांपती हुई आवाज में कहा। और फिर मानों अचानक उसे लगा कि जो कुछ उसने कहा, उसका उनके काम से कोई सीधा संबध नहो है। और उसने पूछा "समझे, क्या ? क्या समझे ?"

"मैं समझ गया", उसने उत्तर दिया।

"जब सबेरा हुआ तो स्काउट एक रेलवे विराम के निकट थे, जो उनके इच्छित स्टेशन से सात किलोमीटर दूर था।

इस विराम पर ईंटो का बना और पीला पुता और चीड के मोटे लट्ठो के दोहरे बाड़े से घिरा एकमंजिला मकान मात्र था। इसी किस्म का बचाव उस लकड़ी के छोटे पुल के दोनो तरफ बना हुआ था जो विराम से ज्यादा दूर नही था। इन साधनो द्वारा जर्मन अपने-सचार साधनो की पार्टीजन हमलों से रक्षा करना चाहते थे

ट्रकों की एक लम्बी कतार विराम के सामने खड़ी थी। जिसका पिछला छोर उस जंगल तक चला गया था, जिसमे से स्काउट इतने तड़के प्रकट हो रहे थे। गहरी निःस्तब्धता मे उन्होने मकान मे टेलीफोन की घटी और मोटी जर्मन आवाज सुनी।

जगल मे दो दिन भटकने के बाद, धुधले क्षितिज तक दौड़ी जाती रेलवे लाइन, तार के खभे और प्वाइटो के काले त्रिकोण देखना बडा सुखद था।

पूर्व निश्चित चिड़िया की आवाज से स्काउटो को रुकने का संकेत कर अनीकानोव सरकता अन्तिम ट्रक तक पहुँचा और झाककर ड्राइवर की खिडकी मे देखा। वह खाली था। अगले दो का भी यही हाल था। वे छत तक आटे के खाली बोरों से लदे हुए थे।

अनीकानोव ने लौटकर त्रेवकिन को सूचना दी।

उसने कहा, "वे माल भरने आए है, ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे है।"

त्रेवकिन ने भी ट्रेन के लिए प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। पर कोई गाड़ी प्रकट नही हुई। थोड़ देर बाद निदासे ड्राइवर मकान के बाहर निकले और आलस से बाते करते हुए अपनी अपनी ट्रको की ओर चले।

सवेरे की निश्चलता मे साफ-साफ सुनाई पड़ने वाली बातचीत के अंशो को सुनकर त्रेवकिन बतला सकता था कि ट्रके यहाँ नही, स्टेशन पर भरी जाएँगी, और व रवाना होने ही वाले है। स्टे-

शन जर्मनो से भरा होगा ; अपने सब आदमियो को खतरे में डालने में कोई अक्लमदी न थी ।

उसने अनीकानोव और बायकोव को इस काम के लिए चुना, फिर युरा की मिन्नतो को मानकर उसको तीसरे सदस्य के रूप में भेज दिया ।

"सवारी पर बैठकर चलेगे", अनीकानोव ने कामकाजी ढग से कहा ।

तीनो आदमी रेंगकर आखरी ट्रक के पास पहुँचे और फुर्ती से उसमे चढ गए । अनीकानोव ने सावधानी से बायकोव और गोलूब को बोरो से ढक दिया और फिर खुद भी उसमें घुस गया—उसने बाहर देख सकने के लिए एक सध छोड दी और अपनी टोमीगन तैयार कर ली ।

शीघ्र जर्मन ड्राइवर टहलता हुआ ट्रक के पास आया । वह चक्के पर अपनी जगह जा बैठा । अपने सामने वाली के चलने की प्रतीक्षा की, इगनिशन का खटका गिराया और स्टार्टर दबाया, इजिन घरघराने लगा ।

कतार खाचो पर धमकती हुई जगल की सडक पर आगे बढी । इस प्रकार वे करीब १५ मिनट तक चले । सहसा ड्राइवर ने ब्रेक लगाया ।

अनीकानोव ने जर्मन भाषा सुनी और दो जर्मनो को बगल से चढकर ट्रक के अन्दर कूदते देखा । स्काउटो के सौभाग्य से जर्मन अपनी एस एस की काली वर्दी पर आटा लगने से डरते थे । वे बोरो से बचकर पिछले तख्ते पर जा बैठे । ट्रक उछलती और झूमती चल रही थी । और जब-तब बोरो के नीचे से मानव आकृतियाँ दिख जाती थी । अनीकानोव व्यग्र होने लगा । उसके अनिमंत्रित सहयात्री शायद ठेठ विराम तक उनके साथ जाना चाहते हो । उससे मामले के काफी उलझ जाने की आशका थी ।

अचानक एक हलचल ने उसके विचारों को भग कर दिया। ट्रक थम गई, काफी दौडा-दौडी हो रही थी। पिछले तख्ते पर बैठे जर्मन जमीन पर कूद पड़े।

दूसरे ही क्षण अनीकानोव ने हवाई जहाज के एँजिनों की नियमित भनभनाहट सुनी। आदतन उसने भी सिर नीचे छिपा लिया, फिर सहसा मुस्कराहट के साथ उसे याद आया—यह तो अपने हैं।

और मानों सोवियत बम अपने आदमियों को कोई हानि न पहुँचा सकते हो, उसने बाहर झांकते हुए खुश होकर अपने साथियों से कहा :

"यह अपने यान हैं।"

छः हवाई जहाज थे और डरावने ढंग से गुरजते हुए जंगल के ऊपर झुककर चक्कर लगा रहे थे।

अनीकानोव ने इधर-उधर देखा। सब जर्मनों ने झाड़ियों में पनाह ली थी। एँजिनों की घबडाई हुई सीटियाँ साफ सुनाई पड रही थीं। स्टेशन बिलकुल नजदीक था।

"मेरे पीछे आओ!" अनीकानोव ने आज्ञा दी और वे नीचे कूदे।

ट्रकों के बीच से भागते हुए स्काउट एक गड्ढे में कूद पड़े, बाहर निकले और फुर्ती से जंगल की गहराइयों में घुस गए। किन्तु जिस एक क्षण वे गढे में थे, वहाँ पड़े एक जर्मन ने उन्हें देखा और पहले क्षण के स्तंभित करने वाले मौन के बाद उसने अपना सिर उठाया और पागलों की तरह चिल्लाया :

"छतरी-फौज!"

अनियंत्रित गोलियाँ चल उठीं। स्काउटों ने अपनी टॉमीगनों के कई हल्लों से उत्तर दिया।

एक चौड़ा मैदान पार करने के बाद अनीकानोव ने गोलूब के

चेहरे को पीला पड़ते देखा। अपनी नन्ही नाक सिकोड़ता हुआ वह जमीन पर गिर गया।

"हम उस जर्मन को पकड़ सकते थे...." अनीकानोव द्वारा उसे अपनी पीठ पर लाद लिए जाने पर उसने कहा।

अपने जख्म के बाद यह उसके पहले शब्द थे और उसके छोटे जीवन के आखरी। एक डमडम गोली उसके सीने को दिल के नीचे पार कर गई थी। और यद्यपि वह बेचारा दिल अब भी धड़क रहा था, वह हर क्षण कमजोर होता जा रहा था। इसके बाद एक बार फिर उसे होश आया और उसने त्रेवकिन के तने हुए चेहरे को अपने ऊपर झुके हुए और ममोचकिन की आँसू भरी बड़ी आँखों को देखा।

एक तूफान जंगल पर फूट पड़ा। घने हरे पत्तों से लदे ओक वृक्ष हवा के तूफानी झोंको से फड़फड़ा रहे थे, और पानी की असंख्य बूदे स्काउटों के पैरों के पास चूहो की तरह दौड़ रही थी।

दम तोड़ते हुए गोलूब के पास त्रेवकिन निश्चल बैठा हुआ अनीकानोव की प्रतीक्षा कर रहा था जो इस बार ममोचकिन के साथ फिर स्टेशन का चक्कर लगाने गया था। इस दुखद घटना के बाद त्रेवकिन अपने दल को बाँटना नही चाहता था। लेकिन जब तक गोलूब जीवित था, उसे अकेला नहीं छोडा जा सकता था और काम भी तो करना ही था।

उसने 'धरती' के साथ संपर्क करने की कोशिश की पर असफल रहा। शायद आकाशीय बिजली बाधा डाल रही थी। सुनने वाले यंत्र में ईथर की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी और बीच बीच में सूखी चट-चट की ध्वनि आती थी।

पैरो के नीचे छोटी छोटी नदियाँ बह निकली। भारी बूदें त्रेवकिन के कधों पर गिर रही थी। मूसलाधार पानी ने धूल और

वेदना के आखरी निशान लडके के भाव शून्य चेहरे से धो डाले थे और वह अँधेरे मे चमक रहा था।

अनीकानोव और ममोचकिन रेंगते हुए स्टेशन के बहुत करीब तक पहुँच गए। रह-रह कर कौधने वाली बिजली की चमक मे उन्होंने दो माल गाड़ियाँ खड़ी देखी। उनमे से एक के खुले चबूतरे पर टैंकों के मजबूत ढाचे दिखलाई पडे।

एँजिनो ने भाप के बादल उगले और पटरियों पर चिनगारियाँ बिखेर दी। कटीले तारों से घिरे हुए गोदामघर के आसपास आदमियों की रेलपेल थी और वे जीमतलाने वाली अपनी जर्मन भाषा में बाते कर रहे थे। फिर उन्हे संतरियों के चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी, जो बोरे लादे हुए यूक्रेनी किसान औरतों के एक झुण्ड को रेलवे लाइन के बाहर खदेड़ रहे थे। औरतों की चीखे और शिकायते भी स्काउटों को सुनाई पड़ रही थी।

"यह कुत्ते कही भी जाने नही देते है।"

अनीकानोव अपने से गुस्सा था। क्यों वह उस मनहूस ट्रक में बैठना चाहता था? अगर वह उस पर सवार नहीं होता तो शायद गोलूब अब भी जिन्दा होता। साइबेरिया में वह टायगा* पर बैठने का आदी था, फिर वह ट्रक मे क्यों बैठना चाहता था....?"

जर्मन लोग टैंक उतार रहे थे। स्पष्ट था कि किसी बड़े हमले की तैयारी हो रही है। लेकिन किधर—यही प्रश्न था। यदि वे एक और जर्मन पकड़ पाते तो संभवतः वे एस. एस. डिवीजन के इरादों का पता लगा सकते।

अनीकानोव ने सोचा, "सामने जिधर देखो जर्मन ही जर्मन घूमते दिखाई दे रहे है। लेकिन उनमें से कौन अपने डिवीजन के लक्ष्य की जानकारी रखता है? यदि किसी छुटभइए को पकड़ लिया तो फिर हमें कोई तत्व की बात नही मिलेगी।"

---

*एक सवारी।—

दो लम्बे, दुबले जर्मनो ने, जो चमकते हुए चौड़ लबादे ओढे हुए थे, अनीकानोव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। बिजली की चमक में वे कभी साथ साथ, कभी अलग, तीखे स्वर में आदेश देते हुए दिखलाई पडते थे—निश्चय ही सब काम उनके हाथ में था। साफ जाहिर था कि वे अफसर है और निकटतम माल गोदाम की पिछली दीवार के पास खड़ी कार में आए है।

वर्षा मे कॉपते हुए अनीकानोव ने गोलूब के बारे में सोचा—क्या वह अब भी जिन्दा है ? बेचारा पानी में पड़ा होगा। अगर उसके लिए भी एक बरसाती मिल सके, जैसी कि वे जर्मन ओढ़े हैं—तो कितना अच्छा हो।

"एक अफसर पकडें क्या ?" अनीकानोव ने ममोचकिन से पूछा।

"लेकिन लेफ्टिनेट ? उसने 'भेद देने वाला' पकड़ने के बारे मे कुछ नही कहा था।"

अनीकानोव ने अपने साथी के चेहरे की ओर गौर से देखा।

"पलक झपते हम एकको पकड़ लाएँगे", उसने मुलायमियत से कहा, "और तुरन्त घर चल देंगे।"

ममोचकिन थर्रा उठा। सैकड़ों उमड़ते जर्मनो के खिलाफ वे केवल दो थे। और इन सैकडों के बीच से—उन दोनों को—एक अफमर पकडना है....? वह काँपने लगा। फिर भी उसकी ओर गहरी नजर से देखते हुए अनीकानोव ने दोहराया :—

"सच, हम पलक झपते काम कर सकते है।"

ममोचकिन ने निराशा से कंधे उचकाए, फिर एक गहरी साँसली और उठ खड़ा हुआ। वह अपने आपके प्रति सराहना से भर उठा और आघात करती हुई वर्षा की ओर मुह उठाकर व्यग्रता से जल्दी जल्दी बोला :

"चलो, कर डालें, वान्या....कर डाले। ठीक है, वान्या,

हम सब कर लेंगे। जरूर कर लेंगे, क्यों न ?"

वे कार की ओर रेंग चले, कँटीले तार के नीचे मे सरके और छिप गए। पालिश की हुई चेसिस पर से पानी नीचे झर रहा था।

"मुझे लगता है, उन जर्मनों में से एक जनरल है", ममोचकिन अपनो को दिलासा देते हुए फुसफुसाया।

"निश्चय ही वह जनरल है", अनीकानोव ने 'राहत' की आवाज से कहा।

कम से कम एक घंटा बीत जाने के बाद कहीं पैरों की चाप सुन पड़ी, और अफसरों मे से एक ने कहा :—

"बस हम चलते ही है।"

सीने में अनीकानोव का छुरा खाकर वह गिर पड़ा। दूसरा अपने चेहरे को ममोचकिन के धौंकनी की तरह धड़कते दिल से सटा पाकर स्तंभित रह गया और बेहोश हो गया।

आसपास मौजूद जर्मन मोटी धाराओं में बरसते पानी के नीचे ठिठुरते हुए मालगोदाम और ट्रेनों के बीच दौड़-धूप कर रहे थे।

अध्याय दस

पाँचवाँ वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन उत्कृष्ट एस. एस. फौज का सर्वोत्कृष्ट डिवीजन था।

ग्रूपेन फ्यूरर (एस. एस. के लेफ्टिनेंट–जनरल) हर्बर्ट हिल के कमांड में नवाँ पश्चिम क्षेत्र मोटर रेजीमेंट, दसवाँ जर्मानिया मोटर रेजीमेंट, पाँचवाँ टैंक रेजीमेंट, पाँचवाँ चलता फिरता तोपखाना बटालियन और पाँचवाँ मैदानी तोपखाना रेजीमेंट से मिलकर बना यह डिवीजन इस घने जंगल में अपने प्रथम कोटि के औजारों के गौरव से सज्जित होकर गुप्त रूप से एकत्रित हो रहा था। एक आकस्मिक हमले द्वारा वह कोवेल कस्बे को घेरे रूसी व्यूह को तोडेगा, रूसी सेनाओ को एक दूसरे से अलग टुकडों मे बाट देगा, उन्हें तितर-बितर कर देगा और उन्हे वापिस दो प्रसिद्ध नदियो—स्टोखोड और स्टाइर—पर वापिस ढकेल देगा।

मजबूत कुमक और साठ नए टाइगर टैंक—जिन्हें हेर रीच मिनिस्टर स्पीअर "टैंकों का राजा" कहते थे—प्राप्त हो जाने के बाद डिवीजन में अब १५ हजार आदमी थे। रेजीमेंटों की कमांड स्टेन्डर्टेन्डेन फ्यूरर मुलन कैम्फ के हाथों मे थी जिसकी कई बार स्वयं फ्यूरर स्टेन्डर्टेन्डेन फ्यूरर गार्गीस जो पहले हिटलर का व्यक्तिगत सहसेना अध्यक्ष था, तथा हिटलर के अन्य भेदियों के द्वारा प्रशंसा की जा चुकी थी, जो राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी और सैनिक शासक दल में ऊँचे पदों पर थे, और निर्मम तथा कुशल षड़यंत्रकारी थे।

लेफ्टिनेंट–जनरल निकेल द्वारा संचालित ३४२वाँ हथगोला डिवीजन—जो वाइकिंग के समान उत्कृष्ट न होने पर भी बढ़िया

डिवीजन था—शीघ्र ही फ्रांस से आने वाला था। और यह डिवीजन एस. एस. फौजों की सफलता का लाभ उठाता।

हमले की पूरी तैयारी बहुत ही गोपनीयता के साथ की जा रही थी।

"रूसी लोग गवर्नर-जनरल के प्रांत के बहुत निकट बढ़ आए है", यूपेन फ्यूरर हिल को उसके संरक्षक, एक एस. एस. कोर के कमांडर वान दे बाख ने बर्लिन के निकट अपने महल पर हिल से बातें करते हुए बतलाया—"और इसका नतीजा पार्टी के बफादार हिल, तुम स्वयं समझ सकते हो। इसका अर्थ होगा, यूरोप भर में जर्मन विरोधी ताकतों का सक्रिय होना, और शायद यह अंग्रेजों तथा अमरीकियों को भी सक्रिय कदम उठाने पर मजबूर कर दें....। फ्यूरर तुम्हारे काम को बहुत महत्त्वपूर्ण मानता है। हेडक्वार्टर चाहता है कि सेनाओं के जमाव का काम अतिशय गोपनीयता से किया जाय। पूरी सतर्कता से काम लेना।"

अब, अपने डिवीजन को कोवेल के पश्चिम के धुंधले जंगलों में एकत्रित कर लेने के बाद अपने को सौंपे गए काम की सफलता के पूर्ण विश्वास के साथ हिल अगले आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा था।

हाँ, वह यह अच्छी तरह जानता था कि अब उसका डिवीजन १९४० या १९४३ जैसा नहीं रहा है। जातीय पवित्रता के सिद्धांत को छोड़ देना आवश्यक हो गया है। बात अप्रिय होने पर भी सच थी कि नीदरलैंड और हंगेरी के लोग और पोल तथा क्रोटवासी तक उसके डिवीजन में शामिल थे। यह सच है कि यह विदेशी "नई व्यवस्था" के परखे हुए समर्थक है, तथापि वे रीख के हितों के प्रति उदासीन विदेशी जातियों के लोग हैं। इसके अलावा आदर्श शरीर के सिद्धांत को भी ढीला करना पड़ा था। काली कोर के सैनिक ६ फुट कुछ इंच ऊँचाई वाले दैत्य नही थे, जो पूरी जर्मनी

मे चुनकर लाए गए हों। अब वहाँ ऐसे पिद्दी नमूने थे जिनकी ओर देखने मात्र से ग्रूपेन फ्यूरर हिल का जी खराब हो जाता था।

जर्मानिया मोटर रेजीमेंट का निरीक्षण करते समय हिल ने स्तंभित होकर देखा कि कई आदमी ऐसे है, जिनमें से कुछ की एक आँख नदारत है। कुछ लंगड़े है, और एक कुबड़ा तक है—और आधी से ज्यादा रेजीमेंट के लोग [छोटे शरीर वाले है....हाँ, यह खून और सरल लूटपाट से मदमत्त हिटलरवादी सेना के लोग नही थे जो विनाश और हत्या की आग हॉलैंड और फ्रास में फैलाकर काकेशस पहाड़ तक जा पहुँचे थे।

हर्बर्ट हिल को उन दिनों की बात याद करना अच्छा लगता था, जो अब इतने सुदूर लगते थे। उसे काकेशस सबमे अधिक भाया था—उस शानदार दक्षिणी प्रदेश का गौरवशाली सौन्दर्य स्विटजरलैड से कई गुणा अधिक था। एक समय हेर ग्रूपेन फ्यूरर ने तो उन उपजाऊ पहाडों के गवर्नर के शान्ति पूर्ण पद का स्वप्न तक देख डाला था और फ्यूरर के अमले में काम करने वाले अपने संरक्षकों द्वारा उसने उस आरामदेह नौकरी के लिए उचित जमीन भी तैयार कर डाली थी। लेकिन सारी दुनियाँ को ज्ञात कारणो की वजह से उसे मजबूरन यह स्वप्न त्यागना पडे।

बात अजीब जरूर थी लेकिन बसन्त के उस प्रभात के प्रारम्भ से ही उसका दिल भारी था। पहले तो दुश्मन के जहाज आए। उन्होंने कोई बम नही गिराए क्योंकि वे केवल टोह लेने आए थे। रूसी जहाजो ने गौर से जंगल को देखा, कई बार रेलवे लाइन पर उड़े और स्टेशन पर जहाँ माल उतारने का काम हो रहा था, कई चक्कर लगाए, यह सही है कि सेनाएँ अच्छी तरह छिपी हुई थी, लेकिन यह बात ही कम आशंकाजनक नही थी कि रूसी लोग इस स्थान में इतनी रुचि ले रहे थे।

जब उसने सुना कि मेकलनबर्ग का हाप्सचर फ्यूरर बेनेक, जो एक अनुभवी सैनिक था और पश्चिम क्षेत्र मोटर रेजीमेंट के उत्कृष्ट योद्धाओ मे से था, रात को प्रयाण के समय झील प्रदेश में लापता हो गया तो उसकी आशंका ने और भी साकार रूप ग्रहण कर लिया। लम्बी खोज के बाद उसका शव डिवीजन हेडक्वार्टर से आठ किलोमीटर दूर एक छोटी झील में पड़ा पाया गया था। हेर हाप्सचर फ्यूरर के सीने में एक छुरा घुसा हुआ था और उसके सिर पर किसी भारी चीज के जख्म थे।

यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि ग्रूपेन फ्यूरर ने बाद मे सोवियत हवाई जहाजों द्वारा हेडक्वार्टर के गाँवों पर बम वर्षा को बेनेक की हत्या की घटना से जोड लिया। उसने घबडाकर अपना हेडक्वार्टर जंगल मे स्थानान्तरित कर लिया और आदेश दिया कि उसे कटीले तारों के तेहरे चक्र से घेर दिया जाय।

उसी शाम को––जब स्टॉफ सर्जन लिडमेन ग्रूपेन फ्यूरर को शव परीक्षा की रिपोर्ट दे रहा था, पश्चिम प्रदेश मोटर रेजीमेंट से एक और रिपोर्ट आई कि हाप्सचर फ्यूरर विलीबाल्ड अर्नस्ट बेनेक के साथ घटी दुःखद घटना के निकट ही जंगल को छानते समय सिपाहियों को अखरोट के घने कुन्ज में एक और शव मिला–१३१वी पैदल सेना डिवीजन के कार्पोरल कार्ल हिल का शव (नामों में इस अरुचिकर साम्य ने हेर ग्रूपेन फ्यूरर के मन को खराब कर दिया)!

थोड़ी ही देर बाद जर्मानिया मोटर रेजीमेंट के कमाडर स्टेन्डर्टेन्टेन फ्यूरर मुलेन कैम्फ ने स्वयं फोन द्वारा सूचना भेजी, कि हरी लिबास वाले दो अज्ञात व्यक्तियो के साथ मुठभेड़ में दो प्राइवेट––गेसनर तथा मीसनर––घायल हो गए। मीसनर बुरी तरह से। स्टेन्डर्टेन फ्यूरर ने यह भी बतलाया कि सैनिकों ने एक मत से यह कहा कि रहस्यमय व्यक्तियों पर बरफ जमी हुई थी।

ग्रूपेन फ्यूरर ने आदेश दिया कि हर मामले की सावधानी से जॉच की जाय और अज्ञात व्यक्तियों की अच्छी तरह तलाश की जाय। इस काम के लिए उसने हर बटालियन द्वारा एक कम्पनी दिए जाने और डिवीजन की टोह लेने की पूरी टुकड़ी को काम मे जुट जाने की आज्ञा दी।

ग्रूपेन फ्यूरर ने नाराजी के साथ सुना कि सैनिको मे इस बात की अफवाहें फैल रही है कि उस प्रदेश में हरे भूत और हरे जिन्न है।

ग्रूपेन फ्यूरर हिल को इन अशरीरी प्रेतात्माओ मे कतई विश्वास न था। उसने टोह लेने और टोह विरोधी विभाग के प्रधान कैप्टेन वर्नर को बुलवाया और उसको बतलाया कि युद्ध मे भूत पिशाच नही होते किन्तु शत्रु अवश्य होता है, और उसे आदेश दिया कि, 'भूतो' का पता लगाने का काम व्यक्तिगत रूप से अपने हाथ मे ले।

उसी रात ठीक स्टेशन पर ही जहाँ एक टैंक रेजीमेट गाड़ी से उतर रही थी, स्वय ग्रूपेन फ्यूरर के व्यक्तिगत मुआइने के दो घंटे बाद स्टर्म्बन फ्यूरर* डिल (अपने नाम के साथ इस नाम की ध्वनि के साम्य ने फिर हेर हिल के दिल को कचोटा) की हत्या कर डाली गई और डिवीजन का एक प्रमुख क्वार्टर मास्टर ओबर स्टर्म फ्यूरर‡ आर्टर बेन्डेल का हरण कर लिया गया। बेचारे हेर हिल की हत्या सीने मे इतनी ताकत से छुरा भोक कर की गई थी, कि छुरा उसके बदन के पार निकल गया। यह सब हुआ था स्टेशन पर व्यस्त ढेर से अफसरो और सैनिको की नाक के नीचे।

ग्रुपेन फ्यूरर ने पहरे पर तैनात संतरियों और अफसरों को पंद्रह दिन की हवालात की सजा दी। फिर कैप्टेन वर्नर को बुलाया और अपराधियों को पकड़ने में काफी उत्साह न दिखलाने के लिए करारी फटकार दी।

---

*एस. एस. मेजर।

‡एस. एस. सीनियर लेफ्टिनेट।

जब गोला बारूद वाली ट्रेन नष्ट हुई, शायद जिसका सबब था पटरियों का खराब होना---और जब जर्मानिया रेजीमेंट के तीन सैनिक विषाक्त भोजन से मर गए और जब उसी रेजीमेंट के दो और सैनिक भाग गए तो इन सबका श्रेय "हरे भूतो" को दिया गया और सच तथा कल्पना, दिमागी सूझ तथा असलियत के बीच पता लगाना कठिन हो गया ।

इसके संभावित नतीजों से घबडाकर ग्रूपेन फ्यूरर ने कोर हेड-क्वार्टर तथा केन्द्रीय सैन्य कमान के कमांडर फील्ड मार्शल बुश को यह सूचना देने की आज्ञा दी कि रूसियों ने तोड़ फोड़ करने वाले स्काउटों की एक टुकड़ी जर्मन सेनाओं के बीच भेजी है और १३१वें पैदल डिवीजन के ढीलेपन के कारण यह स्काउट वाइकिंग डिवीजन पड़ावों के बीच तक घुस आए हैं और संभव है उन्होने सैन्य एकत्रीकरण के उद्देश्यों के बारे में कुछ जानकारी हासिल कर ली हो ।

कुछ सोच विचार के बाद हेर ग्रूपेन फ्यूरर ने बर्लिन में ओबर ग्रूपेन फ्यूरर बान दे बाख को एक व्यक्तिगत पत्र भी लिखा, जिसमें वह अपने संरक्षक को खुश करने के साथ ही अपने काम के असफल हो जाने की स्थिति में उसकी मदद भी पा सके । बर्लिन में आराम करने वाले बहुत से अफसरो को हेर हिल का स्थान ग्रहण करने में हर्ष होता ।

दूसरे दिन के अन्तिम पहर मे टेलीफोन की सतत टनटनाहट ने ग्रूपेन फ्यूरर को अपनी भोजनोपरान्त की नींद से जगा दिया ।

कैप्टेन वर्नर ने सूचित किया कि जर्मन टुकड़ी और हरे भूतो के बीच अभी अभी मुठ-भेड़ हुई है । डिवीजन कमांडर के आदेशो के अनुसार यह टुकडी अन्टरास्टम फ्यूरर* अल्लेन-वर्ग के नेतृत्व में जिलों को छान रही थी कि एक जंगल के किनारे उन्हें एक अकेला घर

*एस. एस. लेफ्टिनेंट ।

दिखलाई पड़ा। कई लोग अन्दर गए पर कुछ नहीं मिला। अन्टर-स्टर्म फ्यूरर की मुस्तैदी को यह श्रेय है कि उसने घर के ऊपरी खंड में हरे भूतों का पता लगा लिया। हाँ वे वहीं थे। किन्तु अभाग्य-वश अल्टेनवर्ग की टुकडी पर दस्ती बमों से हमला कर और अन्टर-स्टर्म फ्यूरर सहित सात आदमियों की हत्या करके निकल भागने में सफल हो गए। लेकिन एक तो जिले की हर यूनिट में खतरे की सूचना भेजी जा चुकी है और भूतों का पता लगाने का मजबूत इंतजाम किया गया है अतः आशा है कि वे या तो पकड़े जाएँगे, या मार डाले जाएँगे। दूसरे, डाकुओ मे से एक सैनिको के हाथ मे पड़ गया है— नही, जिन्दा नही बल्कि अभाग्यवश, मृत अवस्था मे।

थोड़ी देर विचार करने के बाद हिल ने अपनी मोटर लाने की आज्ञा दी और एक टैंक के सरक्षण में वह घटनास्थल के लिए रवाना हो गया।

जंगल के किनारे एक दहकते मकान के खंडहरों के पास कैप्टेन वर्नर तथा टोह लेने की टुकड़ी के एस. एस. सैनिक ग्रूपेन फ्यूरर को मिले।

उनके अभिवादनों का प्रत्युत्तर दिए बिना हिल चुपचाप मृत दुश्मन के पास पहुँचा। वह एक रूसी था, उम्र तेईस से अधिक नहीं, सीधे सुनहले बाल और बडी-बड़ी चौड़ी आँखे शान्ति के साथ ग्रूपेन फ्यूरर की ओर देख रही थी। हरे लबादो (ग्रूपेन फ्यूरर ने नोट किया कि वह सोवियट टोह लेने वालो की गर्मी की वर्दी है) के नीचे वह सोवियत सेना का धुधला कोट पहने हुए था जिस पर जूनियर सार्जेंट की पट्टियाँ लगी हुई थी।

थोड़े अन्तर पर आठ एस. एस. सैनिक कतार में पड़े हुए थे, मानों वे सैनिक निरीक्षण में हों। उनके हाथ सीने पर रखे हुए थे। हेर ग्रूपेन फ्यूरर ने नाराजी से देखा कि आठ में से पाँच व्यक्ति

छोटे कद के और कमजोर दिखने वाले हैं.... क्या यही लोग एस-एस. काली सेना के सैनिक है ?

त्रेवकिन इस बात से अनभिज्ञ था कि उसने जर्मन सेना के इतने उच्चपदस्थ अफसरों के बीच इतनी हड़कम्प मचा दी हैं। एक त्रिकोण की शक्ल मे वापिस लौटते समय उन्हें रह रहकर एस. एस. टुकड़ी के लोग इधर उधर गन्ध लेते जरूर नजर आ जाते थे और एक दूसरे को आवाजे लगाते सुनाई पडते थे किन्तु स्काउटों ने समझा कि वे अभ्यास कर रहे हैं। और उन्होने उसका अपने साथ कोई संबंध नही जोडा।

जर्मनो के बीच में अपने चौथे दिन के तीसरे पहर स्काउट एक एकाकी घर के पास पहुँचे। त्रेवकिन ने अपने साथियो को विश्राम देने और साथ ही 'धरती' से संपर्क करने का निश्चय किया। खूब साव-धानी रखने और आस-पास ठीक तौर से नजर रखने की खातिर वे सड़ी सीढी पर चढ कर---जो अनीकानोव के भार से लगभग टूट गई थी---ऊपरी खड मे पहुँचे।

त्रेवकिन ने यत्र को मिला लिया था और 'धरती' से संकेतों का आदान-प्रदान भी कर लिया था कि सहसा उसे ब्रेजनीकोव की पुकार सुनाई पडी, जिसे उसने छत पर एक छेद मे पहरे पर बैठा रखा था। त्रेवकिन उसके पास पहुँचा और उसने लगभग बीस एस. एस. सैनिको को फैले हुए आकार मे मकान के निकट आते देखा।

त्रेवकिन ने अपने साथियों को जगाया जो अभी हाल ही गहरी नीद मे पड़े थे, लेकिन उसने पाया कि अब नीचे कूदकर जंगल में गायब हो जाने का समय नहीं रह गया है। एस. एस. सैनिक बहुत नजदीक आ पहुंचे थे। उनमें से चार घर में दाखिल हुए, उन्होंने खाद मे इधर उधर झाककर देखा और बाहर आ गए। लेकिन तुरन्त ही वे फिर लौटे और उनमे से एक बड़बड़ाता और हाँफकर गाली

देता हुआ सड़ी सीढ़ी पर चढ़ने लगा ।

दोनो हाथों में रिवाल्वर थामे हुए त्रेवकिन साँस रोककर खड़ा हो गया । छत में असंख्य छेदो और दरारों के कारण ऊपरी खंड मे काफी उजेला था । पहले की अपेक्षा अधिक गहरी नजर से उसने अपने साथियों की ओर देखा । वे एक निराला दृश्य थे । थके, आँखें गढों में, हजामत बढ़ी हुई––वे मौत से लड़ने के लिए तैयार खड़े थे । सडी सीढी चरमराई, जर्मन ने धीरे से गाली दी ।

एक भयानक शब्द । अनीकानोव ने छत के एक छेद द्वारा मकान के पास घेरे में खडे हुए एस. एस. सैनिको पर एक जर्मन–नाशक बम फेंक दिया । उसी समय ब्रेजनीकोव ने अपनी टॉमीगन से एस. एस. सैनिक के सिर को दरवाजे से ऊपर निकलते ही फोड़ दिया, अपने साथियो सहित वह शहतीरों और धूल के बादलो मे नीचे कूद पड़ा ।

पलक झपते त्रेवकिन ने एक स्काउट की नजर से अनीकानोव की सूझ को समझ लिया—बाहर खडे हुए दुश्मन पर दस्ती बम फेक कर इस प्रकार पीछे हटने के लिए रास्ता बना दिया था । मकान के अन्दर वाले तीन एस. एस. सैनिको से निबटना सरल था––विस्फोट से सहमकर घटनाओ का सिर पैर ही उनकी समझ मे नही आ रहा था ।

एक क्षण बाद स्काउट चीड के एक कुन्ज की ओर भागे––जर्मनों की चिल्लाहट, गोलियाँ और देर से फेंके गए बम उनका पीछा कर रहे थे । पहले तो त्रेवकिन ने यह ख्याल ही नही किया कि ब्रेजनीकोव उनके साथ नही है, और अनीकानोव तथा सेमियोनोव जख्मी है । जब वे भाग रहे थे तो हाँफते हुए अनीकानोव ने उसे ब्रेजनीकोव के बारे में बतलाया । मकान से बाहर निकलते समय उसने ब्रेजनीकोव को गिरते देखा था ।

उनका पीछा खत्म नही हुआ । ऐसा प्रतीत होता था मानों चारों तरफ से उनका पीछा किया जा रहा है । गोलियाँ और चिल्ला-

हट की प्रतिध्वनि पूरे जंगल में गूंज रही थी। फिर उन्होंने कुत्तों के भूकने की आवाज सुनी और फिर दाहिनी ओर कहीं मोटर साइकिलों की भनभनाहट कान में आई। पीठ मे जख्मी अनीकानोव बुरी तरह हाँफ रहा था। सेमियोनोव का लंगड़ाना बढता चला जाता था।

वर्षा से धुला हुआ जंगल खुशबू से तर था। नमी से संपक पत्तियों और घास ने जाड़ो की याद दिलाने वाली ताजगी त्याग दी थी। असली बसन्त आ गया था। वर्षा से धुली-सी एक मृदु बयार पत्तियों को झुला रही थी और बसन्त के अपने मीठे गीत गुनगुना रही थी।

पीछा करने की आवाजें बन्द हो गई और जख्मी आदमियों की फुर्ती से मलहम पट्टी की गई। ममोचकिन ने आखिरी बोतल अपने सामने की जेब से निकाली और उसे हिलाया। कुछ बूंद अब भी बाकी थे। बोतल उसने अनीकानोव को पकड़ा दी।

उन्होंने देखा कि बायकोव की पीठ पर लदा हुआ ट्रान्समीटर एक दर्जन गोलियों द्वारा टुकड़े टुकड़े हो चुका है। उसने बायकोव की जान बचा ली पर उसका कोई उपयोग नही रहा। बायकोव ने उसे अपनी टॉमीगन के कुन्दे से खत्म कर दिया और टुकड़े झाड़ी में इधर उधर फैला दिए।

वे शराबियों की तरह झूमते हुए आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ने लगे।

त्रेवकिन के पीछे चलते हुए सहसा ममोचकिन बोला :

"कामरेड लेफ्टिनेंट ! मैं आपसे माफी चाहता हूँ।"

बार-बार अपनी छाती पर घूंसे मारते हुए और शायद रोते हुए—क्योंकि अँधेरे के कारण कुछ भी कहना कठिन था, उसने धीमी और भरी आवाज में कहा :

"यह सब मेरी गलती है। सब मेरी। कोई झूठ ही थोडे हमारे मछुए भाग्य मे विश्वास करते हैं। उनकी बात हमेशा सच होती है। वे दोनो घोड़े मैंने वापिस गाँव मे नही पहुँचाए थे। मैंने उन्हे खाने की चीज़ें लिए भाड़े पर उठा दिया था....."

ग्रेवकिन ने नही कहा।

"मुझे माफ करो, कामरेड लेफ्टिनेंट। यदि मैं सलामत वापिस लौटूं....."

"अगर तुम सलामत वापिस लौटे तो तुमको दलेल पल्टन में भेजा जायगा," ग्रेवकिन ने कहा।

"मैं जाऊँगा। खुशी से जाऊँगा। और मैं जानता था कि तुम यही कहोगे। मैं जानता था कि कुछ भी क्यों न हो, तुम यही कहोगे" ममोचकिन प्रशसा मे चिल्लाया।

और दुर्बोध कृतज्ञता तथा आत्मविस्मृति की बदहोशी के झोंके मे उसने ग्रेवकिन का हाथ जोर से दबाया।

पीछा करने वालों की आवाज बिलकुल उनकी बगल मे सुनाई पड़ी। वे जमीन से चिपक गए। दो बख्तरबन्द गाड़ियाँ गड-गड़ाती हुई निकल गईं। उसके बाद शान्ति छा गई और वे लोग फिर आगे बढ़ने लगे। अनीकानोव का विशाल आकार आगे नजर आ रहा था। अपने बलिष्ट कंधो से शाखाओ को अलग हटाते हुए वह आगे बढ रहा था और अद्भुत इच्छा शक्ति के द्वारा उस अर्द्ध विस्मृति से लड़ रहा था जो उसे धर दबाने के लिए प्रयत्नशील थी।

संभव है कि अपने जीवन के अनुभवों से सीख पाकर केवल उसने ही यह भाप पाया था कि चारों ओर फैली शान्ति छलनापूर्ण है। यह सच है कि उसे यह नही मालूम था कि वाइकिंग एस. एस. डिवीजन का पूरा टोह लेने वाला दस्ता ३४८वी बममार डिवीजन का अगला टुकड़ा, जो दिनरात चलकर वहाँ पहुँचा था, और १३१वें पैदल

सेना के पिछले यूनिट---सब के सब उनकी खोज कर रहे है । उसको यह भी मालूम नहीं था कि अविराम टेलीफोन टनटना रहे है और रेडियो ट्रासमीटर संकेतो की कर्णकटु भाषा में सतत बातचीत कर रहे है । किन्तु उसने महसूस किया कि पीछा करने वालों की रस्सी का फंदा कसता जा रहा है ।

हर क्षण चुकती हुई शक्ति के साथ वे आगे बढ़ रहे थ । पता नही था कि वे निकल भाग भी सकेंगे या नही । लेकिन इसका अब कोई महत्व नही रह गया था । खास बात तो यह थी कि सोवियत सैन्य पर अकस्मात चोट करने के लिए एकत्रित होने वाली भयानक वार्हकिग डिवीजन का खात्मा अब निश्चय है । उनकी ट्रके, टैन्क, सैनिकों को ले जाने वाली बख्तर बन्द गाड़ियाँ, जोर-जोर से चमक उठने वाला चश्मा पहने वह एस.एस. सैनिक, जिन्दा सुअर को अपनी गाड़ी में ले जाते वे जर्मन, जो उनींदों की तरह खाना खाते हैं, गले से गड़गड़ाकर बोलते है, जंगल को गन्दा करते हैं, सब हिल, मुलेन कैम्फ, गरगीज यह सब ऊँचे चढ़ने के इच्छुक, नुकसान पहुँचाने के लिए आई हुई यह सेनाएँ, यह जल्लाद और हत्यारे---गह सब लोग जगल की सड़कों द्वारा सीधे अपने काल की ओर बढ़ रहे हैं ।

मौत का प्रतिहिंसक हाथ उन १५ हजार लोगों के ऊपर गिरा ही चाहता है ।

अध्याय ग्यारह

'तारे' के साथ सपर्क रखने वाला ट्रांसमीटर एक एकाकी खदक मे जमा हुआ था । जूनियर लेफ्टिनेंट मेस्चरस्की दिन और रात वही बिताया करता था । सोता वह बहुत ही कम था । सिर्फ कभी कभी अर्द्ध निद्रा में अपना सिर अपनी बाहो पर टिका लेता था लेकिन तब भी वह यही स्वप्न देखता रहता कि वह ईथर की गड़गड़ को अपने कानो से सुन रहा है । और अपनी लम्बी बरौनियो को झपझपाता हुआ वह जाग पड़ता और ड्यूटी पर बैठे हुए आपरेटर से घबडाकर पूछता :

"क्या वे बोल रहे हैं ?"

आपरेटर तीन पालियो मे काम करते थे । लेकिन अपनी पाली खत्म हो जाने पर भी कात्या वहाँ से न टलती । उसका सुन्दर चेहरा उसके धूप से तपे हाथों पर टिका होता और वह मेस्चरस्की के साथ सकरी पट्टी पर बैठे प्रतीक्षा करती रहती । कभी कभी वह गुस्से के साथ ड्यूटी पर बैठे हुए आपरेटर के साथ बहस करती कि उसने 'तारे' की वेवलेन्थ खो दी है, और बोलने वाला यंत्र उसके हाथ से छीन लेती । फिर खंदक की नीची छत के नीचे उसके शान्त और मनुहार युक्त शब्द सुनाई पड़ते

"तारा । तारा । तारा । तारा ।"

नजदीकी वेवलेन्थ पर कोई अविराम गति से जर्मन भाषा मे गड़गड़ा रहा था और उससे थोड़ा आगे बातें करने, गाने और वायलिन के स्वर सदैव जागरूक, शक्तिशाली और अजेय मास्को से सुनाई पड़ रहे थे ।

दिन में कई बार डिवीजन कमांडर चक्कर लगा जाता था। खंदक और गोदाम के बीच स्काउट बार बार आते जाते रहते थे। लेफ्टिनेंट बुगोर्कोव रोज आता था, कभी कभी मेजर मजीडोव भी उसके साथ होता। दिवाल के सहारे खड़ा होकर वह चुपचाप आपरेटर को निहारता रहता। और फिर घटाएक के बाद चला जाता।

अक्सर मेजर लिखाछेव ड्यूटी पर बैठे आपरेटर का काम खुद अपने हाथ में सँभाल लेता। कभी कभी कैप्टेन वाराशकिन कुछ मिनटों के लिए अन्दर आता और छोटी खिड़की के पास खड़ा होकर अपनी उँगलियों से टक टक करता रहता। और अपनी प्रख्यात नोटबुक से कोई गीत गुनगुनाने लगता। एकबार अभिन्न कैप्टेन मुश्ताकोव और कैप्टेन गुरेविच भी अगली पाँत से वहाँ आ पहुँचे।

पडताली अफसर कैप्टेन यास्किन ने खंदक में प्रवेश किया—यास्किन चेचक–दाग, उन्नतोदर माथे के नीचे छिपी पैनी आँखों और पिद्दी दिखने वाला शान्त व्यक्ति था।

"क्या टोह लेने वाले दल के कमांडर आप ही हैं ?" उसने मेस्चरस्की से पूछा।

"मैं कार्यवाहक कमांडर हूँ।"

पड़ताली अफसर ने बतलाया कि किसानों से नाजायज तौर पर घोड़े जब्त करने के मामले से संबंधित कई आदमियों से वह जिरह करना चाहता है। उसने संक्षेप में मामले का खुलासा दिया और पूछा कि क्या मेस्चरस्की इस कुकर्म का महत्त्व समझता है जो स्थानीय जनता की नजर में सोवियत सेना के मान को नीचा गिराने वाला है।

मेस्चरस्की के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वह कहता गया, "इसलिए मुझे उन स्काउटों खासतौर से लेफ्टिनेट त्रेवकिन और सार्जेंट ममोचकिन—से सवाल पूछना जरूरी है, जो इस नाजायज काम के समय वहाँ मौजूद थे।"

"वे इस समय यहाँ नही है", मेस्चरस्की ने किंचित अधीरता से कहा ।

"उनमें से कोई भी नही ?"

"नही ।"

पड़ताली अफसर ने एक क्षण के लिए सोचा ।

"लेकिन उनसे बात करना जरूरी है ।" उसने कहा । "क्या वे जल्दी लौटेंगे ?"

"मुझे मालूम नहीं", मेस्चरस्की ने धीमे से उत्तर दिया ।

सहसा कात्या नजदीक आकर बोली :

"अच्छा हो यदि आप वहीं चले जायें, कामरेड कैप्टेन, जहाँ वे लोग है, और उनसे पूछताछ कर डाले ।"

"कहाँ है वे ?" कैप्टेन यास्किन ने पूछा ।

"जर्मनों के बीच में ।"

पड़ताली अफसर ने कात्या की ओर निश्चल, विनोदशून्य आँखों से तरेरा ।

नाराजीभरी और विजय-युक्त मुस्कराहट के साथ उसने भी उत्तर में उसकी ओर देखा ।

मेस्चरस्की भी हँस दिया, लेकिन उसने अचानक महसूस किया कि यदि कमांडिंग अफसर इस व्यक्ति को जर्मनों के बीच में जाकर पड़ताल का काम पूरा करने का हुक्म देगा, तो यह आदमी चला भी जायगा ।

तीसरे दिन 'तारा' बोला—त्रेवकिन द्वारा सीमा पार करने के के बाद दूसरी बार । संकेत की उपेक्षा कर त्रेवकिन बार बार दोहरा रहा था :

"पाँचवाँ वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन यहाँ जमा हो रहा है । नवें पश्चिम क्षेत्र मोटर रेजीमेंट के एक बन्दी ने बतलाया कि

पाँचवाँ वाइकिंग एस. एस. टैंक डिवीजन यहाँ जमा हो रहा है ।"

फिर उसने पश्चिम क्षेत्र रेजीमेंट की रचना, डिवीजन के हेडक्वार्टर की स्थिति बतलाई और जोर दिया कि यूनिटें बराबर उतर रही हैं और केवल रात ही में चल फिर रही हैं। उसने फिर दोहराया, कई बार दोहराया :

"पाँचवाँ वाइकिंग एस एस टैंक डिवीजन यहाँ जमा हो रहा है । गुप्त रूप से जमा हो रहा है...."

ग्रेवकिन की रिपोर्ट ने डिवीजन में एक तहलका मचा दिया । और जब कर्नल सर्बीचेन्को ने स्वयं सेना के जी. ओ. सी. और कर्नल सेमियोकिन को फोन किया तो सेना के हेडक्वार्टर में भी हलचल मच गई ।

लेफ्टिनेंट कर्नल गालीव, टुकड़ियों, सेना, और निकटस्थ डिवीजनों के फोनों का उत्तर देते-देते सोना ही भूल गया । उसने सर्दी से काँपना बन्द कर दिया और भेंड की खाल का बना अपना लबादा उसने उतार फेंका । वह खूब बातूनी, सख्त तथा खुश दिखने लगा । "गालीव को हिटलरवादियों की गन्ध आ रही है", सैनिकों ने कहा ।

उस बीच हजारों नक्शों पर नीली पेन्सिलों ने उस जिले पर निशान लगा दिए थे जहाँ पाँचवाँ वाइकिंग डिवीजन जमा हो रहा था । सेना के हेडक्वार्टर से यह रिपोर्ट मोर्चे के हेडक्वार्टर के पास गई और वहाँ से मास्को में सर्वोच्च कमांडर के पास ।

डिवीजन तथा कोर हेडक्वार्टर द्वारा ग्रेवकिन की सूचना सर्वोच्च महत्त्व की मानी गई किन्तु सेना के हेडक्वार्टर ने हालाँकि उसे महत्त्वपूर्ण माना पर वह निर्णायक नहीं थी । सेना के जी. ओ. सी. ने ताजी आई हुई कुमक को उन डिवीजनों को भेजे जाने की आज्ञा दी जिनके ऊपर एस. एस. सेनाओं का हमला होने की संभावना थी । उसने अपनी अतिरिक्त सेना भी संकटापन्न क्षेत्र को भेज दी ।

मोर्चे के हेडक्वार्टर ने उक्त सूचना को कोवेल जक्शन पर अभी जर्मन गिद्धदृष्टि का पुष्टीकरण माना। मोर्चे के हेडक्वार्टर ने हवाई बेड़े को आज्ञा दी कि वह संबधित क्षेत्रों की टोह ले और उन पर बमबारी करे। कई टैंक तथा तोपची यूनिटो द्वारा उसने "क्ष" सेना को और भी मजबूत कर दिया।

सर्वोच्च कमाड ने, जिसके लिए वाइकिंग टैंक डिवीजन तथा पूरा जंगली इलाका पूरे चित्र में कुछ कणों से अधिक नही थे, तुरन्त भाप लिया कि इस जाल के पीछे गहरा अर्थ छिपा है—जवाबी हमले द्वारा जर्मन लोग यह चेष्टा कर रहे है कि सोवियत सेनाएँ पोलेंड पर न बढ़ सकें। मोर्चे की बॉयी बाजू मजबूत करने और एक टैंक सेना, एक घुड़सवार कोर तथा कई तोपची डिवीजन वहाँ स्थानान्तरित करने के लिए आदेश दे दिए गए और इस प्रकार त्रेवकिन के इर्द-गिर्द लहरें चौडी होने लगी और धरती पर फैलते-फैलते सुदूर मास्को और दूरस्थ बर्लिन तक जा पहुँची।

डिवीजन के लिए तत्काल फल यह हुआ कि एक टैंक रेजीमेंट, रक्षकों का एक रेजीमेट और राकेट, बम तथा सैनिकों एव हथियारों की भारी कुमुक वहाँ पहुँच गई। स्काउटो के लिए भी कुमुक पहुँची।

मेम्चरस्की ने अपने आदमियो के साथ जमकर अभ्यास कार्य शुरु कर दिया। और अपना आधा समय अग्रिम पंक्तियो से दुश्मन पर नजर रखने में व्यतीत करने लगा। बुगोर्कोव और उसके सुरंग वालों ने "निर्जन प्रदेश" मे सुरंग बिछा दी। मेजर लिखाछेव दिन-रात नए ट्रासमीटर, टेलीफोन और तार सहेजने में लगा रहता। कर्नल सर्वीचेन्को अपनी निरीक्षण चौकी पर चला गया और वहाँ से यूनिटो की कार्यवाहियों को संचालित करने लगा। वह ज्यादा तरुण और ज्यादा संजीदा दिखने लगा—जैसा कि बडी मुठभेड के पहले हमेशा होता था। बड़ी देर तक और गहराई के साथ उसने अभी

आए हुए नक्शों का, जिनमे विस्तुला तक पूरा पोलैंड दिखलाया गया था, अध्ययन कर डाला । इन सुदूर भागों में वह हो आया था—१९२० में बुड्योनी की पहली घुड़सवार सेना के हाथ ।

केवल कात्या एकाकी खदक मे जमी रही ।

रेडियो के ऊपर उसके अन्तिम शब्दो का त्रेवकिन ने जो उत्तर दिया, उसका क्या अर्थ था ? उसका यह कहना कि "मै समझ गया" जो कुछ उसने सुना था, उसकी सामान्य पुष्टि मात्र था या उसके शब्दों का कोई निश्चित गुप्त अर्थ था ? सबसे अधिक यही विचार उसके दिमाग मे छाया था । उसे लगा कि घातक संकटो से घिरे होने के कारण वह निश्चय ही सामान्य मानव भावनाओ के प्रति अधिक निकट आ गया होगा । और रेडियो पर उसके वे अन्तिम शब्द ऐसे परिवर्तन का फल भी हो सकते है । अपने विचारो पर वह हँस पड़ी । सेना के सहायक डाक्टर उल्वीशेवा से आइना लेकर वह उसमें बडी देर तक देखती रही और ऐसा संजीदा और गभीर भाव चेहरे पर लाने की कोशिश करती रही जो एक वीर की वधू—उसने यह शब्द खूब जोर से कहे—के उपयुक्त हो । फिर आइना देखकर वह फिर शोर करते अन्तरिक्ष मे अपने भावों के अनुसार कोमलता हर्ष और विषाद से दोहराने लगी ·

"तारा । तारा । तारा । तारा ।"

उस स्मरणीय बातचीत के दो दिन बाद 'तारे' ने फिर उत्तर दिया :

"धरती ! धरती !! तारा बोल रहा है । क्या तुम सुन रही हो ? मै हूँ तारा ।"

"तारा । तारा ।" कात्या जोर से चिल्लाई—"मै हूँ धरती । मै सुन रही हूँ, मै सुन रही हूँ"

उसने हाथ बढ़ाकर दरवाजे को पूरा खोल दिया जिसमे किसी को बुलाकर अपने हर्ष में साझीदार बना सके। लेकिन कोई भी वहाँ नही था। उसने पेन्सिल हाथ मे दबाई और लिखने के लिए तैयार हुई। लेकिन एक शब्द के बीच मे ही 'तारे' की आवाज टूट गई फिर कुछ भी नहीं बोला। कात्या पूरी रात जागती रही लेकिन 'तारा' मौन था।

'तारा' दूसरे दिन और अगले सब दिन भी मौन रहा। कभी कभी मेस्चरस्की खंदक में आ जाता, कभी बुगोर्कोव या मजर लिखाछेव, या कैप्टेन यार्कविची जो बाराशकिन की बर्खास्तगी के बाद उसकी जगह टोह लेने की टुकडी का प्रधान बना था, लेकिन 'तारा' मौन था।

पूरे दिन कात्या औंघाती हुई सुनने के यन्त्रों को अपने कान से लगाए रहती। अजीब अजीब सपने और कल्पनाएँ उसे आती—हरे छिपावटी लबादे पहने हुए पीला त्रेवकिन, चेहरे पर बर्फीली मुस्कान लिए हुए ममोचकिन, उसका भाई लियोन्या भी—न जाने क्यो हरे छिपावटी लबादे ओढ़े हुए। वह काँपती हुई जाग पड़ती कि कहीं ऐसा न हो कि वह त्रेवकिन के संकेत न सुन पाए और वह फिर बोलने वाले यंत्र में जोर जोर से पुकारने लगती :

"तारा। तारा। तारा।"

दूर से तोपो की गरज उसके कान मे पड़ी—शुरू होते युद्ध की गरज। इन कठिन दिनो मेजर लिखाछेव को रेडियो आपरेटरो की सख्त जरूरत थी लेकिन कात्या को उसकी इंतजारी से हटाने का दिल न हुआ। और इस प्रकार करीब करीब विस्मृत वह एकाकी खदक में जमी रही।

एक काफी रात गए बुगोर्कोव आया। वह त्रेवकिन के नाम उसकी माँ का एक पत्र लाया था जो अभी अभी वहाँ पहुँचा था। उसकी माँ ने लिखा था कि "मुझे तुम्हारे प्रिय विषय भौतिक

शास्त्र की नोटबुक मिल गई है । इसे मैं सँभालकर रखूंगी । जब तुम कालेज मे दाखिल होगे तो वह काफी काम देगी । नोटबुक बहुत बढ़िया है उसे तो पाठ्य पुस्तक के रूप में छपाया जा सकता था—बिजली और गर्मी वाले अध्याय बहुत शुद्धता और होशियारी से लिखे हैं । मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि तुम्हे विज्ञान के लिए खास रुझान है । और हाँ, तुम्हें उस बढ़िया पनचक्की की याद है, जो तुमने उस समय बनाई थी, जब तुम बारह वर्ष के थे ? उसके नक्शे अचानक मेरे हाथ पड़ गए और उस पर चाची वलावा और हम काफी हँसे ।"

बुगोर्कोव ने पत्र को जोर से पढा । फिर सहसा वह रेडियो पर झुका और रुँधी आवाज मे बोला —

"कितना अच्छा हो कि युद्ध जल्दी खत्म हो जाय...नही मैं थका नही हूँ । मैं यह नही कहता कि मै थक गया हूँ । लेकिन अब तो लोगों की हत्या बन्द हो जाना चाहिए ।

सहसा कात्या ने सिहरकर महसूस किया, शायद यहाँ उसकी इंतजारी और 'तारे' के लिए अनन्त पुकार बेकार है । तारा डूब गया है, टूट गया है ।

लेकिन वह जायें कैसे ? अगर वह फिर बोला तो ? हो सकता है कि वह कही जंगल में छिपा हुआ हो ।

आशा और लौह-दृढ़ता के साथ वह इंतजार करती रही । अब कोई और इंतजार नही कर रहा था—केवल वही थी । और किसी ने प्रयाण शुरू न हो जाने तक वहाँ से यंत्र हटाने का साहस नहीं किया ।

उपसंहार

१९४४ के ग्रीष्म मे सोवियत सेनाएँ ढलती जर्मन सेना के प्रतिरोध को कुचलती हुई पोलैंड की धरती पर आगे बढी चली जा रही थी ।

मेजर जनरल मर्शेन्को अपनी जीप द्वारा स्काउटों के एक दल के पास पहुँचा । एक दूसरे के पीछे वे सडक के किनारे अपने हरे छिपावटी कपड़ो में चल रहे थे—फुर्तीले और सावधान, किसी भी क्षण मौन खेतो और जगलो, धरती की सिलवटो, गोधूलि की चंचल छाया मे लीन हो जाने के लिए तैयार ।

स्काउटो के दल के नेता के रूप मे उसने लेफ्टिनेंट मेस्चरस्की को पहचान लिया । हमेशा की तरह स्काउटो को देखकर उसका चेहरा प्रफुल्लित हो उठा और उसने मोटर रोक दी ।

"कहो मेरे शेरो", उसने कहा ।" वारसा निकट है । और बर्लिन केवल ५०० किलोमीटर रह गया है । मिनटो की बात है, शीघ्र ही हम वहाँ होंगे ।"

उसने स्काउटों की ओर गौर से देखा फिर किसी दुःखद स्मृति से विचलित होकर उसने कुछ कहने का प्रयास किया लेकिन अपने को रोकर उसने हाथ हिलाया ।

"अच्छा, विदा, स्काउटो !"

कार चल दी और एक क्षण ठहर स्काउट भी प्रयाण पर चल दिए ।

——०'समाप्त:०——

हमारे प्रकाशन

१ शांति के लिये अपील (कोसाम्बी) -)

२ शांति सैनिकों की नई प्रतिज्ञा (बर्लिन प्रस्ताव) =)

३ रूस का लौह आवरण (डी. एन. प्रिट) ।)

४ एशिया तोड़ रहा जंजीर (कवि मानसिंह राही) ।=)

५ अन्तरराष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद (ल्यू शाओची) ।।।=)

६ भारत में अंगरेजी पूंजी की पकड़ (होमी एफ-दाजी) ।)

—: प्राप्ति स्थान :—

पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, १९० बी०, खेतवाड़ी मेन रोड, बम्बई

करन्ट बुक डिपो, माल रोड, कानपुर,

देहली बुक सेन्टर, २१६, इरविन रोड, नई दिल्ली

प्रग्रेस बुक कॉरनर, १२२, म्युनिसिपल मार्केट, कनाट सर्कस, नई दिल्ली।

पीपुल्स बुक हाऊस, ७, विश्वेश्वर नाथ रोड, लखनऊ।

पीपुल्स बुक हाउस, बांकीपुर, पटना ४

आधुनिक पुस्तक भंडार, ७, एलवर्ट रोड, इलाहाबाद।

पीपुल्स बुक हाउस, कोर्ट रोड, अमृतसर।

नेशनल बुक एजेन्सी लि०, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता १२

किताबघर, नई सड़क, उज्जैन।